'नदिया के पार' और
'हम आपके हैं कौन' जैसी बेहद लोकप्रिय
फ़िल्में इसी उपन्यास पर बनीं
कोहबर की शर्त
केशव प्रसाद मिश्र
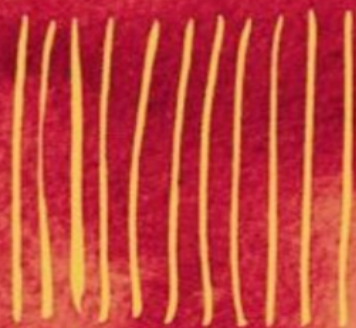
कोहबर की शर्त

केशव प्रसाद मिश्र

कोहबर क शत

उप यास

कोहबर की शर्त
केशव प्रसाद मिश्र

राजकमल पेपरबैक्स

उ र देश म, ब लया से पूरब, तीसरा टेशन रेवती उतरकर चलने पर, लगभग तीन मील पूरब और द ण के कोने पर एक गाँव है ब लहार। चार ओर पाँच-सात गाँव से घरा आ। इन गाँव को उ र और पूरब से वृ ाकार घेरती ई रेल क पट रयाँ बहार रा य म वेश कर गई ह। प म-द ण म गंगा-सरजू क जल-धाराएँ ह। दोआब म बसे ए ये दो गाँव—ब लहार और चौबेछपरा—ही इस उप यास क कथा-भू म ह। —केशव साद म

मझले चाचा को— जनक गोद म कथाएँ सुनते-सुनते

सो जाता था।

बहन गुंजा को, जसके केवल नाम का मने यहाँ

उपयोग कया है।

और, गाँव के उन सबको, जो कसी भी प म इस कथा म

आए ह।

खंड : 1

एक

कचहरी से काका को चार बजे फुरसत मली। तीन बजे मुक़दमे क पेशी

ई, चार बजे तक बहस। बाहर नकलते ही वक ल से वदा माँगी और गाड़ी

पकड़ने टेशन क ओर लपके। टेशन प ँचते-प ँचते पसीने से नहा गए। पूरब वाली पाँच-ब जी लेटफ़ॉम पर खड़ी थी। बैठने को जगह खोजने लगे। रोज़ क तरह, साँझ को घर लौटनेवाले मुक़दमेबाज़ और बना टकट चलनेवाले कूली लड़क से, ब लया से पूरब जानेवाली यह गाड़ी खचाखच भर गई थी। सारी भीड़ पाँच टेशन तक क थी। पहले टेशन बाँसडीह पर ही भरभराकर भीड़ उतर जाती है, ले कन काका को तीन टेशन रेवती तक जाना था। पूरी गाड़ी के दो च कर लगाने के बाद, बड़ी क ठनाई से एक

ड बे म खड़े होने को जगह मली। जगह तो मली, ले कन गरमी के मारे

खड़ा रहना भी क ठन लगने लगा। अँगोछे से हवा करते ए चुपचाप बाहर देखते रहे।

गाड़ी चली तब जान-म-जान आई। बाँसडीह के बाद सहंतवार, फर रेवती आया। काका उतरे तो दन डूबने म अभी डेढ़ घंटे क देर थी।

टेशन से बाहर नकलते ही, पूरब-द खन के कोन पर, गढ़-सा बसा आ

गाँव ब लहार दखाई देने लगता है। धरती तो दो ही कोस क है, ले कन चलाती ब त है। टेशन से चौबेछपरा के बीच का चौड़ा सपाट ताल ज द कटता ही नह । आजकल तो रामपुर के सामने भरी ई नद सोना पार करनी पड़ती है, अगर नाव न मली तो देह के सारे कपड़े सर म लपेट तैरना पड़ता है। अँजोर रहते अगर प ँच गए तब भी गनीमत रहती है, नह तो सँझलौके म इस उफनती ई नद

को देखकर ह मत छूट जाती है। भाद क साँझ का कौन ठकाना बादल उमड़े, तो पहले ही घटा घर आई। फर काका को रात म रत धी होती थी। लेटफ़ॉम पर उतरकर, एड़ी के बल उचक-उचककर काका ने उतरे ए लोग को यान से देखा। ले कन जब गाँव का कोई न दखा तो बाहर नकलने के लए बाहर फुरती से फाटक क ओर बढ़े।

टेशन क सीमा के बाहर, ढलान के नीचे, महाजन क कान के पास प ँचे

तो उसने टोका, "इधर कहाँ, तवारीजी?" काका चलते-चलते बोले, "गाँव जा रहा ँ महाजन, कना नह होगा। आज

अकेले ँ, इसी से तेज़ी है।"

" राह तो ब द हो गई है।"

" " काका चलते-चलते क गए, " या कहा?"

" कतने दन पर ब लया से लौटे ह?"

" तीन दन पर। गया था सुक को, पेशी ई आज सोमवार को।"

" तभी तो मालूम नह है। पानी तो पोखरे तक चढ़ आया है। देखते नह , सारे लोग पटरी के कनारे-कनारे, पुल क ओर छारा* पकड़ने को बढ़ रहे ह।"

" छारा चलने लगा या ?"

" खूब, चार ओर जवार म पानी भर गया, अब भी छारा नह नकलेगा अब तो टेशन आना-जाना और भी आसान हो गया। पुल से चार पैसे सवारी, यहाँ बैठकर एकदम गाँव पर उतरना।"

" हमने भी कहा क लोग पुल क ओर य बढ़ रहे ह तीन दन म सरेह डूब गई तो भगवान जाने आगे या हो " कहकर काका टेशन क ओर वापस मुड़े, जहाँ से पटरी के कनारे- कनारे पूरब क ओर बढ़े। पुल पर प ँचे तो केवल दो छारा बची थ , जनम दस-दस, बारह-बारह लोग बैठे थे। तीन पहले से ही भरकर आगे बढ़ गई थ ।

चौबेपुर, पयर टा, रामपुर, अचलगढ़, छेड़ी और अपने गाँव ब लहार के चार ओर जल-ही-जल दखाई पड़ता था। र तक फैली ई इस अपार जलरा श को काका देखते ही रह गए। परस आए थे तो सरेह म भदई लहरा रही थी और आज उसका नाम- नशान तक नह । सात-सात फ़ ट ऊँचे जो हरी-जनेरा के पौध क फुनगी तक नह दखाई देती। चार ओर गंगा का मटमैला उबलता जल हलोर मार रहा था। "ध य हो माता गंगा " काका ने झुककर कनारे से अँजुरी भर जल ले माथे पर चढ़ाया और डंडे के सहारे एक छारा पर चढ़ गए। छारा को पूरी सवा रयाँ मल ग तो एक म लाह अगली फग पर, सरा पछली फग पर बैठकर पतवार चलाने लगे।

छ प्-छ प् करता आ छारा मटमैले जल पर बढ़ चला। " बड़ी आस थी क युग-युग का संकट अब र आ।" एक पैर पर सरा पैर चढ़ाते ए काका बोले।

" कैसे तवारीजी?" सामने बैठे पटवारी शवबालकलाल ने पूछा। " बाँध बँध जाने से आस थी क इस साल पानी नह चढ़ेगा।"

“ हाँ, सरकार ने लाख पए खच करके यह बाँध बँधवाया, ले कन पानी के वेग को भला ऐसा बाँध या रोकता पानी ने ध का मारा, ते लया नाला के पास बाँध दरक गया और देखते-देखते सरेह म लबालब पानी...” अपार जल पर पतवार क छ प्–छ प् के साथ पानी काटता आ छारा आगे बढ़ रहा था। जधर देखो उधर ही जल। रेवती से आगे गोलाई म घूमी

ई रेलवे लाइन के चार ओर, जहाँ तक आँख देख सकती थ , जल–ही–जल दखाई पड़ता था। चौरासी क जनेरा–जो हरी क कचोह* फ़सल फुन गय तक डूब गई थ । बस, खेत म जहाँ –तहाँ खड़े बबूल के पेड़ ही दखाई पड़ते थे।

चौबेछपरा पहले पड़ता था। कनारे से सटकर म लाह ने छारा लगाया। पाँच–सात आदमी उतर गए तो म लाह ने बाक लोग को इधर–उधर सरककर बैठने को कहा क आगे–पीछे और बीच का भार बराबर हो जाए। भार बराबर करके जब छारा आगे बढ़ा तो पत बरलाल बोले, “हमको तो

पयर टा उतारते चलते, भाई।”

“ वाह, छारा पर सवा रयाँ बैठ ह द खन के लए, छारा जाए प म क ओर ” काका बोल पड़े।

“ चुप र हए आप, म म लाह से कहता ँ।”

“ चोप–चोप करोगे तो आकर पानी म उलट ँगा, म लाह जैसे इनके बाप के नौकर ह ”

“ हमने खेवाई नह दया है या ?”

“ खेवाई दया है रामपुर म उतरने क , वहाँ से पैदल पयर टा चले जाइएगा।”

“ अगर हम पैदल चलने लायक न ह तब?”

“ तब ब लया से तन–प हयवा संग म ले आए होते ” मुंशी पत बरलाल गु से से लाल हो गए, “देख ली जए आप लोग, कैसी बोली बोल रहे ह ये ब लहार के तवारी ” काका हँसने लगे, “ तन–प हयवा का नाम खराब लगता है तो अलग एक छारा पयर टा के लए कए होते। कौन कह पैसे क कमी है क़ानूनगोई म अफ़रात क रक़म तो काटे हो।”

छारा पपरा बाबा के पास प ँच रहा था। नद म झुक ई ल बी टेढ़ डाल को पानी छू रहा था। काका के मुँह से अचानक नकल गया, “बाप रे, तीन

दन म पानी इतना बढ़ गया ”

ब लहार आ गया था। हसाब से म लाह ने कनारेवाले पीपल के पेड़ क सोर से छारा सटा दया। पत बरलाल क बग़ल से काका उतरकर बोले, “ कहा–सुनी मा करना, मुंशी पत बरलाल ” पत बरलाल और भी चढ़ गए। पीपल क सोर से पतवार को टेक दे म लाह ने छारा का मुँह मोड़ दया, छारा आगे क ओर बढ़ गया।

ऊपर च दन खड़ा था। काका ने टकरीवाली गमछ उसे पकड़ा द । आगे–आगे च दन, पीछे–पीछे काका अपने घर के लए चल पड़े। दो

काका नकसार म ताला डालकर जैसे ही खंड के लए मुड़े क सामने से आती ई नेउर हजाम क औरत दख गई। वह क गए। बड़ी थाली को अँगोछे से तोप, क धे पर टकाए नाउन काका के पास

प ँची तो बोले, “का है ठकुराइन?”

“ है का?” ठकुराइन चो हा के (नखरे से) बोली। काका को मौक़ा मल गया, “आज तो लहरदार टकुली साट के नकली हो ” काका चुप हो मुसकराने लगे।

ले कन नाउन भी एक तेज़ थी, भीतर से खुश हो, ले कन ऊपर से बगड़कर बोली, “तो का तुम पर साट ह?”

काका हँसने लगे, “हम पर एक भी साट लेती, तो हमारी क मत बन जाती बीस साल से टुकुर–टुकुर ताक रहा ँ, यह तीसी फूल क चुनरी, बाप रे बाप ”

“ जैसे तु ह तो खरीद के दए हो?”

“ हम अरे, एक बार इशारा कर देती, तो तीसी फूल क जगह बनारसी साड़ी होती, ठकुराइन ”

“ परग सया मला हन तो बनारसी साड़ी पहन–पहन के मर ही गई ”

“ कहाँ परग सया, कहाँ तुम राम–राम, तुमने भी कसका नाम लया?”

“ हमारे लए हमारा भतार है। चालीस के रँडुआ, कुछ तो सरम–हया करो।”

“ कौन कह क तुम ही बार– ब टया हो, नाती–पोत से घर भरा है, सगार–पटार देखो, तो जवान पतो से भी बढ़–चढ़ के ”

“ घर से नकल कै सबका सगार–पटार ही नहारते चलते हो लो अपने घर का बायना ” नाउन तुनककर बोली। “ बार रे बाप इस उ म र म भी हाव–भाव जस–का–तस है।” आगे जवाब देने के लए नाउन क नह । काका के हाथ म बायना पटककर, झपती ई नाउन आगे बढ़ गई। काका खंड चले आए। लगभग बारह बज रहे थे। आकर कुबेर के खंड म बैठ गए। खंड म लोग क बातचीत से जाना क बेछपरा के स आ क बेट के याह म नाच और नौटंक दोन आई ह तो मन म गुदगुद होने लगी। तभी बगल म बैठे बचनवाँ ने काका के कान म चुपके से कह दया क नाच देखने के लए आज रात रघुनाथ क नाव खुलेगी तो उनके मन म हलोर उठने लग । ले कन ठ क–ठ क पता कैसे लगे काका बेचैन होने लगे। प म तो पूछने पर

द लगी करने लगता है, आज तक शायद ही कसी बात का सीधा जवाब दया हो

काका जानते थे रघुनाथ क नाव खुली तो दल के प म, कृपाल, अ न और सुमेसर चार –के–चार गोल बाँधगे। काका थोड़ी देर तक बैठे रहे। पर रहा न गया, तो बारी, रामकृपाल, अ न और प म के खंड म च कर

काट आए। कृपाल के पेट म दद था, प म के बैल के स ग टूट गए थे, सरे

गाँव दवाई बँधवाने जा रहा था। अ न ने कहा क उसके पैर म मोच आ

गई है, स आ के घर नौटंक आए चाहे बॉय कोप, कौन देखने जाए काका नराश होनेवाले जीव न थे। रघुनाथ क पलानी म प ँच ही तो गए। पलानी के आगे नीम–तले रघुनाथ के बाप म लकार बैठे थे। प व ा होने के कारण सरे के मुँह पर ही बात मार देते थे। पद म काका के बड़े भाई लगते थे, इसी लए काका उनके सामने जाने म ाय: कतराते थे। ले कन नाच देखने क झ क म

वह सब कुछ भूल गए। काका को देखते ही म लकार बोले, “ कधर से कुलबोरन?”

“ सरेह घूम के ” बना सोचे–समझे काका ने जवाब दे दया। “ भाद क बाढ़ म सरेह घूम के क नाच के च कर म नकले हो?”

“ हमको तो रत धी होती है म लकार, नाच से हम या मतलब?”

“ पचपन का म आ, ले कन सँझलौके म भी अभी सूई म डोरा डाल ँ। और तुमको चालीस म ही रत धी होने लगी? वाह रे करपा नधान नाच का नाम सुना क बया ला। आगे नाथ न पीछे पगहा, अब तो छोड़ो धरमावतार, खंड– आर पर बैठने क अव था ई, मजाज नवही से भी बढ़के।”

“ या देखे हो म लकार जो ऐसे बोलते हो?” म लकार हँसने लगे, “लँगोट पहनते थे तब से तुमको देख रहा ँ। हम से पूछते हो क या देखे हो? सोलह साल का भतीजा कार घर म कुँआरा

पड़ा है, यह नह होता क घेर–घारकर उसका याह करा द आज यहाँ गौनई, कल वहाँ नाच, इससे फुरसत मले तब तो आगे क च ता हो ”

“ दैतेरे क छन–भर इनके खंड म कोई आया नह क लगे उपदेश छाँटने ” काका कुछ नाराज होते ए बोले, “लो चले तु हारे खंड से। कोई पास आया नह क लगे ज़हर उगलने।” खंड के ऊँचे चबूतरे पर से काका नीचे उतर ही रहे थे क घर से बैल का दाना–भूसी लेकर म लकार के लड़के रघुनाथ आ गए। आँख नीची कर सामने बँधे बैल को दाना चलाने लगे। दाना देख बैल क घं टयाँ टुनटुना तो लोटा उठाकर मैदान जाते ए म लकार बोले, “लो, आ गए बबुआजी ब तया के तय–तपाड़ कर लो, म तो काम से चला।” म लकार को जाते देख काका क गए, ले कन रघुनाथ भी गुमसुम रहे। बात खुली नह तो काका फर अपने खंड म चुपचाप लौट आए और कार को

माल गो को ज द –ज द खला– पलाकर चरन से हटा देने क सलाह द । प तया होते ए भी अपने इस वभाव के कारण काका अपने भतीजे

कार से दबते थे। बैल क नाँद म भूसा डालते ए कार ने बोली फक ,

“ आज बड़ी ज द मची है काका कह का पाँयत है या?”

“ ज द या , बाढ़–बूड़े का दन, अ हार होने पर मस–माछ के मारे गो खाते नह । एक दन ज़रा ज द कह दया तो पूछता है, कह का पाँयत है

या ? हो भी तो मानुष–तन है, जनावर तो नह ”

अपने खंड से अ न सब सुन रहा था, वह से च लाया, “बड़े भाग मानुष तन पावा, कटे न आज रात भर नौटंक ।”

“ अ छा बरमेसर के बेटा, गँऊझी खेत कोड़ार क मालगुजारी तो बाप ने

टकरी म झ क दया, अब प तया से प री तुम न करोगे तो करेगा कौन ”

अ न चुप लगा गया। थोड़ी देर के बाद काका ने बँसवार म से खरपतवार

बीनकर, गो पर लगनेवाली म खयाँ और म छर भगाने के लए धुआँ

कर दया। उसके बाद घर चले गए और वहाँ से बना-खाकर द या-ब ी जलते-जलते रघुनाथ के खंड क ओर बढ़े। फेर म थे क म लकार के रहते नाच देखने चलने क बातचीत कैसे होगी। क तु प ँचने पर जाना क वह साँझ क गाड़ी पकड़ने को टेशन चले गए तो उनक स ता का ठकाना न रहा। भीतर से स , क तु ऊपर से चुप। काका रघुनाथ के खंड के आगे नीम-तले पड़ी ई चौक पर चुपचाप जा बैठे। उधर गोल म राय हो रही थी क काका को आज छोड़ दया जाए। म लकार मुक़दमे के लए ब लया चले गए, अगल-बगल के नवही नाच देखने जाएँगे ही। खंड सूना पड़ जाएगा। रात म कोई अगोरनेवाला भी तो रहना चा हए। रघुनाथ घर से खाकर लौटे तो देखा काका जमे ह। वह कुछ नह बोले और बैल को चरन से हटाकर पलानी म बाँधने लगे। तभी रघुनाथ के संगी रामकृपाल को काका पहचान तो न सके, ले कन बोली से ची हकर बोले, “कहाँ यारो आज कहाँ क तैयारी है ?” रामकृपाल कुढ़कर बोला, “काम न धाम, बस दन-रात नौटंक नाच देखने चलना हो तो आज अपनी नाव ले चलो।” काका चुप रहे।

“ बस ” रामकृपाल फर बोला, “ सरे के ही क धे पर ब क रखकर फैर करना जानते हो अपनी नाव खोलने को कहा तो बोली ब द हो गई ”

“ साझे क नाव है, बेटा अबगा क नह है क जब चाहा खोल दया ”

“ साझे क है तो तु हारा भी तो ह सा है। नाच देखने का मन हो तो आज अपनी ड गी ले चलो। सब दन तो रघुनाथ क नाव पर झल हर काटते हो, एक रात अपनी ही रहेगी तो या कम मज़ा मलेगा ” काका फर भी चुप रहे तो रामकृपाल बोला, “चलना हो तो ज द बोलो, नह तो हम लोग चल।”

काका फेर म पड़ गए। बचाव का और कोई उपाय न सूझा तो बोले, “अ छा जाओ खोल लाओ, ले कन कार को पता न चले, नह तो सबेरे आफ़त कर देगा।”

“ खोल य लाव, सब लोग आगे पपरा बाबा के पास चढ़ जाना।” रामकृपाल नाव खोलने चला, बाक लोग पपरा बाबा क ओर बढ़े। रत धी के कारण रात म काका को पूरी तरह दखता नह था, इस लए पपरा बाबा के पास क़रीब दस आदमी जुट गए, जनम कार भी था।

बेछपरा और ब लहार के बीच क री पैदल चलने पर लगभग दो मील क

है, पर बाढ़ के दन म नाव से आने-जाने के कारण राह सीधी हो जाती है, जससे री तो कम हो जाती है पर समय अ धक लगता है। बाढ़ के दन

म ब लहार के चार ओर तीन-चार कोस म पानी फैल जाता है और इस हद के सारे गाँव के बीच म जैसे नद के प बन जाते। सारी फ़सल पानी म

बह जात , मवेशी चारा के लए तड़प जाते, लोग म ा ह- ा ह मच जाती, क तु गाँव के चार ओर बाढ़ का ठहरा आ जल महीने-डेढ़ महीने तक

लोग को नाव म वहार करने का एक अद्भुत सुख देता था। दन म लोग छोट -छोट ड गय म इधर-उधर आते-जाते, य क आने-जाने का साधन

सफ़ ये ड गयाँ ही रह जात । क तु इस फैले जल पर ड गय म रात म

घूमने का सुख झल हर, बाढ़ क और परेशा नयाँ कम-से-कम रात-भर के

लए तो भुला ही देता। चाँदनी रात म, छोट –छोट ड गय म ढोलक और

हारमो नयम के साथ, गाँव के नौजवान का दल जब झल हर को नकलता तो य देखते ही बनता

रात के लगभग आठ बजे नाच देखनेवाल से भरी ई ब लहार क ड गी, बेछपरा क ओर बढ़ । पारी–पारी सभी ड गी खेते जा रहे थे।

मील–भर पहले से ही, बरात के बड़े त बू म जलते ए दजन पे ोमे स क रोशनी, ड गय म भरे ए नचदेखउ के मन म अपार उ सुकता भर रही

थी। पास प ँचे तो देखा, दो बड़े–बड़े त बू नचदेखउ से खचाखच भरे थे। नाव पास क बँसवारी म बाँध द गई। जसको जहाँ जगह मली, भीड़ म बैठ गया; ले कन रघुनाथ काका के साथ बैठे। पैर तले डंडा दबाकर काका बैठे, पीछे रघुनाथ। सामने, मंच पर का परदा अभी उठा नह था, इस लए लोग म कुछ बेचैनी–सी थी। स आ क बेट क बरात म तीन चीज़—नौटंक , नाच और ठेटर, रात–भर क मौज। ऐसा मौक़ा जवार म कहाँ मलता है एकाएक पटाखा छूटा और धड़ाके क आवाज के साथ सामने का परदा उठा। नौटंक शु ई, ठाकुर क जवान बेट ा ण के लड़के के साथ भागने क ज़द कर रही थी। लड़का बार–बार इनकार कर रहा था। अ त म जब लड़क ने कोई और उपाय नह देखा, तो कहने लगी क य द वह उसे भगाकर नह ले जाएगा तो ह ला मचाकर वह अपने घरवाल को बुलाकर उसक ग त करा देगी। सामने मंच पर ा ण का लड़का पसोपेश म पड़ा

आ था, लड़क अपने भयंकर प म खड़ी ई लड़के के उ र क ती ा

कर रही थी।

“ काका ” रघुनाथ पीछे से बोले।

“ का है रे?”

“ देख रहे हो क नह ?”

“ देख रहा ँ बेटा, कैसा क लकाल लगा है, धरम का नास हो गया है। वाह रे

त रआ–च र र ”

मंच पर लड़का ठाकुर क बेट को प म उतर देने लगा। काका दोन हथे लय से अपनी आँख को बगल से घेरकर नौटंक देखने म जुटे। लगभग दो घंटे के बाद रघुनाथ चुपके से उठे और ड गी को हटाकर सरी बँसवारी म बाँधकर फर अपनी जगह पर आकर बैठ गए। काका नाच देखने म वैसे ही त मय थे। थोड़ी देर के बाद काका क देह म नीचे से रह–रहकर रघुनाथ

चकोट काटने लगे। दो–तीन बार तो काका ने समझा क नीचे से कोई

चीज़ गड़ रही है, इस लए हाथ से आगे–पीछे क देह नीचे से झाड़ द । थोड़ी देर बाद रघुनाथ ने फर चकोट काट तो इस बार कुछ ोध म घूमकर काका ने पीछे क ओर देखा। रघुनाथ ने पूछा, “ या है?”

“ मालूम नह , पीछे से कोई खोद रहा है।”

“ लोग नाच देखने आए ह क तुमको खोदने? जहाँ जाते हो, वह खड़मंडल डाल देते हो। चुपचाप अपनी जगह पर बैठो।” काका फर मंच क ओर देखने लगे। रघुनाथ ने फर वही हरकत क । काका ने आव देखा न ताव, पैर के नीचे दबाया आ अपना डंडा नकाला और बजली क तरह घूमकर अपने पीछे के लोग पर दो–एक बार बरसा

दया। कसी के क धे, कसी क कनपट , कसी के सर पर चोट लगी; ोध म लोग एकाएक खड़े हो गए। गाली–गलौज और ‘बैठो–बैठो’ क

आवाज आने लग । कौन बैठता है त बू म ड़दंग मच गया। रघुनाथ ने काका क बाँह पकड़ी और फुरती से त बू के बाहर ख च लाए। पीछे बैठे

ए लोग आगे के खड़े ए लोग से बैठ जाने के लए च लाने लगे। झगड़ा सरे– सरे लोग म बढ़ने लगा। नाटक ब द हो गया।

दस–प ह मनट बाद लोग अपनी–अपनी जगह पर बैठ गए। रात के लगभग दो बज रहे थे। क तु ललचायी आँख से काका मुड़–मुड़कर त बु क ओर देख रहे थे। रघुनाथ उ ह गाँव चलने को ववश कर रहे थे। रहा न गया तो काका बोले, “थोड़ी देर और देखा जाए, यार ”

“ रात–भर नाच देखो, उधर नाव कोई खोल ले गया तो माला जपोगे।” और काका क बाँह पकड़कर बँसवारी क ओर ख चते ए रघुनाथ बोले, “चलो, झटपट नकला जाए, नह तो गाँव के लोग ड गी पर लद जाएँगे।” बेबसी म काका वापस चले। नाव पर आए ए बाक लोग अपनी जगह से ही काका और रघुनाथ को ताड़ रहे थे। नाव क ओर इ ह बढ़ते देखा तो त बू म से उठकर वे लोग भी पीछे–पीछे चले।

पहली बार जहाँ नाव बँधी थी, वहाँ प ँचने पर नाव नह मली तो काका के

ाण सूख गए, “नाव कहाँ है रे?”

“ जाओ खूब नाच देखो ” रघुनाथ ने ताना मारा। “ आ ख़र गई कहाँ, यह तो बाँधकर हम लोग गए थे? ढूँढ़ो यारो, ढूँढ़ो; कोई सुई–डोरा है जो नह मलेगा देखो, र सी टूटकर अगल–बगल बह तो नह रही है।”

रघुनाथ कृ म ढंग से बगड़े, “तु हारी चार आँख ह तो ढूँढ़ो।” काका को पसीना छूटने लगा, डर के मारे काँपते ए बोले, “अब या होगा, रघुनाथ?”

“ रघुनाथ या बताव, अकेले वही तो चढ़ के आए नह थे। और लोग से य नह कहते हो?”

चार–पाँच मनट वैसे ही खड़े रहने पर काका सर पकड़कर बैठ गए। गोल के बाक लोग अँगोछे से मुँह तोपकर हँस रहे थे। “ नाव अगर न मली तो सुन लो रघुनाथ, गले म अँगोछा कस के ान दे

ँगा।”

“ नाच देखने तुम आए, ाण दोगे रघुनाथ पर ”

“ नाव न मली तो या होगा ” बगल म खड़े बहारी ने बात कसी। रघुनाथ ने बहारी को इशारा कया और बहारी बगल क बँसवारी म बँधी नाव थोड़ी देर म खोल लाया। आते ही काका से बोला, “बाप–रे–बाप न जाने कतनी र नाव बह गई थी। लो नाव, चढ़ाते समय तो नाकुर–नुकुर करते हो,

ले कन मौके पर बहारी ही काम आते ह।"

काका ही देह म जैसे जान आ गई। काका नाव पर बैठे, उनके पीछे दस–बारह लोग भरभराकर चढ़े। नाव ब लहार को मुड़ी। बाढ़ के ठहरे जल पर चाँदनी का चँदोवा तना था। नाव तेज चाल से बढ़ रही थी, य क सभी

घर प ँचकर सोना चाहते थे, इस लए ल गी तेज़ी से मार रहे थे। दो–दो, तीन–तीन कोस क री पर चार ओर थत गाँव के बीच के खेत म बाढ़ का फैला आ जल एक बड़ी–सी झील क तरह लग रहा था। शा त, न त ध, सफेद रात, ह क –ह क पछुआ, काका को न द आने लगी।

तीन

का तक क बोआई शु हो गई। घर–घर म बोआई–जुताई के लए काम म तेज़ी आ गई। कार कसी तरह से बीज बनवा रहा था, काका आर सँभालते थे। इसी समय काका बीमार पड़ गए तो कार क परेशा नयाँ

और भी बढ़ ग । सबेरे, सूरज नकलने से पहले, हलवाहे के साथ हल–बैल और बोने के लए बीज लेकर खेत म प ँचना, हल नधवाकर घर लौटकर खाना बनाना, फर बारह साल के छोटे भाई च दन को खला– पला उसके हाथ हलवाहे के लए खेत म खाना भेजना और ऊपर से काका क तीमारदारी। साँझ को खेत से लौटे ए बैल के क धे पर ह द पीसकर छापना, उ ह खलाना– पलाना तथा घर– आर—दोन क देख–रेख म

कार टँग गया। नरोग रहने पर काका आर के अलावा और भी काम

सँभाल लेते थे। क तु बोआई के ऐन मौक़े पर वह बीमार या पड़े, कार

क एक टाँग ही टूट गई।

पाँच–सात दन क खैर बरवा दवाई के बाद भी जब कोई लाभ न आ तो

कार ने वै बुलवाने के लए काका से राय ली। काका बगड़ गए, "सारी

कमाई हक म–बैद को दे दो। ज़रा–सी जर–खाँसी या ई क पड़ गए बैद–हक म के पीछे। भगवान के सहारे नह रहा जाता, अपने आप सब ठ क हो जाएगा।" काका कुछ और भी कहना चाहते थे, ले कन बगल क पड़ाइन चाची के आ जाने से चुप लगा गए।

" का है, कार?" आते ही चाची ने पूछा। " यही, काका बीमार पड़े ह। चौबेछपरा के बैदजी को बुलाने क बात चलाई तो कहते ह, 'सारी कमाई हक म–बैद को ही दे दोगे चुपचाप रहो, ऐसे ही अ छा हो जाऊँगा।' "

" ऐसे ही अ छा हो जाएगा " चाची कुछ कड़ी हो कहने लग , "आगे नाथ न पीछे पगहा। पया बटोरने के पीछे तो इस आदमी क सारी जनगी सरा गई। धरम–पु करने और गंगाजी नहाने के लए रटती ई मेहरा मर गई, ले कन ये आदमी कान म तेल डाले बैठा रहा। इनसे हँसी, उनसे द लगी।

पया अपने संग ले जाओगे " चाची ने काका को बचपन से

खलाया– पलाया, तेल–उबटन कया था। काका उनसे ब त दबते थे। चु पी

पर चाची फर बोल , “बोलते य नह ? चु पी य साध ली?”

“ या बोलूँ?” काका धीरे-से बोले, “हमने कहा क दो-चार दन और देख लो...”

“ दो-चार दन और या देख लो, इतने दन म खाँसी-बुखार काबू म नह आया तो देर करने से या लाभ? का तक क बोआई, अकेला कार।

तुमको देखेगा क खेत क बोआई सँभालेगा सुनो कार, कल सबेरे चौबेछपरा वाले बैदजी को बुलवा लो। पया हमसे लेना।” चाची बगल के पीढ़े पर बैठ ग और काका क ओर ताक-ताककर तरह-तरह क बात समझाने लग ।

काका चुपचाप लेटे ए चाची क बात सुनते जा रहे थे। चाची फर कहने लग , “तीसरी के हक़दार हो, इन भतीज को पाला-पोसा तो इ ह याह करके बसा भी दो।”

“ हमने याह-शाद के लए कब रोका, चाची कोई तलकह भी आए क

याह ही हो जाए ”

“ घर- ार क च ता करो। तलकह तो आर खोद मार। ले कन अपनी बेट कोई ऐसे थोड़े देगा, लोग जान भी तो क घर पर कसी बड़े-बूढ़े क छाँह है। तुमको तो नाच-नौटंक से फुरसत नह , घर क च ता कैसे करोगे?” तभी उनके बेटे बहारी ने अपने घर से आवाज लगाई। चाची उठती ई बोल , “सुनो कार अगर ये मना भी कर, तब भी च दन को कसी के साथ चौबेछपरा भेज देना।”

सरे दन, भोर म ही कार ने वै जी को बुलाने के लए च दन को तैयार

कया। नद म पानी भरा था, इस लए नाव से ही जाने को कहा। नाव खेने

के लए अपने हलवाहे के लड़के सुम रया दशरथ को च दन के साथ लगा

दया। च दन ड गी क अगली फग पर बैठा, दशरथ ने ल गी सँभाली।

नाव चौबेछपरा और ब लहार के बीच म प ँच रही थी—चौबेछपरा क सीमा म, कनारे पर खड़े बरगद के बड़े पेड़ के नीचे बने द पास ी के चौरे के पास। कुछ देर सु ताने के बाद दशरथ ने कान पर हाथ रखकर तान छेड़ द — “ गोरे-गोरे साँवर-साँवर उ म र म बरोबर बाड़े, के नइखे लउकत मझोल, हाय रे जयरा...” दशरथ के अलाप पर च दन के बदन म जैसे गरमी आ गई। वह ज द -ज द ल गी मारने लगा। चाल तेज हो गई और समय से पहले ही नाव चौबेछपरा के पास प ँच गई।

सूरज नकल आया था। तीर पर एक कतार म बैठ ई दस-बारह लड़ कयाँ बतन माँज रही थ । ल गी से पानी काट च दन नाव को वृ ाकार मोड़ रहा था। अगला फग जब कनारे क ओर घूम गया तो एक ल गी तेज़ी से ँमच द । तेज़ ग त से नाव कनारे क ओर बढ़ । अपनी ओर घूमती ई नाव के कारण, बतन पर लूड़े चलाते ए लड़ कय के हाथ क गए और वे नाव पर बैठे ए दशरथ तथा ल गी मारनेवाले च दन को देखने लग । च दन ने

सरी ल गी मारी, नाव का अगला फग झ के से लड़ कय से एकदम सटकर

एक क बटलोई से लड़ते ए कनारे पर चढ़ गया। पास क दो-तीन लड़ कयाँ भरभराकर उठ ग , “अरे रे, एकदम से आ हर हो का?”

“ पातर ल गी है, लचक गई। सध न सक , पानी गलत कट गया।”

“ एक छोट –सी नाव मान म नह आती तो ल गी मारने य चले हो? इसी जगह पर नाव चढ़ानी थी और घाट नह था या?” फाँड़ का फटा कमर म लपेटे, फुफती घुटने से मोड़कर मदानी धोती क तरह पीछे ख सी ई, दोन हाथ म बटलोई के पदे क का लख लगाए ोध से भरी ई लड़क च दन को ताकने लगी।

दशरथ कूदकर नाव का अगला फग दोन हाथ से ख चकर ऊपर चढ़ा रहा था और च दन ड गी म ल गी फँसा अपने को साधता आ, नीचे उतरने के

लए नाव के अगले फग क ओर बढ़ रहा था। एकाएक पैर फसला तो

अपने को बचाने के लए च दन घुटने–भर पानी म छ प से कूद गया। कपड़े तो नह भीगे, क तु ऊपर से नीचे तक छ टे पूरी तरह च दन क देह पर पड़ गए।

सारी लड़ कयाँ खल खलाकर हँस पड़ । खड़ी ई लड़क क जगह नाव से भर गई थी। उसे स बो धत कर सरी लड़क बोली, “ऐ गुंजा, बतन उठा के मेरे पास आ जा।”

गुंजा बतन उठा रही थी क च दन ने सहमी आवाज़ म पूछा, “बैदजी का घर

कस टोल म है?”

बतन माँजती ई लड़ कय के हाथ क गए। एक बोली, “गुंजा के ही बाप तो बैदजी ह।”

“ ले कन घर कस टोल म है?”

“ है तो पूव टोल म ही, ले कन गाँव के बीच म पड़ता है। म दर क बगल से सेमलवाला पेड़ तकते ए ऊपर गाँव म चढ़ जाना। आर पर नीम का एक झंगाठ (घना) पेड़ है। पूछोगे तो कोई भी बैदजी के घर क राह बता देगा।”

“ बैदजी को ज द से ले जाना है। अगर यही साथ चली चलती तो...” च दन ने कुछ ाथ वर म गुंजा को देखते ए कहा। “ ँ–अँ हमको या पड़ी है ” गुंजा बोल उठ , “तु ह अपने काम क ज द है, हमको अपनी ज द है।”

च दन और दशरथ एक– सरे का मुँह ताकने लगे। “ चलो, चलो च दन। चौबेछपरा कोई कलक ा शहर नह है क बैदजी का घर नह मलेगा, न हम लोग बबुआ ह जो भूल जाएँगे।” च दन क पीठ को आगे ठेलता आ दशरथ बोला।

“ अ छा तो ज़रा नाव पर नगाह रखना।”

“ नाव का ऐसा डर था तो संग म कोई रखवार ले आते।” गुंजा फर बोली। “ रखवारी क कोई ज रत नह है। नाव कोई चोरी थोड़े ही हो जाएगी। कह पानी म बह न जाए इसी का ज़रा ख़याल रखना है। जाड़े का दन है, फर तैरकर पकड़ना पड़ेगा। यहाँ कनारे पर बाँधने लायक कोई फेड़– खूँट भी नह ।” च दन बोला।

“ नह है तो तु हारी नाव अगोरने के लए कोई बैठा नह रहेगा। हम लोग के रहते अगर लौट आए तो ठ क है, नह तो तुम जानो, तु हारी नाव जाने ” गुंजा फर बतन माँजने लगी।

प ह–बीस मनट म बतन माँज–धोकर सभी नपट ग । च दन और दशरथ म दर क ओट हो गाँव म घुस चुके थे। बड़ी थाली म अपने बतन को स रहाकर गुंजा ने रख दया और सभी लड़ कय क मदद से नाव को पानी म ज़ोर से ठेल दया। नाव च कर खाती ई ब लहार क ओर धीरे–धीरे बहने लगी। सारी लड़ कयाँ खल खलाकर हँसने लग । नाव जब बीच म प ँच गई तो सभी अपने–अपने सर पर बतन उठा गाँव क ओर लपक । रा ते म लौटते ए च दन–दशरथ से मुठभेड़ होने के डर से वे म दर के पास से सरी राह से गाँव म घुस ग ।

च दन और दशरथ वै जी के घर प ँचे तो वह पूजा कर रहे थे। दोन बाहर पलानी म पड़ी चौक पर बैठ गए। थोड़ी देर बाद बगल से आती ई, सर पर चमचमाते बतन लये ए, गुंजा दख गई। " नाव तो ठ क– ठकाने है?" च दन ने पूछा। गुंजा ने च दन को नह देखा था। एकाएक च दन ारा टोक दए जाने से वह सहम गई। कुछ घबराती ई–सी एक ही साँस म बोल गई, "जब लौटे तो थी, इस समय क कौन जाने " और वह तेज़ी से दरवाज़े क ओर बढ़ गई।

वै जी को बाहर नकलने म लगभग पाँच–सात मनट और लग गए। लोग घाट पर प ँचे तो देखा, नाव बहकर उस पार के कनारे क एक झाड़ी म अटक गई है। च दन ने दशरथ का मुँह देखा और दशरथ अपने कपड़े उतार, अँगोछा पहन पानी म कूद गया।

नाव पर बैठकर ब लहार क ओर चले तो राह म ही वै जी ने च दन से उसके घर के बारे म सब कुछ पूछ लया। ब लहार आए तो काका को देखने से पहले उ ह ने कार को देखा, बातचीत क । उसके बाद काका को देखने घर प ँचे। काका चुपचाप लेटे थे। वै जी से ह का–फु का प रचय था। ले कन वै जी ने बड़ी आ मीयता दखाई। ना टका देख लेने के बाद वै जी काका से इधर–उधर क बात करते रहे। बातचीत के सल सले म जब वै जी से काका ने सुना क उनक बीमारी बगड़ गई है और दवाई लगभग तीन महीने करानी पड़ेगी, तो वह उठकर बैठ गए और वै जी क ओर तजनी

दखाकर बोले, "सु नए बैदजी हक म–बैद से हमारा मन नह भरता, जो

जनम देता है वही रोग भी देता है। जो कुछ भोग–भोगाव लखा रहता है, भोगना ही पड़ता है। अगर डोरी लटक गई तो पकड़ के चढ़ जाऊँगा। उस समय कोई बैद–हक म रोक नह पाएगा। इसी लए दवा– बरो के फेर म म नह पड़ता। ले कन इन लड़क के आगे अब नह चलती। गाँववाल के बहकाने म आ गए, चट आपको बुला लया। अब बुला तो लया, ले कन दाम कहाँ से आएगा?"

" दाम क च ता आप य करते ह? आप जसम खुश ह , वही होगा। ले कन हम जैसे कह वैसे च लए। जो दवा द, खाइए, नयम–परहेज से र हए।"

तीन दन तक क दवाई दे, खाने क पूरी व ध बता और चौथे दन फर आने को कहकर वह घर चले गए। गाँव के बाहर तक कार प ँचाने

आया। कार से इधर–उधर क बात करते ए वै जी नाव से पार उतरकर

सरे गाँव म रोगी देखने चले गए।

वै जी जवार के दस–बारह गाँव के लए सुखेन थे। बराबर उनको दौड़ते ही बीतता था—आज इस गाँव म, कल उस गाँव म। बुलाहट पर तो वशेषकर वह गाँव म जाते ही थे, वैसे अपनी सु वधानुसार उ ह ने येक गाँव के लए पारी बाँध ली थी। अपनी घोड़ी पर, अगल–बगल के पाँच–सात गाँव तक का वह दौरा कर लेते थे। वह एक बार घर से नकलते, तो दो–दो, तीन–तीन

दन के बाद लौटते। बना बुलाए लोग को देख आते और कुछ-न-कुछ

कमा लेते। पया तो उ ह उतना नह मलता जतना साल-माथ के दन म बोरे-के-बोरे अनाज पा जाते थे। बैसाख म लोग साल-भर क चुकतान अनाज देकर कर देते। वै जी अनाज वह बेचकर अ छ आमदनी कर लेते। छोटा-सा प रवार था—प नी, दो लड़ कयाँ— पा और गुंजा। पा याहने

लायक हो गई थी, लगभग चौदह साल क ; गुंजा दस- यारह क । पा के

याह के लए वै जी कुछ च तत रहने लगे थे। गाँव-गाँव म वर क तलाश कया करते।

कार पा के लए पस द पड़ गया। उगते ए छोटे-से प रवार म काका, कार और च दन। बाक भीतर का घर एकदम सूना। वै जी ललच गए।

तीसरे-चौथे काका को देखने के लए ब लहार आने लगे और मन से उपचार म जुटे। ारंभ म तो काका क बीमारी कुछ बढ़ , ले कन फर वै जी ने काबू म कर ली। बीच म दो-चार बार काका और कार ने वै जी को

पए देने चाहे, क तु वै जी ने अ वीकार कर दया।

काका क बीमारी म लगभग दो महीने लग गए, क तु इस बीच उ ह ने काका, कार, च दन तथा गाँव के बड़े-बूढ़ से अ छ तरह घ न ता बढ़ा ली। काका क बीमारी म कार को भी एक-दो बार चौबेछपरा जाना पड़ा। वै जी क प नी ने भी कार को पस द कर लया। चार

काका क बीमारी से खंड क बैठक म सूनापन आ गया था। दोपहर को जामुनवाली परती म जब खा-पीकर गाँव के लोग जुटते, तो देखते-देखते साँझ हो जाती। परती म लगभग बारह महीने हरी-हरी मुलायम ब भरी रहती, जगह-जगह चार-पाँच जामुन के पेड़ थे, जो गरमी के दन म छाया और ठंडक देते थे। जाड़े म लोग इस परती म घाम लेने बैठते। ब चे

दन-भर इसम खेला करते। गाँव का बर- बटोर यह होता, पूरबी और

प मी टोल क बे टय के याह म त बू-कनात यह गड़ते। इस परती से गाँव के सभी लोग का लगाव था।

दो महीने के बाद, पूरी तरह नरोग होकर, काका पहली बार जब घर के बाहर नकले तो सबसे पहले इसी परती म बैठे। काका के बैठते ही उनक बीमारी क चचा छड़ गई। लोग वै जी क

शंसा करने लगे।

“ बैदजी ने काका को अ छा कर दया, ले कन एक पया भी नह लया।” बगल म बैठा आ जयावन बोला।

“ बैदवा बेवकूफ नह है, एक का चार वसूलेगा।” अ न काका क ओर

ताककर मुसकराया।

“ चौबेछपरा वाले न बरी गोइयाँ ह। काका से एक-दो बीघा खेत तो ज़ र ही

लखवाएगा।"

काका भीतर–ही–भीतर ख सयाकर बोले, "तेरे बाप ने कोड़ार का खेत लख

दया, तो समझता है क ब लहार म सब कपूत ही जनमे ह"

तभी सामने से घोड़ी पर चढ़कर आते ए वै जी दखाई पड़े। " आ गए बैदजी " अ न फर बोला, "गाँव भर म बैदजी कह आए ह क तु हारी बीमारी म पाँच सौ पए क दवाई और मेहनत लगी है। या तो एक बीघा खेत लखो, नह तो ई बटोर काका, पहले से चेत जाओ " वै जी के आने से गाँव के दो–चार बड़े–बूढ़े आकर पास बैठ गए। वै जी के बैठते ही अ न फर बोला, "काका अ छे हो गए, ले कन आपने कुछ लया नह , बैदजी "

" वही तो माँगने आज आया ँ।" वै जी बोले। अ न हँसा, "अब बोलो काका, हमारी बात तो प तयाते नह थे। अब दो बैदजी को।" फर वै जी से बोला, "तो माँ गए न बैदजी, या माँगते ह?"

" पया–पैसा हमको नह चा हए।" वै जी बोले। " तो खेत ले ली जए।" अ न फर बोला।

" अरे अ न वा, बक–बक मत कर, नह तो देखता है ये डंडा क हए बैदजी, कुशल–मंगल " काका बोले।

" सब ठ क है, ले कन अ न क बात आपने सुनी " वै जी बोले। " आप सुनाइए," काका बोले।

" हमारी आप सुनगे?" वै जी ने कया। " आपने तो हमारी नह सुनी, ले कन म आपक सुनूँगा। क हए तो सही "

" मेरे कहने भर से ही काम नह बनेगा, जो क ँ उसको मानने से होगा।"

" हम आपसे बाहर नह ह, बैदजी आप मुँह तो खो लए "

" हम अपना कार दे द जए।"

भीड़ म बैठे ए लोग एक– सरे का मुँह ताकने लगे। " जो कुछ होगा," वै जी फर कहने लगे, "पान–फूल से यथाश पूजा भी

कर ँगा।"

" का राय है अँजोर?" बगल म बैठे ए, पद म काका के चाचा लगनेवाले द आ बोले।

" जब आप लोग क राय है तो हमको भी मंजूर है। बैदजी क राय है तो हम कैसे कुछ कह उ ह ने हमारी जान बचाई है।"

" वाह रे बैदजी, वाह या साध के लकड़ी मारी क काका एकदम से चत काका क तकद र सही म सोना है। बना पैसे के दवाई भी कराई और ऊपर से समधी भी बन गए। तो हो जाए बरइछा (बर छा) लगे हाथ।

फर तलक म भी खाने को मले। चट–मँगनी, पट बआह।"

बात वैसी ही ई। वै जी ने प ा नकाल लया और च मा लगाकर प ा खोलते ए बोले, “आज शुभ साइत है, आप कह तो बर छा कर ँ।”

“ हो जाए, हो जाए।” द आ कहने लगे, “शुभ काम म या देरी च लए बैदजी, आर पर च लए। चलो हो, राम अँजोर ” द आ पहले ही उठ गए। वै जी, काका और लगभग सभी बैठे ए लोग उठकर काका के आर क ओर चले।

वै जी ने इ यावन पए से कार क बर छा कर द । पाँच

कंजूसी के लए काका गाँव–भर म स थे। भैवद म गाँव के लगभग

सभी घर म भोज–भात खा चुके थे। खान–पान तो दोन ओर से चलता है, इसी बात को लेकर गाँव के लोग काका को अकसर टोका करते थे क घर–घर घूम के तो खा आते हो, कभी खलाने का भी मन करता है? खाते समय तो मोछा बोर–बोर के खाते हो, खलाने के नाम पर बाई गुम हो जाती है। ले कन काका पर इसका कोई असर न था। टोकनेवाल म अ न था

मुँहफट, ले कन उसको बना दो–चार गाली सुनाए काका पास म बैठने ही न देते।

ले कन, कार के तलक के दन काका के घर न जाने कहाँ क रौनक आ

गई बाहर–भीतर से लप–पुतकर मकान जगमगा गया। काका ब लया से

कराए पर लाउड– पीकर तय कर आए थे। सबेरे ही मकान के आगे, नीम

के पेड़ से लाउड– पीकर से गाने नकलने लगे। गाँव क गली–गली से लड़के काका के घर क ओर दौड़े और तवा बजानेवाले को चार ओर से घेरकर डट गए।

गाँव म जसके साथ खान–पान क भैवद थी, उसके घर खाने का योता तो गया ही, जसके साथ न भी थी काका उसके घर वयं जाकर योता दे आए। छोटे–से बड़े सभी ‘घरजनवा’ (घर पीछे एक) का योता प ँच गया।

साँझ होते–होते आर पर बछ ई चौ कयाँ, खाट और कु सयाँ गाँव–जवार के लोग से खचाखच भर ग ।

काका को धूसने–हँसनेवाल क बोलती ब द हो गई। उनके दलवाले मुनेसर, रघुनाथ, अ न , रामकृपाल, सूभा—सभी अ त थय के सादर–स कार म जुटे थे।

तलक म वै जी ने नकद एक हज़ार पए, कपड़े और बतन दए। आँगन

लोग से ठसाठस भर गया। पीतल के गगरे, परात, हंडे और फूल के लोटे– गलास इतने चढ़े क गाँव के लोग एक– सरे का मुँह ताकने लगे। इतना सामान गाँव के कम लोग के ही घर चढ़ा था। क तु तलक म गाँव के कसी ने भी इतने लोग को योता न था। सबेरे वदाई के समय वै जी बरात म कम–से–कम लोग को ले आने क

ाथना करने लगे।

प ह दन बाद याह का दन तय आ। काका याह क तैयारी म मन से जुटे। जवार के गाँव म हाथी–

घोड़ेवाल के पास बरात का योता फरा।

न त त थ पर बरात चलने को तैयार ई। सजे ए हाथी, घोड़े और ऊँट।

बाजे और धुँधके क आवाज़ से काका का आर गूँजने लगा। ब लहार से चौबेछपरा था ही कतना अ धक-से-अ धक घंटे-भर क राह। दन डूबते भी बरात चले, तो समय से दरवाज़े लग जाए। सजी ई बरात जब वै जी के ार लगी, तो लोग को खड़े होने क भी जगह न मली। बरात क शोभा देख, पीली पगड़ी और धोती पहने, ार-पूजा करते ए वै जी के मन म अपार खुशी भर गई थी।

ार-पूजा के बाद वै जी ने बरा तय को शा मयाने क जगह अपने घर पर

ही जलपान करा दया। जलपान के बाद शा मयाने म मह फ़ल जमी। धराऊ रेशमी कुता, मुरेठा और क धे पर रेशमी चादर डालकर काका वर क बगल म आ बैठे। भोजन वगैरह आ और ज द ही याह स प हो गया।

याह के बाद कोहबर क र म पूरी करने के लए शहबाले क भी बुलाहट

ई। शहबाला था छोटा भाई च दन। रात के यारह बजे थे। च दन शा मयाने

म सो गया था। नाऊ ले जाने को जगाने लगा तो उसक आँख न खुले। नाऊ त त था—हट्टा-कट्टा; उसने च दन को गोद म उठाकर आँगन म लाकर खड़ा कर दया। न द म माता च दन खड़े-खड़े झूमता रहा। याह के बाद मँड़वे म से सभी आदमी हट गए थे। कोहबर क र म पूरी करने के

लए केवल औरत रह गई थ । न द म असलाए च दन को

झकझोर-झकझोरकर जगाने के लए कई बार कार ने य न कया, फर भी च दन क न द पूरी तरह नह खुली। द वार से पीठ टेके च दन को जगाने के लए नाउन ने भी कई बार झकझोरा तो कार बोला, “ब त सोता है, सो जाने पर इसको जगाना बड़ा क ठन हो जाता है।”

“ यह चौबेछपरा है प ना यहाँ अ छे-अ छे क ऊँघाई टूट जाती है। इनको तो म चुटक बजाके जगाती ँ।” बगल म खड़ी ई गुंजा बोली और देखते-देखते पानी भरे ए कंडाल म से एक पुरवा जल नकाल, च लू म भरकर, उसने छ प से च दन क आँख पर मार दया। न द म माती आँख पर ठंडा पानी पड़ा तो च दन ने आँख खोल द । “ देखा प ना ” गुंजा फर बोली।

“ बाप-रे-बाप हर घड़ी लु ी क तरह फर-फर उड़ती है, ची ह लो बबुआ, यह तु हारी साली है गुंजा।” नाउन बोली। अबक कार ने गुंजा को ची हने

क नज़र से देखा, तो वह लजाकर पास म खड़ी ई लड़ कय म दब गई। आधी रात बीत रही थी। आँगन म जलनेवाले दो पे ोमै स म से एक क रोशनी कम हो गई थी, इस लए पहले से कुछ अँधेरा हो चला था। पा

कार से गठब धन कए झुक ई उसके पीछे खड़ी थी। नाउन ने ज द

करने को कहा, तो गुंजा बोली, “अभी तो चुमावन बाक है।”

“ चुमावन अब कोहबर म होगी, यहाँ नह । चलो, पहले कोहबर पूज लेने दो।” आगे-आगे नाउन, पीछे कार, उसके पीछे पा कोहबर घर क ओर बढ़े। अ य लड़ कय के साथ गुंजा पहले ही कोहबर

के ार पर जा खड़ी ई।

ार रोके रहने से कार को भी क जाना पड़ा। कार, बगल म च दन, पीछे पा और नाउन सभी क गए। ार रोके चौखट पर खड़ी गुंजा क ओर कार ने ताका तो बोली, "यह कोहबर का आर है प ना, इसे ऐसे नह लाँघने पाओगे। यहाँ आर पढ़ना पड़ता है।" बात न समझ पाने के कारण कार ने गुंजा क ओर फर देखा तो बोली, " पढ़े– लखे हो तो कोई दोहा, सवइया या क व सुना दो।"

" हाँ बचवा, कुछ सुना दो। कोहबर के आर क रसम पूरी हो जाए। सासजी यहाँ दामाद को पए देती ह।" बगल म खड़ी ई एक अधेड़ औरत ने कहा। आँख नीची कर कार कुछ सोचने लगा, क तु च दन कुछ सोचते ए गुंजा को नहारने लगा।

कार क चु पी पर लड़ कय ने स म लत चोट क , "ब हरे हो या, प ना?

या अपनी बहन क याद आ रही है?"

" हम य अपनी बहन क याद कर हमारे तो कोई बहन भी नह है। हम तो

सरे क बहन लेने आए ह " च दन ने तपाक से जवाब दया।

फ वारे क तरह सभी औरत के मुँह पर एकाएक हँसी फूट गई।

" बाप रे, बड़ा तेज़ है यह लड़का " दो–तीन लड़ कयाँ बोल । " तु हारे भाई कुछ पढ़े– लखे तो ह नह , अब तुम बोलो।" गुंजा ने च दन को ताकते ए कहा।

" याह के पहले यह पता नह लगाया था?" च दन ने चट कया। " तो या आ, पहले नह लगा तो अब सबके बीच म लग जाएगा। तु हारा

बआह अभी आ नह , तु ह पढ़ दो।" गुंजा बोली।

" पढ़ दो बचवा तो तु हारा बआह गुंजा से हो जाएगा।" पास म खड़ी ई पचास साल क एक ी बोली, "जोड़ी भी अ छ रहेगी। बर–क नया ने

बआह के पहले ही एक– सरे को देख भी लया है।"

तभी कार ने कोई सवइया बुदबुदा दया। सास ने कार के हाथ म पए

दए तो गुंजा बोली, "और शहबाला?"

" शहबाला कुछ नह पढ़ेगा " च दन बोला। " पढ़ना पड़ेगा " गुंजा अकड़कर बोली। " तुम तो हमारे कूल के मा टर साहब क तरह कुम चला रही हो "

" और या तु हारे मा टर से म कम थोड़े ही ँ। हमारे कहने से आर पढ़ो " एक अँगुली से अपनी गदन ठोकती ई गुंजा रोब से बोली, "पढ़ो तो पए

मलगे।"

“ अ छा बचवा, तुम ऐसे ही पए लो। चलो घर म। गुं जया, छोड़ आर, देर हो रही है।” गुंजा क माँ बोली।

“ देखा, पया तो चट से ले लया ” गुंजा बोली।

च दन मुसकराने लगा।

लड़ कयाँ हट ग । कार, च दन, पा कोहबर घर म घुसे। प ह–बीस औरत के बैठने लायक छोटा–सा घर था। दरवाजे के सामने वाली द वार के पास मट्ट का रँगा आ सफ़ेद कलश रखा था। कलश के मुँह पर आम के हरे–हरे प लव और प लव के ऊपर कलश का मुँह ढँकनेवाली छोट ढकनी म भरा आ जौ और जौ के ऊपर घी से भरा आ एक द प जल रहा था। कलश के पीछे क द वार लगभग दो हाथ ल बाई–चौड़ाई म गोबर से लपी थी, जस पर चूने से हाथ क कई थाप पड़ी थ । बगल म फूल क एक नई थाली म पूजा का सामान— ब, अ त, रोली, दही, गुड़ और फूल–पान रखे थे। जौ वाली ढँकनी म जलती अगरब य क महक से घर सुवा सत हो रहा था। चूँ क इस घर म केवल औरत ही रहती ह, इस लए पूजा का काम नाउन और पुरो हत क प नी करा रही थ । कलश के सामने कार के बा ओर

पा और दा ओर च दन बैठे। इन तीन को घेरकर बैठ लड़ कयाँ और

कुछ याँ।

पूजा प ह–बीस मनट म समा त हो गई तो गठब धन खोलकर पा को उठाकर नाउन घर से बाहर लेकर चली गई। उसके बाद पं डताइन भी उठती

ई बोली, “अ छा, अब हम लोग का काम तो खतम आ, बाक रसम तुम

लोग पूरी करो।” पं डताइन के साथ ौढ़ याँ भी बाहर नकल ग । रह

ग गुंजा क स खयाँ और अगल–बगल के घर क ब एँ। “ गुंजा, पहचानती हो इनको?” एक लड़क ने च दन क ओर इशारा कया। गुंजा मुसकरा पड़ी।

“ यही ह नाववाले।”

“ हम याद है।” गुंजा बोली।

“ अरे, बाप–रे–बाप ” बोलनेवाली लड़क ने आँचल से अपना मुँह तोप लया। गुंजा झटके से बाहर हो गई और मनट–भर म पलटकर कार के पीछे

खड़ी हो उसके आगे हाथ म एक सुपारी बढ़ाती ई बोली, “प ना, यह पूजा क ई सुपारी है, इसे मुँह म रख लो।”

कार गुंजा क हथेली से सुपारी ले अपने मुँह म रखने ही जा रहा था क

च दन एकाएक बोल पड़ा, “नह –नह , भइया मुँह म यह सुपारी मत रखना।”

“ वाह तुम मना य करते हो? यह कोहबर क रसम है।” गुंजा कृ म रोब

दखाते ए बोली।

" कोहबर म जूठ सुपारी खलाने क रसम है " च दन गुंजा को ताकते ए बोला।

" जूठ कसक जूठ ?"

" तु हारी बहन क । बआह के दन लड़क दन–भर मुँह म सुपारी रखती है, मुझे मालूम है। कसी और को चराना " सारी लड़ कयाँ हँस पड़ , "बाप रे, ये तो हर बार हरा देते ह।" गुंजा फर कमरे से बाहर हो गई।

च दन पर फर न द का नशा चढ़ने लगा। वह रह–रहकर झपक लेने लगा।

कार ने उसे दो–एक बार जगाया, ले कन च दन अपने को रोक न पाया

और द वार के सहारे उठँग गया।

गुंजा फूल क एक थाली चावल से भरकर ले आई और सरी खाली। च दन को देखती ई बोली, "अरे, सो गए प ना, तुमने भी नह रोका " और च दन को झकझोरती ई बोली, "ऐ, यहाँ सोने आए हो क ब तयाने?"

" मुझे ऊँघाई आ रही है "

" ऊँघाई आ रही है तो यहाँ सोने को नह मलेगा। कोहबर म रात–भर जगना पड़ता है। अभी से यह हाल है तो अपने याह म या करोगे?" ले कन च दन फर द वार के सहारे लुढ़क गया। " अ छा ब चू तो यह लो।" और गुंजा ने बगल के लोटे म से एक चु लू पानी लेकर च दन क न द म माती आँख पर छ प से मार दया। च दन क झपती आँख पूरी तरह खुल ग तो गुंजा अपने आँचल से च दन क आँख और मुँह प छने लगी। रँगी ई नई साड़ी क ग ध च दन क नाक म भर गई। यारी, स धी ग ध। च दन पूरी तरह जग गया, "अरे–अरे, म कोई ब चा थोड़े ँ "

" और नह तो या ब चे के बाप हो?" पास म बैठ ई सारी लड़ कयाँ हँसने लग । झपते ए नीची आँख से

च दन मुसकराने लगा तो गुंजा बोली, "यहाँ के लोग को जान लो। ये बदामो है, चाचा क लड़क , ये सूरज कुमारी है, ये परेमा—हमारी स खयाँ।" फर अपनी गदन ठोकती ई बोली, "और मेरा नाम गुंजा है। ब हना क छोट ब हन ँ। और तु हारा नाम?"

" तब से भइया च दन–च दन कह रहे ह, सुना नह "

" बाप रे, इसम ख सयाने क या बात है " परेमा बोली। " अ छा तो लो," गुंजा बोली, "इस थ रया का चावल अ दाज़ से बताओ क कै अँजुरी है?"

" य ?" च दन ने पूछा।

" पहले बताओ तो बताती ँ।"

" नह , पहले बता दो।" च दन बोला। " बड़े जद् द हो अगर अँजुरी से नापने पर तु हारा अ दाज सही नकला, तो तुम जीत गए। तब तुमको उतने पए मलगे।"

“ अगर गलत नकला, तो?”

“ तो तुम हार गए। और हार गए ब चू तो जो म क ँगी, तु ह करना होगा।” गुंजा ने अपना सर हलाते ए कहा। सर हलाती ई गुंजा को च दन यान से देखने लगा, तो वह कुछ लजाकर बोली, “हमको या नहारते हो, बता के चावल नापो।”

भाई के सामने ऐसी बात सुनकर च दन कुछ सहम गया। इस लए लाज को तोपने के लए चट से बोला, “तीस अँजुरी ”

“ तो अब नापो।” गुंजा बोली।

च दन अँजुरी से चावल नापने लगा। पाँच–दस–बीस–तीस। चावल पतीस अँजुरी नकला।

गुंजा क ओर ताकते ए च दन बोला, “म तो हार गया बताओ, मुझे या करना होगा?”

“ सरे से पूछकर हारी ई शत पूरी क गई तो उसका मोल या?” गुंजा ने कहा।

“ तु ह ने तो कहा था क हारने पर जो क ँगी, करना होगा।”

“ अ छा, कभी क ँगी। याद रखना। अब प ना क बारी है। इनको भी नाप लेने दो। लो प ना, अब तुम।”

तभी गुंजा क माँ दो था लय म खाना लेकर आ प ँची और एक थाली

कार और सरी च दन के आगे रखती ई बोली, “रात–भर यही होगा क

लड़के कुछ खाएँगे– पएँगे भी? म न देखूँ तो इस घर म एक खर भी इधर–से–उधर न हो। पा का भरोसा था सो चली, अब रह गई गुंजा, देख नाव कैसे पार लगती है ”

गुंजा लोटा– गलास म पानी लेने चली गई थी। कार और च दन के आगे

पानी रखने लगी, तो गुंजा क माँ बोली, “देख, बैठ के ढंग से खलाना। पहली बार पा न खाने म लजाता है। म जाती ँ, भंडार सूना पड़ा है। सभी चीज़ जहाँ–क –तहाँ पड़ी ह।”

कार ने दो पू रयाँ रखकर बाक नकाल द । च दन क थाली म चार थ । कार तो दोन खा गया, पर च दन डेढ़ पूरी खाकर थाली अलग सरकाने

लगा, तो गुंजा ने थाली रोक द , “वाह रे बबुआ यही मरद बनते हो ”

“ या?” च दन बोला।

“ क चार पू रयाँ तक नह खा सकते अब यह परसाद कसके लए छोड़ते हो?”

“ तु हारे लए।” च दन ने धीरे से कहा। पास बैठ ई लड़ कयाँ मुसकराती ई गुंजा का मुँह ताकने लग , जो च दन के इस उ र से एकाएक ह के गुलाबी रंग से भर गया था। छह

सरे दन भोर म, आँगन के वातावरण म, एक अजीब–सी थकन और उदासी छा गई थी। रात–

भर के जागरण और मेहनत से घर के लोग क आँख म कड़वाहट भर गई थी। जसको जहाँ जगह मली, वह ढरक गया था। मँड़वे से हटकर, आँगन म ही, खुले आकाश के नीचे, एक खाट पर

कार और च दन सो रहे थे। कोहबर के ार पर गुंजा भी उठँग गई थी।

भनसार होते–होते, सबसे पहले गुंजा क माँ जगी। उसने पा को जगाया

और उसका हाथ–मुँह धुलाकर तैयार कराया। गुंजा आहट से ही जग गई। शा त, सोए घर म धीरे–धीरे जान आने लगी। बाहर से वै जी आकर बोले, " दन नकलने के घड़ी–भर के भीतर ही वदाई क साइत है।"

" है तो या क ँ?" गुंजा क माँ झनककर बोली। " पा को तैयार करो। डाल के गहने एक बार अपने से सहेजकर, ताला ब द कर चाभी पा को स प दो। गुंजा से कह दो, पा न को जगा दे। साइत के भीतर–भीतर ही मँड़वा हो जाना चा हए।" और वै जी बाहर नकल गए। बहन को ठ क करके गुंजा ने कार को जगाया। कार तो उठ गया, ले कन च दन सुगबुगाता ही न था, " जसका ववाह आ वह तो उठ बैठे और ये ह जो कु भकरन क न द सोए ह। देह म जैसे साँस–परान नह ।"

" या सबेरे–सबेरे बकने लगी " गुंजा क माँ पास आती ई बोल । फर पानी से हाथ गीला कर, च दन क आँख पर फेरती ई बोल , "उठो बचवा, बहान हो गया, हाथ–मुँह धो लो।"

" कपार मुड़ा के तो एकदम बमभोले बाबा बने ह " गुंजा हँसती ई बोली। च दन बैठकर आँख मल रहा था, कार उसे लेकर शा मयाने म चला

आया।

घंटे–भर म कार और च दन क आँगन म फर बुलाहट ई। मँड़वे के नीचे एक पलंग पर ब ढ़या गलीचा बछा आ था और गाँव–घर क ढेर–सी

याही– वारी लड़ कयाँ तथा ब एँ चार ओर से उसे घेरकर खड़ी ई थ ।

जलपान के बाद, सास ने कार के हाथ म प चीस पए और च दन के

हाथ म यारह पए दए। उसके बाद वर देखने को आई ई भैवद क औरत ने एक–एक, दो–दो पए कार और च दन को देने शु कए।

कार और च दन के आगे काफ़ पए जमा हो गए। गाँव क औरत जब

पए दे चुक तो अ त म गुंजा ने च दन के हाथ म पए से भरा, बुना आ

जालीदार बटुआ थमा दया गया और अलग खड़ी हो गई। " और बहनोई को?" गुंजा क ओर ताककर एक औरत बोली। बगल म खड़ी ई गुंजा क भौजाई लगनेवाली एक ब बोली, "बहनोई से इनको या मतलब? जसको बीछ लया भरी सभा म, उसका हाथ पकड़

लया "

खड़ी ई औरत म हँसी फूट गई। च दन ने हाथ का बटुआ आगे गलीचे पर रख दया।

“ इसे खोल के बताओ क कतने पए ह। धरने को नह दया ” गुंजा कुछ अकड़कर बोली।

“ खोल के गन दो बबुआ, तो तु हारे साथ ये लग जाएँगी।” भौजाई ने फर बोली कसी।

“ बक जहाँ जो मन म आता है बोल देती हो, भउजी ” गुंजा बोली। “ ऐसा लहा खोजने पर भी नह मलेगा, गुंजा बबुनी शहब लया को खाली मत लौटाओ। संग म लग जाओ। कहो तो चाची से कह ँ।”

“ चुप रहोगी क नह ” गुंजा बगड़ गई। सरकवाँसी के फ दे पर पतली डोरी से बँधे चु टदार मुँहवाले बटुए को खोलने क च दन को शश करने लगा। काफ़ को शश के बाद भी जब बटुए का फ दा न सरका, तो गुंजा बोली, “ये अ कल–हेरानी बटुआ है, ब चू तु हारी ब हन का बनाया नह है जो फट से खुल जाएगा। हार मान लो, तो खोल के दखा ँ।” च दन ने गुंजा क ओर देखा। तभी बाहर से नाऊ आकर बोला, “बाहर असवारी लगी है, पा बबुनी को ले चल के चढ़ाना है।

साइत के भीतर पीढ़ा बह रया जाना चा हए। घाम का दन है, डेढ़–दो कोस धरती नापनी है। कहार का दम नकल जाएगा। मँड़वे क रसम हो गई हो, तो पा न को जनवासे म लवा जाऊँ?”

“ अभी नह , पा न बाद म जाएँगे।” गुंजा बोली, “अभी तो इन लोग को

खलाना– पलाना है।”

कुछ औरत कार–च दन के पास रह , कुछ सामने वाले घर म बैठ ई

पा को गहने–कपड़े पहनाने चली ग ।

प ह–बीस मनट के बाद ही अँकवार–भट क लाई से घर–आँगन भर आया। माँ, बहन, चाची, दाद , सखी–सहेलर के गले पकड़ पा रोती जा रही थी। घर म से जो भी नकलती, सभी लाल–लाल, आँसु म डूबी

आँख, आँचल क छोर से प छती । बेट को चुप कराने वै जी आए। पा बाप के पाँव पकड़ फर रो पड़ी। बेट को चुप कराने क जगह वै जी वयं रोने लगे। ह ठ काँपने लगे और गाल पर से आँसू क बूँद टप–टप धरती पर गरने लग । हारकर उ ह ने नाउन को इशारा कया। नाउन ने दोन क धे पकड़कर पा को अलग

हटाया और चादर ओढ़ाकर ार पर लगी डोली म बठाने ले चली। आगे

पा, पीछे उसे पकड़े ए नाउन और चार ओर से घेरकर धीरे–धीरे चलती

गाँव–टोले क लड़ कयाँ, सबक आँख भरी , सबके चेहरे उदास। नाउन ने पा को डोली म बठा दया। आगे स होरा और फूल क थाली म दही, अ त, गुड़, पान आ द रख दया। कहार ने डोली उठा ली। गाँव के बाहर कुछ र तक प ँचाने के लए डोली के साथ नाउन और कुछ लड़ कयाँ भी ग । द यास ी के पास डोली क । पा और कार से नाउन ने पूजा करवाई और डोली आगे बढ़ गई। बाहर बरा तय से मलनी हो चुक थी।

मलनी समा त होने के बाद बरा तय म से कसी ने पूछ लया, “बैदजी ने

काका को दहेज म या दया?”

वै जी हाथ जोड़कर खड़े हो गए, “हमारे पास है ही या?” तभी भीतर से कार और च दन आ प ँचे। कसी ने इशारा कर दया, सामने चरन पर बँधी गाय का पगहा च दन खूँटे से खोलने लगा। “ हँ–हँ ये या, बबुआ गाय मार देगी।” कहते ए वै जी का चरवाहा च दन को रोकने के लए आगे बढ़ा।

“ नह –नह , रोक मत लड़के ने जब पगहा थाम ही लया तो गाय खोल के साथ लगा दे।” वै जी मुसकराते ए बोले, “हमसे कहते बेटा, ये कौन बड़ी बात है गाय पर खुश हो तो ले जाओ गाय।” च दन को इशारा देनेवाला अ न था। उसने सोचा, वै जी ना–नुकुर करगे, ले कन वै जी का यह हाल देखा तो वह दब गया। कई लोग के साथ वै जी बरा तय को प ँचाने के लए गाँव के बाहर तक आए।

बरात चौबेछपरा से वदा हो गई।

सात

नाम था राम अँजोर तवारी, ले कन छोटेपन म ही, समौ रया लड़क के यह काका लगते थे। छोटे लड़क के साथ–साथ बड़े–बूढ़े भी इनको काका कहने लगे। धीरे–धीरे गाँव–भर इनको काका ही कहने लगा। बाप के इकलौते होने से ल वा हो गए। इस लार ने इनको आगे चलकर सहका दया। जवानी म याह के पहले गाँव क परग सया मला हन से इनका मन लग गया था। रात म उसे पेड़ से तोड़कर जामुन दया करते थे। एक रात पेड़ से उतरते समय फसल गए, बाएँ पैर म ऐसी मोच आई क टाँग पूरी तरह सीधी न

ई और चाल म भी थोड़ी–सी हचक आ गई।

तब से काका के याह के लए इनके बाप को बड़ी परेशानी उठानी पड़ी। देखनह आते, लौट जाते। बड़ी घेर–घार के बाद एक जगह याह तय आ, बेहद ग़रीब घर म। ब आई तो काका रम गए। पाँच साल के बाद माँ–बाप चल बसे। काका और काक अकेले रह गए। याह के सात वष तक कोई स तान न ई तो काका–काक बेहद खी रहने लगे। सबसे नकट के थे च दन और कार। काका को लोग ने सुझाया क इतने नकट से टूअर

ब च के रहते घर य सूना रखती हो? बात सूझ गई काक ने च दन– कार को अपने घर म कर लया। तब च दन नौ वष का था, कार चौदह का। घर म तब थोड़ी–सी चहल–पहल आई, ले कन दो वष

बाद काक भी चल बस ।

काका और भी उदासी तथा अकेलापन अनुभव करने लगे। क तु च दन, कार—दोन भाई वभाव से इतने मधुर थे क काका का मन उखड़ न

पाया। इ ह के साथ ये बझ गए।

पा आई तो उसने ह ते–भर के भीतर ही ब रया का बाना उतार दया।

घर को लीप–पोत, इधर–उधर फैली ई चीज को स रहा दया। भंडार–घर म माट के पड़े ए ब त से बेकार कूड़े, भांडे और हाँ ड़या बाहर फक द । घर का अनाज–पानी तथा पर–पवनी क लेन–देन महीने–भर के भीतर समझ गई। गृह थी म राह दखानेवाली कोई बूढ़ औरत तो थी नह , क तु

महीने-भर के भीतर सारी गृह थी उसने क़ ज़े म कर ली।

काका, कार और च दन के मन म उ लास समा गया। क तु अब काका

के बेपरवाही से घर म आने म रोक लग गई। देहरी पर आते ही उ ह खाँस-बोल लेना पड़ता। भोजन के समय, चौके म बैठते ही, ढंग से परसी

ई थाली आगे आ जाती। जलपान के समय जलपान, नए-नए ंजन और

नई-नई खाने क चीज़ मलने से भोजन क च बदलने लगी। तीन मद क दनचया ही बदल गई। सभी तन-मन से खेती म जुटे। काका खंड म माल-गो सँभालने लगे, च दन और कार खेती म जुटे। पहले जो

खेत ब दोब त होते, वे अब नज क जोत म आ गए। काका का ह सा शा मल हो जाने से एक हल क खेती दो क हो गई। बाहर कार और

च दन ने और भीतर पा ने वष से इस उजड़ी, वीरान गृह थी को नए सरे से बसाकर हरा-भरा कर दया। एक ब ढ़या गाय और दो बैल आर पर बँध गए।

काका को इधर-उधर घूमने क फुरसत कम मलने लगी तो भीतर से कुछ

रहने लगे। क तु घर क तता के सुख ने उ ह भटकने न दया।

नयम से सबेरे, दोपहर और रात को जलपान और भोजन को आते, देर होने

पर कभी-कभी भीतर से पा भी टोक देती, इसी लए काका डरते रहते। एक दन बाहर से दतुअन करने घर चले आए। घर के पीछे, कुएँ क जगत पर दतुअन करने बैठ गए। सबेरे पानी भरनेवाली भीड़ का झ का तो पतरा गया था, ले कन जगत भीगकर चार ओर से पच पचा गई थी। कुएँ पर रमक लया क वधवा महतारी पानी भर रही थी। उसक ओर मुँह करके, जगत क कोर पर बैठते ए काका बोले, “कहो, रामकली क महतारी ”

“ का है तवारीजी ” कमक रन कुछ शं कत हो दबे वर म बोली। “ पतालीस-पचास क अव था ई, इतना जाँगर अब कसके लए पीटती है?”

“ जाँगर म ज़ोर है तो सभी पूछते ह पं डतजी, देह न चले तो पेट कैसे भरे ”

“ बेट -दामाद को अपने ही पास य नह रख लेती?”

“ माँग म सेनुर पड़ जाने के बाद बेट पर कौन ज़ोर रहता है, तवारीजी हमारे पास धरा ही या है क उसक लालच म दामाद अपना गाँव छोड़कर यहाँ बसने आएगा ”

“ अ छा, पूजू अ हर के घर का या हाल है?” काका ने सरी बात छेड़ द । “ पूजू का हाल या बताऊँ, तवारीजी? बेटा-पतो अलग हो गए, बेचारे क

ग त हो रही है। अभी तो देह म बल है, जाँगर चलता है। राम जाने आगे या हो ”

काका चार ओर ताककर बोले, “हमारी एक सलाह है, रामकली क महतारी ”

“ कौन सलाह, तवारीजी ”

काका दतुअन चीरकर जीभ छ लने लगे। फर कु ला करके सर पर बँधे अँगोछे से मुँह प छते ए बोले, “पूजू पचास का आ होगा, तुम पतालीस क । तुम राँड़, वह भी रँडआ । तुम पूजू के घर बैठ जाओ तो कैसा रहेगा? आपस म पटे भी, दोन के बाक दन भी चैन से कट जाएँ।” काका क बात पूरी भी न हो पाई थी क कहा रन गरज पड़ी, “ऐ लँगड इसी नीयत से तु हारी मेहरा मर गई, औलाद का मुँह तक देखने को नह

मला। जैसे अपने धरम क च ता नह , वैसे सरे का भी धरम लेना चाहते

हो ”

“ इसम बगड़ने क या बात है, मेरी बात तो सुनो ”

“ खबरदार आगे बोले तो इसी डोल से तु हारा कपार फोड़ ँगी ”

कहा रन का गरजना सुनकर कुएँ पर भीड़ जुटने लगी तो लोटा–डोर उठाकर काका धीरे–से वहाँ से जामुनवाली परती क ओर खसक गए। लोग ने कमक रन से कारण पूछा तो बोली, “कुछ नह , प पया लँगडआ का दमाग

फर गया है। ऊछे–न–पूछे, म लह क चाची सलाह देता फरता है।”

आठ

पा के पेट म ब चा आया। सात महीने बीत गए तो उठने–बैठने म

तक़लीफ़ होने लगी। घर का काम सँभालने, रसोई–पानी के लए कसी एक औरत क ज़ रत पड़ी। क तु इस घर म पा के सवा सरी औरत थी ही कौन पड़ोस क बड़ी–बूढ़ औरत क सलाह तो मल जाती थी, क तु गृह थी के काम म बड़ी अड़चन पड़ने लगी। पा का चौबेछपरा जाना

इतने दन के लए स भव न था, गृह थी म बझ जाने के कारण वह घर से हटना नह चाहती थी। महीने–भर म क टया शु होने वाली थी। अ त म

पा ने कार के सामने गुंजा को बुलवाने क बात रखी।

“ बड़ी बहन क ससुराल छोट बहन कैसे आएगी?” कार ने कहा। “ इसम हज़ या है?” पा बोली।

“ ऐसा कभी हमारे घर म चलन न था।”

“ जो काम कभी घर म न आ हो, अब होगा ही नह ” पा कुछ अचरज से

बोली, “इसम कोई ख़राबी तो है नह । छोट बहन बड़ी बहन के ही तो पास आती है, सरा सँभालनेवाला है नह , तो कया या जाए? जहाँ काम नकले, वहाँ लक र–के–फक र बनने से नुक़सान के सवा फ़ायदा तो नह होता। काका को समझाओ, वह मान जाएँ तो च दन के हाथ बाबू के नाम एक

चट्ठ भेज दो।”

बात काका के कान म पड़ी, वह तो जैसे पहले से ही तैयार बैठे थे, “सोचता

ँ क च दन के हाथ बैदजी को एक चट्ठ भेजी जाए, पहले कुछ जवाब तो मले ”

“ तो भेज दो।” काका राजी हो गए।

पा ने च दन से ही चट्ठ लखवाई और सरे दन भोर म ही च दन को

चौबेछपरा के लए वदा कर दया। च दन चौबेछपरा प ँचा तो दन के दस बज गए थे। फागुन का पहला पखवारा लगा था, घाम म गरमी बढ़ जाने से

यास भी बढ़ने लगी थी। घर के बाहर फूस क पलानी म न बैठकर च दन

घर म घुस गया। नकसार से भीतर घुसते ही देखा, कसी लड़क के साथ गुंजा ओखल म गे ँ कूट रही थी। देह पर का आँचल अ त– त था।

दा हने हाथ म पकड़ा आ मूसल नीचे गरने को ऊपर उठा क दरवाज़े से घुसते च दन पर नगाह पड़ गई। ऊपर से ओखल म गरनेवाला मूसल ज द म सरी लड़क के मूसल से लड़ गया। ठक् से आवाज ई और गुंजा मूसल द वार से टेक फुरती से आँचल ठ क कर भीतर घर म भागी। महतारी ओ रयानी क छाँव म कचरी (हरा–चना) न कया रही थी, पास जाकर बोली, “ माई च दन आए ह।” वै जी क प नी ने नकसार क ओर आँख घुमा तो देखा, च दन खड़ा था, “आओ, आओ बचवा, अपने घर म लजाते य हो?” च दन पास प ँचा तो बगल म खड़ी ई बँसखट बछाती ई गुंजा बोली, “ बैठो ”

“ अरे, बड़ी पागल है तेरी ब हन क देवर है, नखहरे बैठाएगी, घर म से दरी–चादर तो ले आ।”

“ नह , ऐसे ही ठ क है।” कहता आ च दन उस छोट सी बँसखट पर बैठ गया। पैर म कपड़े के जूते थे, ले कन घुटने तक राह क धूल चढ़ गई थी। “ राह म धूल उड़ाते आए हो या, या राह चलने भी नह आया, धूल से तो गोड़ भर गए ह ” गुंजा बोली।

गुंजा क माँ ने टोका, “खड़ी–खड़ी बतकूचन करेगी क कुछ रस–पानी लाएगी ”

“ हाँ, मुझे यास लगी है।”

“ जा–जा, ज द जा, इनार से टटका पानी ख च ला और रस बना।”

“ जाती ँ, पहले ब हना का समाचार बता दो।” गुंजा ने हठ कया। “ नह , पहले टटका पानी ले आओ ” च दन ने भी वैसा ही उ र दया। अब गुंजा पर महतारी क डाँट पड़ी, “चौदह क ई, त नक भी बु नह

आई हर घड़ी लड़कपन ”

च दन को घूरती ई गुंजा आँगन म पड़ी ई डोर–बा ट उठाकर बाहर

नकल गई। लौटकर आई तो देखा माँ भीतर घर म है। मौका मला तो

बा ट म से एक चु लू पानी च दन पर उछाल दया। च दन ने गुंजा को घूरकर सर हलाया। “ ले रस

बना दे।" भीतर से ड लया म चीनी लाकर खाट के पास रखती ई माँ बोल और वयं सामने के घर म कुछ नकालने चली ग । लोटे म चीनी घोलती ई गुंजा बोली, "कैसे आए हो?"

" वदाई कराने " च दन ने कहा।

" वदाई कराने " गुंजा कुछ समझने क को शश करती ई बोली, " कसक ?"

" ससुराल म कसक वदाई कराने जाते ह?"

" बक् " गुंजा कुछ लजाकर मुसकराने लगी।

तब तक महतारी आ ग , बोल , "ब लहार जाएगी?"

" ब लहार " गुंजा कुछ अचरज से बोली, "ब लहार या ?"

" ले ब हना क च्ट्ठ पढ़ ले।"

गुंजा महतारी के हाथ से ज द से च्ट्ठ लेकर पढ़ने लगी। पढ़ चुकने पर च दन क ओर देखा, तो वह बोला, "मने या कहा था, हमारी बात तो तुम प तयाती ही नह "

" चल, च दन को खला– पलाकर, बाबू आते ह तो पूछ के ब लहार जाने क तैयारी कर।"

आँगन म ओ रयानी के नीचे वाले चू हे को लीप–पोतकर गुंजा रसोई बनाने लगी और माँ च दन से पा का समाचार व तारपूवक पूछने लग ।

घर–गृह थी कैसी चल रही है, अनाज क उपज पहले से कैसी है, काका घर म कैसे चल रहे ह, घर म कभी अमनख तो नह आ, इ या द–इ या द। उसके बाद, महतारी गुंजा को साथ म देने के लए सामान तैयार करने लग , च दन उसी बँसखट पर द वार के सहारे उठँग गया। न द आ गई। नाक खर–खर बजने लगी।

रसोई हो गई तो गुंजा ने माँ को बताया और फर च दन को जगाने गई। च दन को बड़ी ज द गहरी न द आ जाती थी। पीठ टेकने को जगह मली नह क न द आई और नाक बजने लगी। पास खड़ी हो गुंजा ने दो–तीन बार च दन को पुकारा, ले कन च दन क नाक पूवतया बजती रही। " न जाने इतनी ऊँघाई य आती है, बआह म आए थे तब भी यही हाल था, लगता है भाँग का गोला चढ़ाए रखते ह।" गुंजा बोली। च दन देह तोड़ते ए उठ खड़ा आ। गुंजा ने लोटे का पानी हाथ म थमा दया। आँगन क मोरी पर हाथ–मुँह धोकर, चू हे के पास रखे ए पीढ़े पर च दन बैठ गया। गुंजा रोट सकने लगी, माँ परसी ई थाली म गुंजा के हाथ से सक रोट च दन क थाली म डालने लग ।

तभी वै जी आ गए। गुंजा से च दन क थाली म रोट डालने को कहती ई माँ उठ ग । वै जी ने च दन को देखा तो कुछ घबराकर पूछा, "अरे कब आए, कुशल तो है?"

" हाँ–हाँ, सब ठ क है, अभी थोड़ी देर ए आए, पा क च्ट्ठ आई है।" वै जी क प नी ने कहा।

" या लखा है?"

" पहले कपड़ा उतारो, फर च्ट्ठ पढ़ लेना समाचार सब ठ क है।" गुंजा क माँ के चेहरे पर खुशी का भाव उभर आया। वै जी बाहर के ओसारेवाली अपनी कोठरी म मरजई उतारने चले गए। च दन

खाकर उठने लगा तो गुंजा ने उसके दोन क धे दबाकर पीढ़े पर

बठा दया और चट से थोड़ा–सा भात और घी वाली कटोरी म दाल मलाकर च दन क थाली म उलट दया।

खाना खाकर च दन हाथ धोने उठ गया। वै जी कपड़े बदल नकसार म पड़ी चौक पर आ बैठे। गुंजा, उसक माँ और च दन तीन उनके पास आ गए। वै जी ने च दन को अपने पास चौक पर बठा लया, गुंजा और उसक माँ नीचे धरती पर बैठ ग । पा क माँ ने चट्ठ वै जी के आगे रख द । चट्ठ पढ़कर वै जी ने प नी क ओर देखा।प नी चुप रह तो बोले, “ या सोचा है?”

“ हमको सोचना या है?”

“ तो हम सोचना है रसोई, पानी, घर के काम का हाल तुम जानती हो, सोचूँगा म ”

“ यह सब तो चल ही जाएगा।”

“ गुंजा से भी पूछो, जाना तो इसी को है ”

“ सामने ही तो बैठ है, चट्ठ भी पढ़ ली है, तुम भी पूछ लो।” वै जी क प नी बोल ।

“ य गुंजा, ब लहार जाओगी?”

“ भेजोगे तो य नह जाऊँगी?” गुंजा बोली। इधर न य आ, उधर गुंजा क स खय और उनके घर म बात फूट क गुंजा ब हनौरे जा रही है। तब से साँझ तक गुंजा क सखी–सहेलर उसे घेरे रह ।

साझ को दरवाज़े पर बैलगाड़ी लग गई। आँगन सखी–सलेहर और नई भौजाइय से भर गया था। गुंजा जब बाहर गाड़ी पर चढ़ने चली तो एक भौजाई बोली, “ससुराल जा रही हो?”

“ बक् ”

बैलगाड़ी के बीच म, बाज़ार म बकने के लए चार–पाँच बोर म चावल–दाल रखे थे, आगे क ओर गाड़ीवान के पीछे गाँव का ब नया बैठा था, बोर के बाद म पीछे क तरफ गुंजा बैठ गई। च दन पैदल चला, संग म कुछ र प ँचाने को वै जी चले।

“ बबुआ, तुम भी बैठ जाओ, गाड़ी आगे क ओर ओलार है।” गाड़ीवान ने कहा।

“ चलो, गाँव के बाहर नकलो तो म भी बैठ जाऊँगा।” च दन ने कहा। गाँव के बाहर तक गाड़ी प ँचाकर वै जी लौटने लगे तो उनके पैर छू च दन भी गुंजा क बगल म बैलगाड़ी पर बैठ गया। नौ

सूया त होने म लगभग दो घंटे क देर थी। चौबेछपरा के बाद पयर टा के

लए जहाँ से राह मुड़ती थी वहाँ से ब लहार लगभग कोस–भर पड़ता था।

पैदल चलना हो तो उस राह को छोड़कर ब लहार के लए तरछ पगडंडी गई थी, जससे री भी कम हो जाती थी और समय भी कम लगता था, क तु जाना खेत क मड़ से पड़ता था। खेत पके होने से मड़ पर लटक

ई गे ँ–जौ क बा लय के टूँड़ पैर म चुभते थे, इसी लए लोग छव र से ही

जाना अ धक पस द करते थे। च दन चाहता था क उतरकर पैदल ही चल, जससे दन डूबते–डूबते गाँव प ँच जाएँ, क तु गुंजा के कारण वह ववश

था। बैलगाड़ी कछुए क चाल से धीरे–धीरे, चूँ–च –चर–चर करती ई आगे बढ़ रही थी। गाड़ीवान बैल को पैना मारता था, क तु लीक म धूल हो जाने से चाल तेज़ नह हो पाती थी।

पयर टा को मुड़ने के पहले ही गाड़ी के दा हने प हए का धुरा घसा होने से नकलकर गर गया। गाड़ी ने खट् से प हया फक दया। गाड़ी दा हनी ओर

ओलरी क च दन फट कूद गया और गुंजा को बाँह म पकड़कर नीचे ख च

लया। बीच म बैठे ए ब नए क पीठ म थोड़ी सी चोट आई, बाक

गाड़ीवान और च दन ने मलकर गाड़ी उलटने से बचा ली। धुरा ठ कने और गाड़ी पर सामान ठ क करने म आधा घंटा और लग गया। गाड़ी चलने के पहले च दन ने पूछा, “गाड़ी म बैठने से तो गाँव प ँचने म ब त देर हो जाएगी। पैदल चलोगी?”

“ हाँ–हाँ, चलो, म तो पहले ही कहने वाली थी, ले कन सोचा...”

“ लाओ, झोला हम दो।”

“ नह –नह , चलो, एक तो तुम लये ही हो। ऐसी सुकुमार नह ँ।” बैलगाड़ी क राह छोड़कर, नद के कनारे– कनारे आगे–आगे च दन और पीछे–पीछे गुंजा चलने लगी। सूरज डूबनेवाला था और अभी कोस–सवा कोस धरती नापनी थी।

“ अभी कतनी देर लगेगी?” गुंजा ने पूछा। “ कम–से–कम एक घंटा। अँजो रया उग जाएगी।”

“ तो थोड़ी चाल बढ़ाओ।” गुंजा ने कहा। “ डर लगता है?”

“ हम डर–फर नह लगता ”

“ अगर तुमको छोड़कर भाग जाऊँ तो?” च दन ने कहा। “ तो म अकेली भी ब लहार प ँच जाऊँगी।”

“ अरे बाप रे तुम लड़क हो या लड़का?”

“ दोन ।”

“ तो चलो हमारी चाल से ” और च दन बेहद तेज चलने लगा। दो–तीन मनट तो गुंजा साथ देती रही, फर चुपचाप राह पर ही बैठ गई। च दन उसी

र तार म चला जा रहा था। लगभग सौ गज नकल जाने पर मुड़कर देखा, तो गुंजा उसक ओर पीठ कए ए चपचाप डड़ार पर बैठ थी। “ जय सयाराम ऐ लड़का बैठ य गए?” च दन वह से च लाया। गुंजा वैसी ही बैठ रही। दो–तीन बार च दन ने फर आवाज लगा । ले कन गुंजा टस–से–मस न ई। हारकर च दन वापस लौटा और पास आकर बोला, “बस ” हार जाने क खीज म गुंजा उठकर

बोली, “जाओ, म तु हारे साथ नह जाती।”

“ अ छा, उठो–उठो।”

“ पहले ही थका दोगे तो बाक राह कैसे चलूँगी?”

“ अब तेज़ नह चलूँगा, आगे–आगे तु ह चलो।” कहते ए च दन ने गुंजा का हाथ पकड़कर ऊपर उठाया, तब वह उठ और आगे–आगे चलने लगी। सूरज डूब गया। चाँदनी क आभा छा गई। च दन और गुंजा हरी ब से भरी

ई करइल माट क कड़ी चौड़ी छव र से चलने म लगे थे। ब लहार अभी

लगभग डेढ़ मील था। स तमी क चाँदनी छव र के दोन ओर जौ–गे ँ के पके खेत पर पूरी तरह छा गई थी। शा त, थर वातावरण म ह के हवा के

झ के, खेत म खड़े अनाज के पके ठंडल को लहराकर खनखना देते थे।

र– र तक फैले ए करइल, माट के खेत म बराबर ऊँचाई तक उगी ई

फसल पर य द थाली सरका द जाए, तो कुछ र तक, बना गरे, बा लय पर फसलती चली जाए। ऐसे थे र तक फैले ए पक चले अनाज के लहराते–भरे खेत, जनम जहाँ–तहाँ खड़े छोटे–छोटे बबूल के पेड़ पहरेदार क तरह लगते थे।

“ गुंजा ”

“ ँ–ऊँ ”

“ थकन तो नह आई?”

“ आई भी हो तो या करोगे?”

“ थोड़ी देर सु ता लगे।”

“ बैठगे तो उठने को मन न होगा, च दन ऐसी अँजो रया म बैठने को मन नह करता है। अगर तुम थके हो, तो बैठ के सु ता लो।” च दन ज़ोर से हँस पड़ा, “इतना चलना तो मेरे लए रोज़ के जल–पान के बराबर भी नह है। क नआँ (ल हन) जब याह के जाती है तो ससुराल प ँचने पर डोली म से उतर के, आँगन तक, दौरी म ही डेग पड़ते ह ”

“ संग म लहा भी तो होता है ” गुंजा ने धीरे–से कहा। “ ले कन इस समय तो पैदल हो ”

“ तुम कौन पालक म सवार हो ”

“ या म तु हारा...?”

“ ऐ च दन...?”

हवा का एक झ का आया और सारी सरेह को लहरा गया। “ च दन”

“ ँ।”

“ मुझे यास लगी है।”

चलते-चलते च दन क गया, “ यास लगी है।” और उसने गुंजा के चेहरे पर देखा, कनपट से पसीने क लक र चबुक तक बह आई थी। आँचल पीछे सरककर जूड़े म अटका आ था। सँवारे ए घने काले बाल के बीच म झलकती ई ल बी माँग च दन देखता ही रह गया। “ या देखते हो?”

“ देखता ँ, म तुमसे कतना ऊँचा ँ?”

“ नाप लो।” कहती ई गुंजा च दन क बगल म सट गई और अपने सर पर हाथ रख, च दन का क धा छूती ई बोली, “तु हारे क धे से ज़रा-सी बड़ी

ँ।”

“ चलो, आगे पाकड़वाले इनार पर ढेकुल लगी है, पानी पीएँगे, वहाँ से छन-भर म गाँव।”

आगे छव र क बगल म एक कुआँ था और उसक बगल म एक पाकड़ का पुराना घना पेड़ था। धूप के दन म राही उसके नीचे व ाम करते थे। कुएँ क जगत लगभग क धे-भर ऊँची थी। गुंजा जगत पर चढ़ गई, च दन ने पानी ख चा, गुंजा को पलाया, फर गुंजा ने च दन को पलाया। पानी पीकर, तृ त हो, आँचल से मुँह प छती सामने खेत क ओर देखती ई गुंजा बोली, “ च दन, अँजो रया म यह सरेह कैसी लगती है?” च दन गुंजा क बगल म खड़ा हो बोला, “तु ह बताओ।”

“ जैसे बअ ती क नयाँ (याही ल हन) पयरी ओढ़े हो ”

“ क नयाँ बनने का मन होता है?” च दन ने हँसते ए पूछा। “ बक्?”

पीछे से, गुंजा के दोन क धे आगे क ओर ठेलते ए च दन बोला, “तो चलो, नीचे उतरो।”

दोन थैले हाथ म ले आगे गुंजा और गुंजा के दोन क ध पर हाथ रखे च दन उतरा। दस कदम चलने के बाद च दन ने गुंजा से एक थैला ले लया। थोड़ी र चलकर गुंजा बोली, “जब तुम पहली बार हमारे गाँव आए थे, तो तु हारी नाव पानी म कसने बहा द थी, जाना?”

“ कसी चुड़ैल ने ठेल द होगी?”

“ म चुड़ैल ँ ” चलते-चलते गुंजा क गई। “ अरे, तो तुमने बहाई थी ”

“ और या ”

“ मने भी दशरथ से कहा था क बहानेवाली ज़ र कोई लु ी (चनगारी) ही होगी। चौबेछपरा क लड़ कयाँ, बाप रे ” च दन ने गुंजा क ओर देखा, तो वह मुसकरा रही थी। फर थोड़ी देर तक उस सूने ताल क चाँदनी म दोन जैसे डूब गए। पैर तले, छव र क हरी-हरी कोमल ब थी। आख के आगे, देह-मन को बाँधनेवाली, सुखद-शीतल चाँदनी थी। च दन और गुंजा, अगल-बगल चलते ए, कभी सामने, कभी दाएँ-बाएँ, कभी एक- सरे को देखते ए, बड़ी देर तक चुपचाप चलते रहे। “ च दन ” एकाएक गुंजा बोली।

“ या है?”

“ हमारा मन उदासेगा तो हम कुछ दन को चौबेछपरा प ँचा दोगे न ”

“ ससुराल म कसी का मन उदासता है ”

“ बक् हर घड़ी फ कड़ा क ही तरह बोलते हो। देखो, ठ क से बोलो।”

“ हमारे रहते तु हारा मन उदास जाएगा?”

“ तुम हमारे हो कौन ” गुंजा धीमे-से बोली। “ म मुझसे पूछती हो? अ छा, तु ह बताओ, अगर इस समय कोई तीसरा आदमी तुमसे आकर पूछे क म तु हारा कौन ँ तो तुम या बताओ?”

“ म, मुझसे पूछते हो?” गुंजा भी वैसे ही ची हाके बोली। “ हाँ, तुम तुमसे ही पूछता ँ।”

गुंजा क गई तो च दन ने फर पूछा, “बोलो, बताती य नह ?”

“ यहाँ कोई आ ही नह सकता।”

“ यहाँ कोई आ ही नह सकता, यह कैसे जानती हो? कहो तो अभी ताली बजाकर बुला ँ ?”

“ कसको?”

“ आगे, जो छव र के कनारे वह बबूल का पेड़ देखती हो न, उसी पर से एक आदमी को बुला ँगा। चलो, पास तो प ँचो ”

“ उस पर कौन आदमी है?”

“ भूत।”

“ भूत अरे बाप रे?” गुंजा ने डरकर च दन को कसकर पकड़ लया। च दन का आगे बढ़ना क ठन हो गया। बड़ी देर तक च दन ने समझाया क आगे चलो, भूत वहाँ नह है, म तो हँसी करता था, तब कह गुंजा ने उसे छोड़ा। ले कन जब तक आगेवाला बबूल का पेड़ बीत न गया, वह च दन से एकदम सटकर चलती रही। ब लहार प ँचे तो रात के आठ बज चुके थे। राह म काका मल गए, घर से खाकर खंड जा रहे थे, “बड़ी देर कर द , सबेरे आते, रात म य आए? जाओ, घर जाओ।” घर म घुसे तो आँगन म पा कार

को खाना खला रही थी।

“ अरे, गुंजा ”

झुककर गुंजा ने बहन-बहनोई दोन के पाँव छुए। पा ने छोट बहन को अँकवारी म भर लया।

दस

रात म बड़ी देर तक गुंजा से पा ब तयाती रही। गाँव-भर का समाचार पूछ गई और सबेरे मकान का एक-एक कोना उसने गुंजा को दखा दया। गोइँठा-लकड़ी से लेकर, तेल, नून, आटा, दाल के बतन तक गुंजा ने अपने हाथ से टो-टोकर देख लये। काका, प ना, च दन के खाने क बेला पूछ ली। चौका-बासन, रसोई-पानी, कूटने-पीसने का सारा भार अपने ऊपर ले

लया। पा छोट बहन क पीठ पर रहती, य प गुंजा उसे कोई भी काम

करने न देती। सबेरे मद को खला– पला, चौका–बरतन कर, जाँते पर पीसने बैठ जात । पड़ोस क लड़ कय से मेल इतना बढ़ा क जाँते पर गुंजा के संग पीसते समय गीत गाने को वे ललच जात । एक तो गुंजा का कंठ सुरीला था, गीत भी उसे ब त याद थे। सो दोपहर म पड़ोस क लड़ कयाँ जाँतेवाले ओसारे म अपने–आप ही जुट जात । घर म काम न रहने पर अकसर उसे अपने घर ख च ले जात । झूमर, कजरी, याह, माड़ो, संझा, भाती, जब जो मन म आया, गुंजा के कंठ से फूट पड़ते। अड़ोस–पड़ोस के

घर म, देखते–देखते नेह–छोह इतना बढ़ गया क गुंजा जैसे एकदम से ब लहार क बेट हो गई।

और पा, घर क सारी गृह थी छोड़कर, न त हो ऊपर का इ तजाम देखने लगी।

खेत पक गए थे। क टया शु हो गई थी। ब लहार क कटाई क ‘मूँठ’1 और ‘पंखा’2 जवार–भर म स थे। अ य गाँव म कटाई दस बोझ म एक बोझ मलती थी; ब लहार म दस पंजे म एक पंजा मलता था, जो बाँधने पर लगभग डेढ़ बोझ होता था। इसी कारण दस–दस, प ह–प ह कोस के ब नहार (खेत काटनेवाले मज़ र) फागुन से कटाई समा त होने तक झुंड–के–झुंड ब लहार म आकर टक जाते थे। उनके आने से गाँव म रौनक और चहल–पहल हो जाती थी। दन–रात खेत क कटाई और बोझ क ख लहान म ढोआई लगी रहती। खेत पके नह क लोग काटकर ख लहान म ट लआने लगते, नह तो फगुनाहट के झ के डाल को झकझोरकर बा लय से दान को खेत म ही छटका देते, जौ–गे ँ क खड़ी बाल टूट–टूटकर खेत म गर जात और चूहे अपनी बल भरने लगते।

कार और च दन भी अपने खेत क कटाई म लगे थे। प ह–प ह

ब नहार एक कतार म खेत काटते जाते। कार ब नहार के साथ कटाई

और बोझे बँधवाने म रहता, च दन उनके संग खेत से ख लहान तक दौड़ता। काका बैल क सानी–पानी और ख लहान देखते। गुंजा और गभवती बहन गृह थी म रँग ग । प रवार का जीवन सुचा – प से तेज़ी के साथ आगे बढ़ने लगा।

फागुन क पू णमा, धप्–धप् फेद रात। खेत से ख लहान तक बोझ क ढोआई का ताँता लगा आ था। रात के बारह बजे होली जलने वाली थी। रात को ही, खाना खलाते समय, पा ने कार और च दन से पैर म उबटन लगवाकर झ ली छुड़वा जाने को कह दया था। घुटने के नीचे से पूरा पैर, नह तो सबके अँगूठे क झ ली, छुड़ाकर होली म डाल द जाती थी। व ास था, अगले साल क सारी तकलीफ आग म जल जाती थ । कटाई म इतनी भीड़ थी क च दन और कार घर आना भूल गए। बारह

बजे होली जलने वाली थी, रात के यारह बज गए, गाँव म बड़ी चहल–पहल थी, जलाकर भूँजने के लए लड़के लुकाड़ बना रहे थे। पा ने गुंजा को भेजा। गुंजा ख लहान से कार और च दन को बुला लाई। पीतल क बड़ी

कटोरी म सरस का उबटन गुंजा ने साँझ को ही पीसकर रख लया था। आँगन म गुंजा ने ख टया डाल द । कार आगे आया। ऊपर–नीचे धरती पर बैठे उसके पैर म उबटन लगाने लगी, एक पैर म पा, सरे म गुंजा

लगाने बैठ तो कार ने हँसते ए गुंजा को टोक दया, “तुम च दन को लगाना।”

“ ऐे प ना, हँसी करोगे तो म घर म भाग जाऊँगी।”

“ अरे इसम हँसी क या बात है, आ ख़र उसको कौन लगाएगा?”

“ वो या हमारे बखरा पड़े ह?” गुंजा बैठ ई ही बोली। “ अगर पड़ जाए तो?”

“ ँह...म आ गई तो बैदजी का खानदान ही तु हारे घर आ जाएगा ” पा बीच म ही बोल पड़ी।

“ नह , नह ये तो रानीजी रजवाड़े जाएँगी।” कार ने मुँह बनाकर कहा। “ राजा–रजवाड़ा न सही, ले कन तु हारे जैसे खे तहार, झंखाड़ के घर हमारी सुकुमार ब हन नह आएगी ‘खाएँगे गे ँ, नह तो रहगे ऐे ँ।’ समझे ‘भले धया र हह कुवाँ र हो।’ हमारी ब हन जाएगी कलक तहा कमासुत मरद के घर।” तभी च दन ने आँगन म वेश कया। कार के पैर क झ ली छूट गई

थी। वह उठकर जाने लगा और च दन को कहा गया क कागज म लपेटकर

झ ली और काका के लए अलग से थोड़ा उबटन लेता आएगा।

भाई के चले जाने पर च दन उसी खाट पर बैठ गया। “ लगा दे गुंजा, च दन के उबटन मुझसे बैठा नह जाता।” कटोरी लेकर गुंजा ने च दन के पैर पकड़ने को हाथ बढ़ाए तो उसने दोन पैर मोड़कर ऊपर कर लये।

“ यह या ?” पा ने पूछा।

“ तुम य नह लगाती हो?” गुंजा क ओर ताकते ए च दन ने भौजाई से कहा।

“ कमर ख गई है, हमसे बैठा नह जाता त नक सरको, मुझे जरा ओठँगने दो।” कहती ई पा उसी खाट पर सरी ओर मुँह करके करवट लेट गई। “ ऐसे खर हाथ से कौन उबटन लगवाए एक तो ऐसे ही खेत म आजकल खूँटा–खाँट गड़ती रहती है, ऊपर से गोड़ कौन छलवाए ”

“ गोड़ तो ह जैसे खरहरा, रगड़ जाएँ तो सरे क देह छला जाए, ले कन नखरा है राजकुमार क तरह। जाओ, ले जाओ, लयनू क तरह हाथ वाली से लगवाओ उबटन ” उबटन क कटोरी पट से पटककर गुंजा अलग बैठ गई।

च दन हँसते ए गुंजा को अपने पैर क तरफ आकर झ ली छुड़ाने के

लए अँगुली से इशारा करने लगा।

“ इसके आ जाने से बबुआ, अगरा गए हो, नह तो दोन जून चू हा फूँकना पड़ता तब आँख खुलत ।” पा लेट ई ही बोली, “लगा दे गुंजा, इस ब मड़ आदमी क बात या धरती है ”

गुंजा दोन हाथ से च दन के पैर म घुटने से नीचे उबटन लगाने लगी। उबटन सुखाने के लए जब वह पैर पर हाथ रगड़ने लगी तो च दन के पैर के बाल को रह–रहकर ख च देती। च दन एक–दो बार ‘सी’–‘सी’ करके रह गया, ले कन बाद म पा से शकायत क , “देख लो, भउजी ”

“ या है?”

“ हम या कर, बाल सट जाते ह तो?” गुंजा बोली। “ सट जाते ह लासा है या?” च दन बोला। “ तो

लो, अपने से रगड़ के छुड़ा लो।" गुंजा पीछे सरक गई।

" भउजी "

" छुड़ा दे गुंजा, देर हो रही है " पा बोली।

झ ली छुड़ाकर गुंजा एक कागज म बटोरकर च दन के हाथ म थमाकर

उठने लगी, तो कटोरी म से थोड़ा-सा उबटन नकालकर च दन के गाल म लगा दया।

" ँ ऊँ..."

" मलान करो इस खर हाथ से क कौन यादा चकना है " फुरती से कटोरी म से उबटन नकालकर च दन ने लपककर गुंजा का जूड़ा पकड़

लया और उसके पूरे मुँह-भर म अ छ तरह उबटन पोत दया।

" ब हना "

पा उठ बैठ , "यह या रे "

" देख लो अपने देवर क करनी "

" तुम भी देख लो अपनी ब हन क करनी " च दन ने उबटन पुता आ अपना दा हना गाल भौजाई के आगे कर दया।

पा हँसने लगी, "आज ही फगुआ शु हो गया, अभी होली भी नह जली।" पा देवर के गाल का उबटन अपने हाथ से छुड़ाने लगी।

उधर गुंजा भी वह बैठकर दोन हाथ से अपने मुँह का उबटन रगड़-रगड़कर छुड़ाने लगी।

च दन का मुँह जब साफ हो गया तो वह गुंजा से बोला, "कल बताऊँगा क ब लहार का फगुआ कैसा होता है?" उ र म गुंजा ने बहन से छपकर च दन को अँगूठा दखा दया।

यारह

रात आधी बीती, प छम क बारी म गाँव जुट गया। होली क पूजा ई, आग लगी, देखते-देखते लपट चटक- चटककर आसमान छूने लग । लुकाड़ जला-जलाकर लड़के भाँजने लगे। गाँव के बड़े-बूढ़े इस ताक म थे क लड़के सरे गाँव के सवान म बुझती ई लुकाड़ न फक, बाक ौढ़ और जवान, लाठ लये इस पहरे पर थे क सरे गाँववाले बुझती ई लुकाड़ ब लहार क सीमा म न फक। ऐसा व ास था क अपने गाँव क बुझती

ई लुकाड़ सरे गाँव क सीमा म फक देने से नए साल का ख-दा र ्य सरे गाँव म चला जाता था, इस लए हर गाँववाले इस रात को अपने-अपने

सवान क कड़ी नगरानी करते थे, ला ठय से लैस, य क कभी-कभी दो

गाँव म आपस म मारपीट हो जाती थी। गाँव के बड़े–बूढ़े इसी मारपीट को बचाने के लए इस रात, वशेष करके जब तक गाँव के लड़क क लुकाड़ पूरी तरह भँजकर बुझ न जात , जागते रहते। भोर ई, गाँव फगुआ खेलने म जुट गया। दन–भर के लए क टया ब द हो गई। लोग ने उ साह से होली म लग गए। च दन लोग के गरोह म घर–घर, ार– ार घूमता रहा। पहले से ही उसने आठ–दस लड़क का एक दल बना

लया था और तय कया था क इस वष क चड़, मट्ट , गोबर से होली न

खेलने का चार करेगा, इसी लए सबसे पहले इसके दलवाले गाँव म घूमना शु हो गए थे। नौजवान को हाथ जोड़कर, समझा–समझाकर मना करते रहे क क चड़–पाँक क जगह होली रंग से खेली जाए। न जाने कैसा जा

आ क स दय क यह कु था एकाएक थम गई। हाथ म बा ट का रंग

और टटके कटे बाँस क पचकारी लये वह घर–घर, पद क भौजाई लगनेवाली सभी औरत से अपने दल के साथ होली खेल आया। फगुआ के

दन, घर क औरत इसी पाँक–पानी के डर से भीतर से कवाड़ सबेरे ही

ब द कर लेती थ । सो इस साल, इस प रवतन पर, सभी ने जी भरकर होली खेली। गोबर–पाँक क जगह, ग लय म लाल–पीले–हरे रंग फैल गए। गुंजा के संग म समौ रआ लड़ कयाँ भी दल म होली खेलने नकल , घर–घर जाकर वारी– याही ननद, भौजाइय से होली खेलकर लाल–पीले रंग से ऊपर से नीचे तक नहा आ ।

च दन घर लौटा। भौजाई से अँगोछा माँग नद म नहाने चला गया। बड़ी मेहनत से मल–मलकर तो रंग छुड़ाया। देर से लोग तीर पर नहा रहे थे। धारा न होती तो नद का जल भी रँग जाता। लौटने लगा तो धूप चढ़ आई थी। दोपहर से बेर झुक गई थी। तीनदारे म गुंजा मली, “अरे दन–भर फगुआ ही खेलती रहोगी नहाना–धोना न होगा या?”

“ मने तो नहा लया।”

“ या नहा लया? अभी तो देह–मुँह जस–का–तस लाल–पीला है।”

“ न जाने कैसा रंग है क छूटता ही नह ”

“ ब लहार का रंग ज द नह छूटता, चढ़ा तो चढ़ गया ” बात फककर च दन आगे बढ़ा, पलड़े क ओट म रखी ई बा ट म से दो कटोरे रंग च दन क ब नआइन–धोती पर पीछे से छ प्–छ प् पड़ गए। च दन पीछे मुड़ा तो गुंजा बगल म कतराकर झटके से सरे घर म भागी। लपककर च दन ने पकड़ लया। बगल क घनौची पर भरी ई बा ट रखी थी, पूरी–क –पूरी भरी ई बा ट का जल गुंजा क देह पर—“हर–हर, महादेव ” ऊपर से नीचे तक गुंजा सराबोर, कपड़े भीगकर देह से चपक गए।

व थ मांसल देह के अंग– यंग नखर आए। लाज के मारे गुंजा वह

सकुड़कर बैठ गई तो सरी बा ट बचा आ पीला रंग भी ऊपर से च दन

ने डाल दया।

गोरी देह पर पीला रंग और भी जम गया। “ अब उठो।”

“ बक् ब हना ए ब ह नया ” गुंजा ने पुकारा।

छोट बहन क पुकार पर पा घर म से आँगन म आ गई। “ ये या रे ”

“ देख लो च दन क करनी।”

“ चोरी और ऊपर से सीनाज़ोरी। नहा–धोके आए तो हमको तुमने नासा, ऊपर से भउजी से हाई करती हो।”

“ कौन कससे कम है उठ चल, मन न भरा हो तो हंडे म रंग घोर के तुम दोन जी भरके छपक लो।”

गुंजा उठकर चली तो भीगी ई फुफुती* फदर–फदर करने लगी। “ भउजी, ये तो बाजा बजता है ”

“ जा, जा इनार पर फर से नहा आ।”

“ अब तो म नह जाता, गुंजा बबुनी जाए?”

“ गुंजा इनार पर नहाने जाएगी। पागल आ है या? जा, दो बा ट पानी अपनी देह पर डाल लेना, दो लेते आना, एक से ये नहाएगी।” बा ट म पानी लेकर लौटा तो गुंजा आँगन म घनौची के पास ती ा म बैठ थी। पा रसोईघर म थी। घनौची पर पानी रखकर सरी बा ट गुंजा के पास रखते ए बोला, “नहा लया तो फगुआ खेलने क सु ध आई ”

“ तुमसे खेले बना मेरा फगुआ कैसे पूरा होता... ” तभी काका खाने को भीतर आ प ँचे।

“ अभी मत खाना, म नहाकर आती ँ, तब परसूँगी। तब तक काका को खाने दो।” वह बोली।

च दन काका के पीछे–पीछे चौके के आगे वाले ओसारे म उनके लए पीढ़ा–पानी रखने चला गया। गुंजा फुरती से नहाने लगी। साँझ के चार बजे से ही झाल और ढोल लये, फगुआ गाते ए गाँव के लोग के झुंड–के–झुंड ार– ार घूमने लगे। चेहरे और शरीर अबरख पड़े, गुलाबी–हरे–लाल अबीर से रँगे ए। कसी– कसी ार पर भीतर से औरत गीला रंग भी फक देती थ , नह तो अबरख मला आ अबीर धुएँ क तरह मंडली के माथे पर उड़ता रहता। झाल और ढोल क लय म, बीस कंठ से फाग मुख रत हो उठा : बम भोले बाबा, बम भोले बाबा, कँहवा रगबल पाग रया।

च दन के ार मंडली बैठ थी। भीतर से अड़ोस–पड़ोस क लड़ कय के साथ गुंजा भी झाँक रही थी। पीछे से गाँव क लड़ कयाँ रह–रहकर उसे बाहर ठेल देने क को शश करत । च दन सामने से देख रहा था। गौनई चल रही थी। अ तम बार गानेवाले नवही जोश म आ गए। घुटने के बल बैठकर दरवाजे क ओर हाथ बढ़ाकर बोल फूटा : कमलदल खोल, त नक हँ स के बोल...

उसके बाद दो–एक दल और आए। अ त म नाच का दल आया, ‘जो गड़ा’* गानेवाल का। पूरब टोला का उ मा गोड़ ल डा (नच नयाँ) बना था। मऊग साला साड़ी पहनकर, पाउडर पोत मुँह पर चमकती ई ब दया और ललाट पर टकुली, माँग म सेनुर भरे, पैर म सेर–सेर भर के घुँघ , पीछे गरोहवाले ढोल–झाल लये और इ ह घेरकर चलते ए गाँव के पचास

लड़के। घूमते ए च दन के ार पर गोल जमा। ढोल तड़तड़ा उठा। ‘जो गड़ा’ क बोल फूट : जो गजी, बाह जो गजी, जो गजी, धीरे–धीरे

नद के तीरे-तीरे।

अरे रे कबीर...

सुनो रे कबीर...

और उ मा, बीच क खाली जगह म जो गड़े क अ तम बोल पर घड़ारी क तरह फुर से सरककर नाचने लगा। घुँघ क आवाज पर ढोलक ताल

देने लगा। 'जो गड़ा' चलता रहा...

अरे रे कबीर

सुन रे कबीर

जो गजी देख-सू न के

मजे म आँ ख मू न के

चली जा, ताक धना धन्

जो गजी सर जो गजी

जो गजी देह छोड़ के...

पतालीस वष का बूढ़ा उ मा, ढोल क ताल पर छूटता है तो नए नाचनेवाले ल डे भी मात हो जाते ह। देह क सु ध-बु ध न जाने कहाँ चली जाती है, बस घंटे-घंटे पर चलम का दम मलता जाए, फर रात-भर नचाते रहो। साँवरे ए चेहरे पर पसीने क लक र पाउडर को धो देती ह, ले कन मुँह म भरे ए पान के बीड़े, देह म चाभी भरते रहते ह। गाँव म दो-तीन नच नयाँ और ह, ले कन उ मा क बराबरी करनेवाला अभी तक कोई 'ल डा' नह

नकला।

नाच ख म आ। फाटक के पीछे झाँकती ई दजन औरत के पास घुँघ झनझनाते ए उ मा प ँच गया और ढोल बजानेवाले के सर का अँगोछा ख च, दोन हाथ से पकड़कर फाँड़ बना सामने फैला दया। पूआ और पू ड़य के गड् अँगोछे म पड़ने लगे। उ मा छ -छ करता आ सरे ार क ओर बढ़ा, पीछे-पीछे नचदेखउ का झुंड हँसता, गाता, शोर मचाता। काका इसे शु से ही मानते ह। आज के दन इसे एक पया देते ह, पछले तीन साल से मचउआ बोझा भी देने लगे ह और उ मा काका से ऐसे ब तयाता है जैसे मेहरा अपने मरद से। गाँव के सभी लोग को वह नाम से पुकारता है। ले कन काका से ऐसा लजाता है क सर के सामने, उनसे कभी ब तयाता तक नह , नाम लेना तो र रहा। इनके दरवाज़े से, जैसे ही नाचकर आगे बढ़ा क काका आते ए दख गए। भीड़ म कसी ने बोल

दया, "उ म, तु हारे भतार आ गए।"

उ मा चलते-चलते ठमक गया। सामने जो काका को देखा तो साड़ी का प ला ख चकर फुरती से घूँघट काढ़ लया। गोल क गया था। मुसकराते ए काका गोल के पास प ँचे, ढोलक वाल ने तड़-तड़ ढोल पीटा। उ मा के घुँघ झनझना उठे, बजली क ग त से उ मा, गोलाई म महीन काट से ढु

कने लगा। गले से गीत फूटा : हाजीपुर के हाट म हेराइल हो, मोरे नाक क झुल नया, सासु मोरा मारे, नन द ग रयावे

सइयाँ मारे बाँस क कोइ नयाँ * हो, सासु खोजवावे,ननद खोजवावे

पय ढूँढ़े नाक के नस नयाँ हो, मोरे नाक क झुल नया...

काका ने धोती के फटे म बँधा एक पया नकालकर सामने कया। " अब मान जाओ, जोगीजी " कोई च लाया। अजीब मुसकराहट से, घूँघट नकाले ए ही, उ मा काका के आगे थरकने लगा।

काका ने पया का नचला कोर पकड़, खड़ा करके उ मा के आगे हाथ बढ़ा दया।

" जोगीजी, हाथ न छूना।"

उ मा ने दो अँगु लय से थोड़ा-सा घूँघट हटाकर, काका के बढ़े ए हाथ म चाँद के पए को तरछ आँख से देखा। फर बड़े अ दाज़ से, बचाते ए, काका क उँगली छुए बना उ मा ने पया पकड़ा, काका ने पया छोड़ उ मा क कलाई। लाज से झुककर, झटके से अपनी कलाई छुड़ा, गाते ए उ मा पीछे मुड़ा...

सइयाँ मोरा नादान रे...

पकड़े मोर कलाई...

एक साथ हँसती ई भीड़ बोली, "वाह जोगीजी, जोगीजी, या काट है " ढोल पाँच-सात बार टनक गया।

गोल आगे बढ़ गया। काका घर चले आए। बारह

अचलगढ़ और ब लहार के बीच ताल म एक बीस बीघे का खेत था। बेहद उपजाऊ खेत ब लहार क सीमा से लगा आ था। पूरी सरेह डुमराँव के महाराज क थी। वष पहले डुमराँव के महाराज ने इस खेत को ब लहारवाल को बना लगान दे दया था। ब लहार के लोग गाँव के ब च के कूल का खच, प छम क बारी वाले म दर म ठाकुरजी क पूजा इ या द के लए एक पुजारी का खच तथा गाँव क अनाथ बेवा औरत क मदद या उनक बे टय के याह आ द का खच, इसी खेत क आमदनी से चलाते थे। पु त-दर-पु त से यह खेत ब लहार के क जे म चला आता था। इसक आमदनी का हसाब- कताब तथा खेत क देख-रेख, तीन-तीन वष के लए गाँव के कसी को स प द जाती थी। पछले तीन वष के

कता थे सुमेसर म सर।

इ ह दन डुमराँव के महाराजा क हालत बगड़ने लगी और उ ह ने अचलगढ़ के एक जम दार से पए लेकर इस खेत का पट्टा लख दया। पट्टा तो लख दया, क तु खेत ब लहार क ही जोत म रहा। अचलगढ़ के जम दार ने खेत जोतते समय ब लहार वाल को रोक लया, क तु ब लहार के सारे गाँव के सामने अकेले जम दार क चल न सक । अ त म उसने अदालत म मुक़दमा कर दया।

सुमेसर म सर थे जीभ के बगड़े। आमदनी खा जाते, मुक़दमा क पैरवी ठ क से हो न पाती। मुक़दमा बगड़ गया। तीन वष तक कसी तरह ख चने के बाद, ब लहार मुक़दमा हार गया।

अब आगे या होना चा हए, इसी पर वचार करने के लए गाँव का बटोर

आ, भनक मली थी क आषाढ़ म अचलगढ़ वाला जम दार खेत पर हल

चढ़ाएगा। इस बीच अपील हो जानी चा हए, नह तो मामला बगड़ जाएगा।

बटोर म बूढ़े, अधेड़, जवान, सभी जुटे। सुमेसर म सर के पछले तीन साल

के खेत क आमदनी माँगी गई, तो बताया क आमदनी वाली बही कह खो गई है। बड़ी खलबली मची, लोग सुमेसर म सर के ख़लाफ़ बोलने लगे। लगा, झगड़ा बढ़ेगा। काका इसी समय खड़े हो बोले, "बही माँगने से अब

या होगा? ऐसे आदमी को यह काम स पना ही बड़ी भारी भूल थी। अब

जो आ सो आ।"

" आ सो आ कैसे? अपील का खच कौन देगा?"

" खेत क आमदनी से मलने के बाद जो कमी होगी, उसके लए च दा लग जाए।" लोग कसी तरह चुप ए। ले कन बाद म कुछ लोग बोले, "अगर अचलगढ़वाला खेत पर क जा करने आया तब?"

" मौक़े से अपील हो जाएगी तो वह नह आएगा।" काका बोले। " और आ ही गया तब?"

" तब देखा जाएगा। अभी तो जो आगे है, उसका नपटारा होना चा हए।"

बटोर म आए ए लोग इसी बात पर एक राय हो उठ गए।

काका अपने खंड क ओर लौट गए।

तेरह

यह बहंसी जाने कैसे पड़ोस के मीनापुर से यहाँ चली आई थी। तब, जब काका बो जी वत थ । खा–पीकर दरवाज़े के आगे धूप म पीठ सक रही थ । छह महीन क गभवती बहंसी, पास आ आँचल फैला रोने लगी थी। पास

बठा, काका–बो गाँव, घर–जात और रोने का कारण पूछ ग । रोती ई

पतीस साल क बहंसी ने बताया था क दो जवान बेटे ह, सभी ने घर से

नकाल दया। आदमी को मरे दो वष हो गए। और बहंसी ने काका–बो के

पैर पर सर टेककर अपना फूला आ पेट दखा, रहने क सरन माँगी। काका–बो पघल ग , जा त क कुरमी उस बहंसी को अपने घर म सरन दे द । गोइँठावाला कोने का घर खाली करके एक बँसखट दे द । बहंसी रोज काका–बो के चरण धो–धोकर पीने लगी। कुटवनी– पसवनी से खाने–भर को

मल जाता, कमी काका–बो पूरी कर देत । काका–बो क दया और उपकार

से बहंसी इसी गाँव म बस गई। दो–तीन महीन के बाद बहंसी को एक लड़का आ था, काका–बो ने

अपनी पतो क तरह बहंसी क सेवा क थी। क तु ह ते-भर बाद नवजात मर गया। काका-बो तो खी , क तु

बहंसी को खुशी ई। झंझट से फुरसत मली।

उसके बाद बहंसी ने अपने घर को लीप-पोतकर सँवार दया, गाँव-घर के लोग के काम मेहनत से करने लगी। लोग के बेट -बे टय क ससुराल, तीज- योहार पर करनी लेकर जाने लगी। ईमानदारी इतनी थी क गाँव-भर के लोग बहंसी को ही खोजते, जससे लगभग साल-भर वह इसी काम म

त रहती। देखते-देखते बहंसी ने चार पैसे जुटा लये, कपड़े-ल े, बतन

इ या द से पूरी तरह वह बस गई। बहंसी ब लहार क हो गई, काका-बो क चेरी।

गाँव म याह-शाद पड़ती तो बहंसी तन-मन से जुट जाती थी। भय से र हत बहंसी काम पड़ने पर, आधी रात को भी एक गाँव से सरे गाँव चली जाती। तब जाँगर म ज़ोर था, दस-बारह बरस बाद देह थकने लगी थी। लड़के भी उसे बार-बार बुलाने आए थे, ले कन बहंसी नह गई। बेट से कह दया, जहाँ क माट ने ख म सरन द , वह क माट से उसक अथ उठेगी।

फर भी बहंसी शाद - याह के काम म बड़ी च लेती थी। लड़के क

बरात जाने पर रात को डोमकच् (रतजगा) म वह वशेष काम करती थी। बगल के तवारी के बेटे क बरात गई थी, कृ णप के ादशी क रात। रात को जेठ क ह क -ह क पुरवा बह रही थी। सारे गाँव म स ाटा। अगल-बगल क सयानी लड़ कयाँ और ब एँ तवारी के घर म जुट गई थ ।

बहंसी क खोज ई। बुलाहट आई, तो बहंसी ने कहा क बना गुंजा के

वह नह जाएगी। लड़ कय ने गुंजा को ले जाने के लए पा से म त क , तब गुंजा के साथ बहंसी डोमकच् म प ँची। फूल क थाली म पानी भरकर कठवत से ढँक दया गया और कठवत के पदे पर गोइँठे क राख फैलाकर दो ला ठयाँ खड़ी क ग , ऊपर के सर को दो लड़ कय ने पकड़ा। पदे पर ला ठय के र, धरती पर बैठकर गुंजा अ दाज़ से रगड़ने लगी। बड़ी ही पैनी पर मधुर आवाज, घर-आँगन म फैल गई। गुंजा के कंठ से गीत फूटा : मोर पछुव रया बहो रया के फेड़वा, बनपुरवा के घहराई...

कठोते के वर और गुंजा क लय पर ढोलक से ताल नकली, बहंसी आँगन म नाचने लगी।

डोमकच् म बहंसी का नाच मश र था। औरत से खचाखच भरे ए आँगन म घंटे-भर तक बहंसी नाचती रही और गुंजा एक के बाद एक, गीत के बोल कढ़ाती रही। घंटे-भर नाचने के बाद वहाँ थककर बैठ गई। आधा घंटा सु ताने के बाद उसने अपना वेश बदला। गाँव के चौक दार का खाक कोट पहन, सर पर लाल पगड़ी बाँध ली। मद क तरह धोती पहन हाथ म लाठ लेकर, दो-एक लड़ कय को भी मद क पोशाक पहना, घर के बाहर

नकली।

पास म घर था जा लम अहीर का। जा लम तो बरात म गया था, ले कन उसका बूढ़ा बाप अपने आर पर सो रहा था। जा लम चोर था, गाँव के बरमेसर पांडे का बैल ह ते-भर पहले चोरी चला गया था। बहंसी चौक दार के वेश म जा लम के आर पर प ँची। जाते ही, उसके बाप क ख टया

के पाये को खट्–खट् लाठ से दो बार ठ ककर मोट आवाज म पुकारा, “ जा लम ”

“ कवन है?” जा लम का बूढ़ा बाप उठ बैठा। “ हम ह थाने के सपाही, जा लम कहाँ है? मु खया के आर पर बुलाहट है।”

“ वह तो बरात गया है।”

“ तो तुम चलो।”

“ कवन काम है?” बूढ़ा अ हर हाथ जोड़कर डर से काँपने लगा। “ काम या है, बरमेसर पांडे का बैल जो चोरी गया है उसम जा लम का हाथ है। पता लगा है क बैल बेचकर जा लम अपना ह सा लाया है। चलो, दरोगाजी तुमको पकड़के थाने ले जाएँगे, नह तो उनके पास पया जमा करके बैल का पता बताओ।”

“ दोहाई सपाहीजी क , हम सब बताते ह।”

“ बताओ कस गाँव म कसके हाथ बैल बका है?” बहंसी ने कड़ककर पूछा।

“ पयर टा के खेलावन अहीर के हाथ दो सौ म।” जा लम का बाप काँपते ए दोन हाथ जोड़कर बोला।

“ अ छा, अ छा, अब सुत रहो। हम दरोगाजी से जाके कह दगे।” और बहंसी लाठ पटकती ई आगे बढ़ गई। पास म छपी ई लड़ कयाँ मुँह म कपड़ा ठूँसकर हँसती रह ।

घर पर थे सुमेसर म सर बरात नह गए थे और बाहर आर पर सोते ए खर–खर नाक बजा रहे थे।

प ँचकर उनक बँसखट पर बहंसी ने खट्–खट् दो बार लाठ पटककर आवाज़ लगाई, “सुमेसर म सर ”

सुमेसर म सर हड़बड़ाकर उठ बैठे, “कवन है?”

“ चलो मु खया के आर पर, थाने से दरोगाजी आए ह, बुलाहट है, हम थाने के सपाही ह।”

सुमेसर म सर को रात म कुछ कम दखाई पड़ता था। घूरकर ताकने क को शश करते ए घबराई आवाज म बोले, “कवन काम है?”

“ काम या है, गाँव–भर से दर वा त पड़ी है क पंच बगहवा क सारी आमदनी खा गए और हसाब क बही भी नह दखाते हो ” सुमेसर म सर क बाई गुम। चुपचाप सोचने लगे, तो बहंसी ने फर टोका, “ चलते हो क नह ?”

“ कहाँ चल? बही मल गई है।”

“ मल गई तो लेके चलो दरोगा के पास, नह तो हमको दे दो।”

“ हाँ, अभी ले आता ँ।” सुमेसर म सर ने बाहर बरामदे म पड़ा बड़ा–सा चार प हएवाला लकड़ी का स क खोलकर बही नकाली और बहंसी के हाथ म रख द । बही लेकर बहंसी मोट आवाज म कड़ककर बोली, “अ छा, अब तुम सुत रहो।”

पीछे खड़ी लड़ कय का बुरा हाल। आँचल म मुँह तोप-तोपकर हँसी रोके

ए थ । बही पाकर बहंसी गली म घुसकर नौ दो यारह लड़ कय को घर

प ँचाकर उसी समय बरमेसर पांडे के घर प ँची। घर के लोग को जगाया। आधी रात चौक दार को देख लोग घबराए। क तु बहंसी ने पगड़ी उतार जा लम के बाप ारा जाना आ बैल क चोरी का भेद उन लोग को बता दया। रातोरात बरमेसर पांडे के घर के दो आदमी पयर टा को नकल पड़े।

एक आदमी थाने गया। बैल पकड़ा गया, बाद म जा लम बरात म ही पकड़

लया गया।

गाँव म सनसनी क तरह बात फैली। संग म सुमेसर म सर ारा बही दे

दए जाने क घटना पर लोग को व ास नह आ, ले कन हसाब लगाने

पर पता चला क एक हजार पए सुमेसर म सर खा गए थे। चौदह

तीन-चार महीन के भीतर गुंजा ने घर-आँगन को अपने नेह के स मोहन म बाँध लया। आदमी से लेकर जानवर तक क च ता , सूप, गगरे, बा ट , डोर, चू हे-जाँते से लगाव, गुंजा ब लहार के मोह म बँध गई। इन चार महीन म पा ने घर का सारा बोझ गुंजा पर छोड़ दया और गुंजा ने उसे

सर-माथे पर ओढ़ लया। बैसाख के अ त म एक बार वै जी आए थे और

गुंजा क माँ क तबीयत कुछ खराब होने के कारण पा ने गुंजा को कुछ

दन के लए चौबेछपरा भेज दया था। दस-प ह दन के बाद वै जी

आप ही प ँचा गए थे। क तु इन प ह दन के भीतर ही पा क जो

ग त ई उसे वही जानती थी। एक तो देह भारी, फर महीन से गृह थी के

भार से अलग, पा को रसोई बनाने म बेहद परेशानी ई। और जब गुंजा आई तो पा बोली, “जब तू चली जाएगी तब इस घर का

या होगा?”

“ होगा या , तेरा घर, तू सँभालेगी।” च दन बैठकर भुजना चबा रहा था, उसक ओर देखकर पा बोली, “और तो सँभाल लूँगी, ले कन इस ब मड़ महादेव को कौन सँभालेगा?” वैसे ही ग भीर, तरछ आँख से च दन क ओर ताककर गुंजा बोली, “मने

कसी का ठ का लया है?”

“ तो य नह ले लेती बोल, ठ का लेगी तो बाबू से बात चलाऊँ?”

“ गुंजा ” च दन ने रोब से पुकारा।

गुंजा और पा एक– सरे को ताककर हँसने लग । हँसी के बाद च दन ने फर पुकारा, “गुंजा ”

“ या है?”

“ उठो, एक लोटा रस बना दो।”

“ बस एक लोटा क एक गगरा?”

तभी खाँसते ए काका आ गए। “ हाँ, तो एक गगरा ही बना दो।” च दन बोला। “ एक गगरा या बन रहा है, च दन?” काका ने पूछा। “ रस, काका, रस बन रहा है।”

“ एक गगरा कौन पएगा रे?”

“ ँ, पीनेवाल क कमी है, काका पहले गुंजा से कहा एक लोटा बनाओ, बीच म तुम भी आ गए तो कहा क अब एक लोटा म या होगा, बने एक गगरा, भइया भी दाना लेके आते ह गे, नुकसान न होगा।”

पा और गुंजा आँचल से मुँह तोपकर हँस रही थ ।

काका जमकर पीढ़े पर बैठ द वार से पीठ टेकते ए बोले, “बने गुंजा बेट , त नक ज द हाथ चलाओ, तु हारे बना तो बड़ा उदास लगता था। ये च दन तो एक नह सुनता, प तया (चचा) से प री (हँसी) करता है। तुम समाचार कहो, बैदाइन नीक हो ग ”

“ हाँ, हाँ नीक हो ग ।” च दन ने उ र दया। “ तू ही चौबेछपरा से आया है?”

“ आया नह है तो या , जो आया है उसने तो बताया है, रस घोर के गुंजा आती है तो पूछ लो ”

“ अ छा, रस घोर रही है।” काका भीतर से गद् गद हो कुछ जोर से बोले, “ अ छा, घोर बबुनी, फ का न होने पावे, दही हो तो डाल देना।” रस ज द से इन लोग के आगे रख, गुंजा घर से लाया सामान बाहर

नकालने लगी।

काका समझ गए, उ ह ने च दन को चमाइन बुलाने को दौड़ाया। और साँझ को, पा को पु ज मा। घर–आँगन म नए ढंग से खुशी समा गई। नहछू–नहान, बरही के भोज आ द म देखते–देखते डेढ़ महीना कैसे बीत गया, कसी को पता न चला। ब चा होने के महीने–भर के बाद होनेवाले भोज म वै जी भी आए थे। भोज समा त होने के सरे दन वह

पा से बोले, “अब गुंजा को बदा कर दो , पा ”

क तु पा चुप रही तो वै जी ने फर कया, “ या बात है, बेट ?”

“ अभी देह पूरी तरह नह चलती बाबू, एक महीने और गुंजा को छोड़ देते तो मेरी देह सँभल जाती। गुंजा को सावन म म प ँचवा देती।” वै जी घर म चारपाई पर बैठ, सामने धरती पर बैठ ई पा को देख बोले, “ गुंजा सयानी हो गई पा, इसक शाद – याह क च ता लगी है। सोचता ँ, अब इससे भी मेरा उ ार हो जाता तो बड़ी भारी च ता से फुरसत मल जाती। घर क हालत तुम जानती ही हो, देने–लेने लायक तो मेरे पास या है, ले कन तु हारी तरह इसे भी कोई यो य वर मल जाता तो

मेरे भाग जाग जाते”

पा चुप रही।

वै जी फर बोले, “इस गाँव म कोई लड़का तु हारी आँख म तो नह है?”

पा फर भी चुप रही।

वै जी फर बोलने लगे, “तु हारी माँ तो कहती थी क उसी गाँव म गुंजा भी

याह जाती तो दोन बहन पास-पास रहत ।”

वै जी चुप लगा, पा क ओर ताकने लगे तो वह बोली, “बाबू मेरा मन था

क गुंजा का याह च दन से ही हो जाता, घर क लड़क घर म ही रह

जाती तो इस चू हे के भाग जग जाते गृह थी हमारी पूरी तरह सँभल जाती।”

“ ले कन पा, देने को मेरे पास कुछ नह है। तु हारे याह म भी कुछ दया तो नह था, ले कन उस समय इस घर क बात और थी। अब खाने-पीने से घर ब त खुशहाल हो गया है। अब कार और उनके काका मेरी बात मान

या न मान। मुँह खोलने पर अगर ‘नह ’ सुनना पड़ा, तो इसका ख मुझसे सहा न जाएगा। अगर इसका भार तुम ले लो तो ठ क है।”

“ यही तो म भी सोचती थी बाबू, क कह ये लोग ऐसा न सोच क म अपनी बहन को खपाना चाहती ँ। अगर मेरी बात इन लोग ने मान ली, तो समझूँगी क मेरा नसीब अ छा है।” वै जी पा से गुंजा और च दन के याह का परो प से इशारा करके

चले गए। और तब से, पा इस बात को कार और काका के कान म डालने का उ चत अवसर ढूँढ़ने लगी।

एक महीने बाद पा ने गुंजा क वदाई क तैयारी क । सावन लग गया था, सोना नद पूरी तरह भर गई थी। अ छ -अ छ पाँच सा ड़याँ, भर दौरी पकवान, पा ने बहन के साथ भेजने को तैयार कर दया। वदाई के दन, अड़ोस-पड़ोस के घर म जाकर गुंजा, समु रआ लड़ कय और ब से

वदाई क भट कर आई। वदाई के समय च दन का घर पड़ोस क

लड़ कय से भर गया। सबक आँख भरी , सबके चेहरे उदास जैसे गाँव क बेट ससुराल जा रही हो। गुंजा ने काका, कार और पा सबके पैर

छुए।

घर से तीर तक, लगभग डेढ़ सौ गज तक गुंजा को प ँचाने के लए लड़ कय का झुंड चला। आगे कार, पीछे च दन, उसके पीछे माथे पर पकवान क दौरी लये दशरथ और उसके पीछे लड़ कय के दल के साथ गुंजा। काले घने बाल का बड़ा-सा जूड़ा, आँख म ह का काजल और देह पर नई पयरी, पैर म चाँद के दो छ ले और हाथ म सोने क अँगूठ , गुंजा का प नखर आया था। क तु गुंजा

क आँख म घर जाने क जतनी खुशी थी, ब लहार छूटने क उतनी ही उदासी भी भर आई थी। नाव पर बैठते समय तो तीर पर क और भी लड़ कयाँ तथा औरत जुट गई थ । नाव क ड गी थी, अगली फग पर गुंजा बैठ , बीच म पकवान क दौरी के साथ च दन और पीछे से दशरथ ने ल गी सँभाली। नाव सरकने के पहले तीर क ओर मुँह कर, अपने दोन हाथ ह के–से गुंजा ने जोड़ दए। तीर पर क लगभग सभी समु रया लड़ कय के भी बीस हाथ उ र म अपने आप ही जुड़ गए।

सोना म नाव चौबेछपरा क ओर सरक चली। प ह

सबेरे के लगभग दस बजे थे। सावन का आकाश बादल से घरा आ था, क तु हवा होने से बादल उड़ते जाते थे। चौबेपुर जाने के लए सोना क

धारा और हवा दोन मा फ़क थ । सोना का पानी अभी ब त ग दा नह आ था। नद के दोन ओर जनेरा, साँवाँ और जो हरी के हरे खेत लहरा रहे थे। ठंडा सुहावना मौसम नाव खेने के लए मन म और भी उ साह भर देता था। च दन और गुंजा दोन एक– सरे क ओर मुँह करके बैठे ए थे। दोन रह–रहकर एक– सरे को नहार लेते। रँगरेज के हाथ रँगी ई पीली साड़ी पर अबरख, हवा से साड़ी के हलने पर रह–रहकर चमक जाता था। गुंजा क व थ, भरी गोरी देह पर पयरी खल रही थी। कलाइय म क भरी ई चू ड़याँ और चाँद के पछुए हाथ के त नक हल जाने पर बज उठते थे। सुघर, सलोने मुँह क , काजल से भरी बड़ी–बड़ी आम क फाँक–सी आँख, च दन के मुँह पर टक रहत । जब कभी च दन ताक देता, तो गुंजा लजाकर सरी ओर देखने लगती। आज गुंजा को लग रहा था क चार–पाँच महीन के दन जैसे खेल म ही बीत गए। नाव पर चढ़ने के बाद उसे लगा

क उसे ब लहार के बाहर भी आना है। भीतर–भीतर गुंजा के मन म

रह–रहकर कुछ कचोट रहा था। लगता था, ब लहार म कुछ छूट गया है। नाव दाएँ कनारे से बढ़ रही थी। अहीर का बेटा दशरथ बेहद चतुर था, गुंजा से बोला, “घर म तो च दन से तुम इतना ब तयाती थ गुंजा बबुनी, यहाँ य चु पी साध ली?”

गुंजा मुसकरा पड़ी, तो दशरथ फर बोला, “हमारा वश चलता तो बैदजी से कहते क छोट बेट को भी इसी घर म डाल दो। घोड़ी पर सवार होते जगत जवार छान मारगे, ले कन च दन जैसा लड़का नह पाएँगे। कोई सरी स तान तो उनको है नह ? साध, सो हला से च दन के साथ बयाह कर छुट्ट पाते। बबुनी का मन हो तो म बैदजी से और काका और कार

भइया से भी कह सकता ँ। देन–लेन म या र खा है? दान–दहेज तो ब त

मलता है, ले कन बर–क नया क ऐसी जोड़ी नह मलती बोलो गुंजा बबुनी, या कहती हो?” दशरथ हँसने लगा।

गुंजा कुछ लजाकर च दन क ओर ताक, आँचल से मुँह तोपकर हँसने लगी तो च दन बोला, “तू अगुआई और उपरो हती दोन करना।” दशरथ चढ़ गया, “ऐ च दन, अहीर का बेटा ँ तो या आ, एक बार अगर तुम मुँह खोल दो, तो कार भइया से तु हारे सामने न कह दया तो कहना, असल का नह ।”

“ अ छा ल गी मार, ब त बढ़–बढ़कर न बोल। थक गया हो तो ला ल गी, अब हम दे।”

“ थका तो नह ँ, ले कन अगली फग पर दाब पड़ता है। गुंजा बबुनी तु हारे पास बीच म आकर बैठ जाव तो नाव क चाल तेज़ हो जाए।” दशरथ क बात पर च दन ने घूमकर पीछे दशरथ क ओर

ताका, उ र म दशरथ ने आँख से ही च दन से कुछ कहा। च दन ने तो कुछ नह कहा, पर गुंजा अपने-आप ही च दन क बगल म आकर बैठ गई। कोरी, रँगी ई साड़ी क वारी ग ध, च दन क देह-मन म भरने लगी। च दन ने बगल म बैठती ई गुंजा को एक अजब भाव से नहारा। नाव के पाटे ए चाँचर क कोर पर बैठकर, अपने और अगले फग के बीच क खाली जगह म, च दन और गुंजा दोन ने पैर लटका लये थे। नाव म थोड़ा-सा पानी था। दशरथ ने एक बार तेज़ी से ल गी मारी, नाव क चाल बढ़ और अगला फग पानी क सतह से कुछ ऊपर उठ गया, तो उधर का सारा पानी ढरककर गुंजा और च दन के दोन पैर को धो गया। गुंजा के रँगे

ए पैर का लाल रंग पानी म छूटने लगा। थोड़ी देर बाद अचानक च दन ने

नीचे पैर क ओर देखा तो पाया क गुंजा के गीले पैर से छू-छूकर उसके अपने पैर पर भी रंग के लाल-लाल ध बे उतर आए थे। च दन अपने और गुंजा के लाल रँगे पैर को वैसे ही नहारता रहा। गुंजा का यान गया तो बोली, " या देख रहे हो?"

" नीचे पैर को देखो।"

गुंजा ने देखा तो लाज से गड़ गई। च दन गुंजा के भोले चेहरे को देखने लगा और गुंजा च दन के पैर पर लगे लाल ध ब को नहारती गहरे लाल रंग से रँगी अपनी एड़ी, च दन के नाखून पर रगड़ने लगी। " यह या ?"

" जब रँगा तो पूरी तरह रँग जाए।"

" दै।"

" दै या ? एक बार तो रँगना है ही, लजाते या हो?" च दन अपना पैर नकाल, नद म लटकाकर धोने लगा तो नाव कुछ ओलरी। दशरथ का यान टूटा तो बोला, " या है, च दन?"

" कुछ नह , तुम ल गी मारो।" और च दन ने अपने दोन पैर थोड़ा-सा ऊपर करके दशरथ को दखा दए। दशरथ मुसकराकर रह गया। सहसा दशरथ गाने लगा : पाकल पाकल पानवाँ

खआवे गोपीचानवाँ

प र तया लगावे, लारे

बेईमानवाँ, प र तया लगावे – नाव पानी चीरती गई, दशरथ के गीत के बोल हवा म पीछे छूटते गए और ऊपर आकाश म एक के बाद एक बादल के टुकड़े सूरज को ढँकते ए मौसम सुहावना करते गए।

" अभी कतनी र है, च दन?"

" आधे से अ धक तो आ गए, देखो, वह रहा तु हारे गाँव के सवानवाला बरगद का पेड़।"

गुंजा यान से देखकर बोली, "अरे, द पास ीवाला कहो।" और गुंजा ने मन-ही-मन द पास ी को णाम कया और सोना का जल लेकर अपने सर पर छड़क, मन म ही मनौती मानी, क हे द पास ी, य द च दन ने मेरी माँग भरी, तो गा-बजा के चुनरी से तेरी गोद म भ ँ गी। फर अपने-आप ही च दन से कहने लगी, "सुनो च दन, हमारे गाँव म एक चौबे थे। उनक बेट थ द पा। याह के समय लोग कहते ह, वे चौदह साल क थ । याह के बाद, द पा ने कोहबर म बैठे ए अपने वर को

देख लया, जो पतालीस साल का था। कोहबर क रसम जब पूरी हो गई, तो पछवाड़े, खड़क क राह से नकल के द पा इसी सोना म डूब मर । भोर म उनक

लाश इसी पेड़ क जड़ म अटक मली। पहले सोना म बारह मास पानी भरा रहता था, ले कन तभी से गरमी म ये सूख जाती है। उसी समय से इस पेड़ का नाम द पास ी पड़ा। इस गाँव का चलन है क हर लड़क , अपने

याह के बाद, बदाई से पहले, अपने वर के साथ आकर द पास ी को

पूजती है।"

" तो तुम भी पूजोगी न, गुंजा " च दन ने बीच म ही टोक दया। " और नह तो या?" गुंजा ने लजाकर च दन को देखा। नाव द पास ी के पास आ गई थी। गुंजा फर कहने लगी, "इनसे लोग मनौती माँगते ह और पूरी भी होती है। च दन, तुम भी मनौती माँग लो न "" कसके लए?" च दन ने शरारत-भरी हँसी हँसकर पूछा। " अपने लए, और कसके लए " गुंजा कुछ खीझकर बोली।

" कस बात के लए?" च दन ने फर पूछा। " जस बात के लए तु हारा मन चाहे। तु हारे मन क बात म या जानती ँ " गुंजा ने बड़ी सरलता से कहा और फर सोना क बहती धार क ओर ताकने लगी।

च दन भी उसी सरलता से गुंजा को नहारने लगा। " बक् हमको या नहारते हो, माँगो न मनौती " च दन हँसकर कहने लगा, "हे द पास ी... " गुंजा ने बीच म ही टोक दया, "ऐसे नह , हाथ जोड़कर कहो।" और गुंजा, च दन क दोन हथे लयाँ जुटाकर सामने क ओर बढ़ाकर बोली, " अब कहो।"

" हे द पास ी अगर गुंजा को अ छा-सा मनचाहा वर मला, तो म तु ह पकवान चढ़ाऊँगा।"

गुंजा ऊपर से खीज गई। जोर से च दन क पीठ म चकोट काटकर बोली, " मनौती म भी हँसी करते हो। क ँगी पूरब चलने को, तो चलोगे प छम। गुंजा क इतनी च ता है तो... "

" तो या?" च दन ने कहा।

" कुछ नह । हर समय हँसी।" गुंजा सरी ओर मुँह करके बैठ गई। च दन गुंजा के पास सरककर बैठ गया। नाव द पास ी को पार कर गई थी।

" हमारे पास बैठना अ छा नह लगता?" गुंजा ने च दन से धीरे-से पूछा। " जानेवाले के पास अ तम समय म घड़ी-भर बैठ लेने से कौन-सा सुख

मलेगा, गुंजा अब, जब बाक दन अकेले ही काटने ह तो घड़ी-भर का यह

संग-साथ तो और भी कचोटता रहेगा।" इतने दन के बीच गुंजा से च दन ने इतना खुलकर कभी नह बोला था। गुंजा ने सरी ओर आँख फेर ल । फर सोना के जल म टप्-टप् आँसू

गरने लगे।

* एक कार क पतली ल बी ड गी। * हरी–भरी।

1 एक मुट्ठ म बा लय स हत पकड़े जा सकनेवाले ठंडल। 2 दोन बाँह म समानेवाले अनाज लगे ठंडल। * कमर के नीचे आगे क ओर लटकने वाला साड़ी का चु टदार ह सा। * होली के समय ढोलक पर ताल देते ए म ती म गाए जानेवाले गीत। * छड़ी

खंड : 2

एक

जस वष सोना म बाढ़ न आती, उस वष ब लहार के पास–पड़ोस के गाँव

क सरेह म भदई कसकर होती थी। अगर बाढ़ आ गई, तो हज़ार बीघ म छाती–भर ऊँची खड़ी फसल गंगा क गोद म चली जाती। इन खेत म भदई बोना जुए का खेल था। सब कुछ जानते ए भी इन गाँव के अ धकतर लोग यह जुआ तवष खेलते थे।

'बीस बगहवा' खेत क अपील माल क बड़ी अदालत म हो गई थी, क तु अचलगढ़ का ज़म दार 'बीस बगहवा' पर क ज़ा कर लेने क ताक म लगा

आ था। दँवरी–ओसावन के बाद, जब लोग क ख लहान उठ ग , तो

बैसाख के आर भ म ही काका ने गाँव का बटोर कया। जामुनवाली परती म साँझ के समय, सूरज डूब जाने के बाद, गाँव के बड़े–बड़े तथा नव हय क जुटान ई। पहले 'बीस बगहवा' म भदई नह बोई जाती थी। काका ने

बटोर म ताव रखा क इस वष इसम भदई बोई जाए और लगन से खेती

क कोड़ाई हो। गाँव के ब त–से लोग मज र से बीच पए बीघे क दर से अपने खेत कोड़वा लेते थे। काका के ताव पर लोग हँसे। काका ने खड़े

होकर कहा," 'बीस बगहवा' को अगर बचाना है तो जैसे म कहता ँ, गाँव–भर को उसम मदद देनी पड़ेगी।"

" अदालत–कानून अब तु ह हो गए?" सुमेसर म सर बोले। " अदालत–कानून के नाम पर खेती क सारी आमदनी तो हड़प गए

क रपा नधान अगर बहंसी न होती तो हसाब क बही भी न मलती। अब दाल–भात म ऊँट का ठे न बनोगे तो ठ क न होगा। बाँड़ बाँड़ गए, नौ हाथ का पगहा भी लेते गए। न करगे, न सर को करने दगे " सुमेसर म सर चुप लगा गए।

काका फर बोले, "हमारी राय है क गाँव के बीस आदमी रोज खेत कोड़ना शु कर द। घर पीछे एक आदमी अपनी पारी पर रोज़ खेत कोड़ने जाए। गाँव म जतने घर ह, उसके हसाब से एक घर क पारी सात दन म एक बार आएगी।"

" पारी–आरी बाँधने–चलाने क झंझट कौन सँभालेगा?" कसी ने कहा। " सब म कर लूँगा, इसका भार मुझ पर रहेगा। बस गाँव हमारी पीठ पर तैयार रहे।"

काका अपना जनेऊ नकालकर बोले, “अचलगढ़ के ज़म दार अदालत से भले जीत ल, खेत पर क जा नह कर सकते।”

“ ले कन करना या होगा?”

“ करना यह होगा,” काका बोले, “गाँव के लोग अपने इस खेत को बोव, बीस

बगहवा खेत क आमदनी कम नह होती। आधी आमदनी घर पीछे बाँट द

जाए, बाक का आधा मुक़दमे क पैरवी म लगे, बाक गऊँझी, धम के खाते म जमा हो। गाँव को अगर व ास हो, तो आमदनी–खच का हसाब म करने को तैयार ँ।” बटोर म आए ए लोग सोचते ए, आपस म एक– सरे का मुँह ताकने लगे। काका हमालय क –सी ढ़ता से, भीड़ के बीच म खड़े होकर चार ओर ताकते रहे। कुछ देर तक जब कोई न बोला तो काका फर बोले, “हाँ या नाँह का जवाब तो गाँव क ओर से मलना ही चा हए। खेत बीस बगहे का है, गाँव के मान का सवाल ऊपर से है।” सब लोग चुप हो एक– सरे से फुसुर–फुसुर ब तयाते रहे। काका कोई उ र न पाकर फर बोले, “या तो गाँव ‘हाँ’ करे या कोई और सरा उपाय रखे।”

“ अ छा, हम लोग को काका क बात मंजूर है।” गाँव के दो–चार नवही और एक–दो ौढ़ एक साथ ही बोल पड़े। फर बाक लोग भी हाँ म हाँ

मलाने लगे।

उसी समय काका भीड़ म बैठे ए बीस आद मय के नाम बोलकर बोले, “ कल अ छा दन है, ये लोग भोर म बीस बगहवा कोड़ने प ँचगे।” लोग ने मंजूरी द । बटोर उठ गया।

उसी समय अपने खंड म आकर काका ने गाँव–भर के घरजनवा क एक फेह र त बना ली। भोर म उठकर, जस– जसको जाना था, उसे खंड म जाकर जगा आए। बीस आदमी थे, इ क सव काका वयं अपनी कुदाल

लये बीस बगहवा म प ँच गए। कतार म खड़े इ क स आद मय क

कमर–भर ऊँची बटवाली कुदाल, सर के ऊपर उठकर खेत म धँसती, तो धरती जैसे दहल जाती। ऐसा त दन होता। सरे दन जसक पारी होती, काका साँझ को ही उसके घर जाकर बता आते और वयं भी खेत पर न य जाते। दन–भर इधर–उधर थ बैठे रहनेवाले, वशेषकर चैत–बैसाख के लगन के दन म, रोज नाच देखने क टोह म लगे रहनेवाले काका के जीवन म ऐसा प रवतन देख गाँव के लोग बेहद अचरज करते। क तु काका थे, जो बीस बगहवा क च ता म सोते, बीस बगहवा क च ता म जागते। अड़ोस–पड़ोस के गाँव म एक–से–एक बढ़कर नाच–नौटं कयाँ आ , लोग ने चलने का लालच भी दया, क तु काका ने सुना और हँसकर टाल दया।

कसी ने ब त ज़ोर दया तो बोले, “हमारे लए नाच–नौटंक तो अब बीस बगहवा है, यारो गाँव क आन रही, तो ब त नाच–नौटंक देखने को मलेगा।”

चार–पाँच दन के बाद लोग म न जाने कहाँ से इतनी लगन समा गई क

बना बुलाए, बना पारी के लोग खेत कोड़ने जाने लगे। बीस क जगह

तीस–तीस, चालीस–चालीस आदमी खेत कोड़ने आने लगे। गाँवभर म काका ने जैसे शंख– व न

फूँक द , दस–दस साल के ब चे तक ललकार उठे, कोड़नेवाल के संग झुंड–के–झुंड ब चे भी जाने लगे। बड़े लोग खेत कोड़ते, लड़के ब चखुरते, ढेले फोड़ते।

दन–भर कोड़ाई, साँझ को दन डूबने के बाद जामुन वाली परती म गाँव के

लोग क जुटान और केवल बीस बगहवा क चचा।

सर पर अँगोछा, घुटने तक मुड़ी ई धोती पहने, चालीस–चालीस आद मय

क कुदाल सर के ऊपर एक साथ उठकर खेत म गड़त , तो देखते ही बनता। कभी तो अचलगढ़ के लोग जैसे तमाशा देखने आते। बीस–बाईस

दन क मेहनत म खेत कोड़ दया गया, ब भी चखुरकर लड़क ने साफ़

कर द । खेत एक मेड़ से सरी मेड़ तक करइल माट के बड़े–बड़े ढेल से भर गया। ब लहार के लोग ने चैन क साँस ली। काका को लगा, य का पहला चरण समा त आ। उसके बाद, आषाढ़ क पहली बरसात म ही बीस बगहवा के करइल माट के ढेले फूटकर छतरा गए, सरी–तीसरी बार क बरसात म तो खेत फूल क तरह खल उठा। काका घूमने जाते तो खेत देखकर उनक छाती गज–भर क हो जाती। भदई बोने का सवाल आया, तो कुछ लोग क राय ई क इसम भदई न बोकर, इकट्ठे क तक म ही बोवाई क जाए, क तु काका इस बार फर गरजे, “बीस बगहवा बोया ज र जाएगा, गाँव अगर बीज का दाम न देगा, तो म ँगा।”

और खेत म जनेरा बो दया गया। देखते–देखते, छाती–भर फ़सल उग आई। गाँव उसी त मयता से सोहनी नगरानी करता रहा। छह–छह, सात–सात फ ट के जनेरा के पौधे खेत म लहराने लगे। और जब एक–एक पौधे म दोहरी– तहरी बाल लगने लग , तो ब लहारवाल क छाती जुड़ाने लगी। संयोग ऐसा आ क उस साल सोना म बाढ़ न आई। काका का ललाट दो अंगुल और चौड़ा हो आया।

रात को अगोरने के लए खेत म बीस ऊँची–ऊँची मचान गड़ ग । लोग अपनी–अपनी पारी पर रात को खेत अगोरने लगे। बीस बगहवा ने सोना उगल दया। काका के ख लहान म सैकड़ मन जनेरा का टाल लग गया। गाँव–भर का बटोरकर, काका ने आधा अनाज बराबर–बराबर गाँव के येक घर म बँटवा दया। आधा बेच दया गया।

और पए मुक़दमे के खच के लए काका के पास जमा हो गए। जनेरा कट– बक जाने के बाद काका के मन म अपार हष समा गया। बड़े

व ास से वह बीस बगहवा के मुकदमे क पैरवी करते। वार–भर तो सभी

लोग इ मीनान से रहे। सोचते थे क का तक म इस खेत को फर से अ छ तरह जोतकर गे ँ बोया जाएगा। का तक म ही मुक़दमे क तारीख पड़ी। आशा से पहले ही फ़ैसला हो गया, ब लहार मुक़दमा हार गया। काका का सारा उ साह दो–तीन दन के लए ठंडा पड़ गया। न कसी के यहाँ जाना, न कसी से बोलना, चुपचाप अपने खंड म पड़े रहते। गाँव के लोग ने उनक उदासी का कारण समझ उ ह समझाया, पर काका थे क खेत क च ता म डूबे, तो डूब गए। जामुनवाली परती म गाँव का बटोर आ। लोग ने तय कया क चाहे जैसे भी हो, अचलगढ़ के ठाकुर को खेत पर क ज़ा न करने दया जाए। खेत उसी तरह जोता–बोया जाए। काका इस बार कुछ न बोले। अचलगढ़ के ठाकुर को इस बात क भनक मल गई। ड ी हो गई थी, इस लए उसने का तक म खेत

जोतने–बोने का न य कया। ब लहार के भी जासूस, ठाकुर का हल चढ़ने के दन क टोह म लग गए। दोन ओर के भेद एक– सरे क ओर खुलने लगे। ठाकुर अपने गाँव के लठैत के साथ हल–बैल लेकर बीस बगहवा पर आ प ँचा। इधर से ब लहार के लोग भी लाठ –भाले के साथ खेत पर बाढ़ क तरह फैल गए। खेत क एक डड़ार पर ब लहार के लोग, सरी डड़ार पर

अचलगढ़ के लोग, लाठ –भाले से लैस खड़े थे। हाँ, अचलगढ़ के लोग कम थे। जो थे, वे ठाकुर के कराए के आदमी थे। इधर ब लहार के ब चे–बूढ़े तक उमड़ पड़े थे।

खेत के बीच म ठाकुर के हल–बैल आ गए, साथ म पाँच–सात आद मय के साथ ठाकुर आगे बढ़ा। इधर से चार–पाँच आदमी और डोर से बँधे ए लोटे म भरा जल लेकर नह थे काका काका और ठाकुर म बातचीत होने लगी। ठाकुर बोला, “दे खए तवारीजी, आप लोग मुक़दमा हार गए ह, तब खेत पर क जा य नह करने देते?”

“ मुक़दमा कस बात का हारे ह, ठाकुर?”

“ इस बीस बगहवा खेत का, जसे डुमराँव महाराजा ने मुझे पट्टा लख दया है।” और ठाकुर ने पट्टा का कागज काका को खोलकर दखा दया। “ यह पट्टा लख देने से कुछ नह होगा, ठाकुर डुमराँव महाराज के बाप ने

जस बीस बगहवा खेत को ब लहार को माफ़ दे, दान कर दया था, उस

खेत का पट्टा लखने का उनके लड़के को कोई अ धकार ही नह है।”

“ यह तो कानून क बात है, तवारीजी, इसका फैसला अदालत से हो चुका है।”

“ आ होगा, ले कन इस खेत के सहारे जीनेवाले ब लहार के लोग का पेट अब कैसे भरेगा, इसका फैसला तो अदालत ने कया ही नह ”

“ तो हम या कर?”

“ तुम उसका फैसला करो।”

“ म ” ठाकुर हँसा।

“ हाँ, तु ह ही फैसला करना होगा। तुमको ही बताना पड़ेगा क हर साल

ब लहार क गरीब– खी बे टय क माँग म इस खेत के कारण सेनुर पड़ता था, अब या वे वारी रहगी? जो वधवा, असहाय औरत इसके सहारे पलती थ , वे कसका आसरा देखगी? कूल और गाँव के म दर का खच अब कहाँ से आएगा? यह तो तुमको बताना पड़ेगा।”

“ सारी नया का ठेका मने ही लया है?”

“ बीस बगहवा का तो लया है ”

“ ज़ र ”

“ तो ठ का अधूरा य रहे, पूरा ले लो जनक महतारी के मा लक बने हो, उन ब च का भी भार

सँभालो।” काका के ं य-भरे वर म अपार ढ़ता थी। पीछे से ब लहार के लोग काका क पीठ पर उफन आए थे। क तु हाथ के इशारे से काका हर बार उ ह रोक देते थे। “ तवारीजी, बहस न कर। खेत जोतने क साइत बीती जा रही है।”

“ खेत कैसे जोतोगे, ठाकुर? सैकड़ वष से जेठ-बैसाख के ताप म जो खून-पसीना बहाके, जोत-बोके, इसके ढेले फोड़-फोड़ के अपना पेट पालते आए ह, तुम समझते हो, वे इसे आसानी से छोड़ दगे ” काका के वर म तेजी आने लगी।

“ छोड़ना तो पड़ेगा ही तवारीजी, खेत नकालने के लए ही तो म आज यहाँ आया ँ।”

“ कसी क धरती और बेट नकाल लेना खलवाड़ नह है, ठाकुर ”

“ म हर बात के लए तैयार होकर आया ँ तवारीजी, ले कन तुम आगे-आगे

य बोल रहे हो, खेत तु हारा अकेले का तो है नह ”

“ अकेले का होता तब तो तवारी तु हारी परछा ध गने तक न आते, ठाकुर यह गऊँझी खेत है ” काका ने अ भमान से तनकर कहा। “ चाहे जसका भी हो, तवारीजी हल के आगे से हटो, खेत पर हल चलने दो, साइत बीत रही है।” ठाकुर झुँझलाकर बोला। “ हल नह चल सकता, ठाकुर तु हारे ऊपर खून चढ़ा है तो यही सही।” काका ने चेतावनी द ।

“ हल चलके रहेगा, तवारी आज खेत जुत के रहेगा ” ठाकुर जोश म आ गया।

“ तो म भी हल के सामने से नह हटूँगा। चलाओ मेरी देह पर हल ” और काका हल के आगे बड़े लेट गए।

“ अरे यह बाँभन मरेगा या ? रम चजुआ ” ठाकुर अपने हलवाहे से बोला, “ पकड़ के इ ह अलग कर दे।” हलवाहा काका को हटाने बढ़ा तो ब लहार क भीड़ पीछे गरज पड़ी, “ख़बरदार, जो काका को हाथ लगाया ” हलवाहा डरकर पीछे हट गया।

“ तू चला हल, देखा जाएगा ” ठाकुर ने हलवाहे को आदेश दया।

क तु अपने सर पर ब लहारवाल क सधी ई ला ठयाँ देख रम चजुआ

जहाँ-का-तहाँ खड़ा ही रह गया।

“ नमकहराम, साले, हट म खुद हल चलाऊँगा।” ठाकुर ने हल क मूठ पकड़ी और बैल को पैना मारा। आगे लेटा आ आदमी देख, बैल भी पाँव उठाकर

फर वह खड़े रह गए।

ठाकुर का ोध और बढ़ा। उसने सड़ाक्-सड़ाक् लगातार बैल को पैना मारना शु कर दया। हारकर बैल आगे बढ़े और काका को बचाकर लाँघ गए, क तु हल का फाल काका क कोख (पेट क बगल) म खच् से घुस गया। खून फफककर बह नकला।

ब लहार क भीड़ म तूफान आ गया। सैकड़ ला ठयाँ एक साथ बरस पड़ । ठाकुर के दलवाले टक न सके। वे कह भागे, बैल कह भागे। क तु ठाकुर पर एक साथ इतनी ला ठायाँ पड़ क वह बुरी

तरह घायल हो गया। कुरते क जेब से पट्टेवाला कागज ब लहार के लोग ने नकाल लया। काका लोग के क ध पर लदकर आए। सारा गाँव उनके आँगन म जुट गया। खून बुरी तरह नकल रहा था, फर भी काका होश म थे, बोले, “पट्टा ”

“ ये रहा पट्टा, काका हम लोग ने ठाकुर से छ न लया।”

“ इसे फाड़ दो। ”

काका प े का फटना देखते रहे। जब पूरी तरह फट गया तो बोले, “लो, बीस

बगहवा बच गया। पर जोताई–बोआई खुद करना, यही हमारी बनती है।”

काका ने चार ओर खड़ी भीड़ को हाथ जोड़ दए। भीड़ के लोग क आँख आँसु से तर, गले म हच कयाँ बँधी । “ इसम रोने क बात या है भाई एक के जाने से बीस बगहवा रह गया, तो इसम ख क या बात है जाना तो सबको है, आगे–पीछे क तो बात है।

नया का काम देर–सबेर से तो होता ही रहता है...पानी पलाओ।”

पानी पलाने के लए पीछे से कसी ने सहारा दे काका को कुछ ऊँचा उठाया, पेट पर जोर पड़ा, खून कुछ अ धक तेज़ी से नकला। काका गट्–गट् एक लोटा पानी पी गए। खून और पतला हो बहने लगा। काका

श थल होने लगे, आँख झँपने लग । फर देखते–देखते...

ब लहार म जैसे हाहाकार मच गया। कुछ देर तो बड़ी भाग–दौड़ रही। फर सब अपार ख म डूबकर शा त हो गए। गली–गली, आँगन–आँगन को जैसे एक ही साँप डसता गया। अजीब–सा भय, शंका और गहरा शोक सबके मन म भर गया। चरन पर बँधे ए जानवर को दाना–भूसा डालने क कसी को सु ध न रही। भूख से बाँय–बाँय च लाकर ब लहार के जानवर भी चुप लगा गए।

काका क अथ उठ , तो लगा जैसे कोई बयार गाँव के बाँस, जामुन, आम के प तक को सुखाकर झनझना गई। गाँव–भर म चार ओर एक बेहद डरावना सूनापन बखर गया।

अथ जामुनवाली परती म रख द गई। परती म रोज़ बैठनेवाले काका आज जैसे लेटे ए थे। ह क - सी क पन क तरह हवा क बतास बही, जामुन क हरी–पीली दजन प याँ काका क देह पर और अथ के अगल–बगल

बखर ग ।

सारा गाँव परती म उमड़ आया। उ मा ग ड, ठकुराइन, बहंसी, रमक लया क माई—सभी थ । अथ उठ तो वे हचक–हचककर रो पड़ । दो

काका का ा या आ जैसे गऊँझी य हो। कार के लाख मना करते रहने पर भी गाँव के लोग ने आटा, चीनी, घी, दही, तरकारी और कपड़े से भंडार–घर भर दया। गाँव–तो–गाँव, पास–पड़ोस के गाँववाले ा ण भी इस

ा म योते गए। अ य गाँव के खानेवाले ा ण को जामुनवाली परती म

बठाया गया। भोज खानेवाल से परती खचाखच भर गई। ा ण खाते

गए, ह द म रँगी गमछ द णा म लेते गए। सरे गाँव के लोग अचरज करते। अड़ोस–पड़ोस के गाँव म ऐसा ा तो आज तक कसी का नह

आ था।

ब लहारवाल ने 'बीस बगहवा' म क तक ने उ साह से बोई। अचलगढ़ का ठाकुर पकड़ा गया था। उस पर मुक़दमा चला। सजा ई, सदा के लए जेल म ब द कर दया गया।

काका क मौत से उगते ए बरवे— कार और च दन—पर जैसे पाला पड़ गया। गृह थी के काय का सारा ओज, उ साह एकदम ठंडा पड़ गया।

कार और भी अकेलापन अनुभव करने लगा, गृह थी के काम म अनुभव

क सीख और सही राय देनेवाला अब कोई न रहा। काका कुछ नह करते थे, फर भी खंड म बैठे तो रहते थे। आर अकेला नह रहता, माल–गो को सानी–पानी चला देते, बना कहे कार काम से कह भी न त होकर

चला जाता था। काका के बाद वह भीतर से उखड़ गया। मौके–बेमौके

कससे राय पूछे, कस पर गो और खंड छोड़कर जाए बाहर के जस

काम को दोन भाई एक साथ लगकर चुटक बजाकर पूरा कर लेते, उसे अब एक को ही करना पड़ता।

ा के लगभग एक महीने बाद वै जी फर आए। पा से उ ह ने गुंजा के

याह क चचा चलाई।

“ अभी तो काका को मरे महीना–भर आ है, म उनसे कैसे बातचीत क ँ ?”

पा बोली।

“ ले कन गुंजा सयानी हो चली बेट , ज़रा हमारी ओर से भी तो सोचो ”

“ म या क ँ , बाबू? तुम दोन घर के मा लक हो। काका क जब तक बरखी न हो जाएगी, तब तक घर म कोई भी शुभ काम कैसे होगा?”

“ हाँ, ये तो म भी समझता ँ, पा ले कन कल का ठकाना नह । मान लो, कसी कारणवश कार राजी न ए, तब तो मेरे लए यह साल बलकुल

बेकार हो जाएगा। और घर देख नह पाऊँगा, यह घर भी चला जाएगा, फर सयानी बेट क बाढ़…”

“ ऐसा कैसे होगा, बाबू जतनी च ता गुंजा के लए तु ह है, उससे अ धक हमको अपनी गृह थी क है। ब हन अगर देवरानी हो जाए, तो इससे बढ़कर मेरे लए सरा सुख या होगा? च दन हमारा, गुंजा हमारी। साल–भर बाद काका क बरखी हो जाने दो, फर जैसा कहोगे, वैसा ही होगा।” वै जी सुख

क साँस ले चौबेछपरा चले गए। सारी खेती का भार च दन और कार पर पड़ गया। धीरे–धीरे काका क मौत का अवसाद मन से उतरने लगा। चार–पाँच महीने बीत गए। घर क डाँवाँडोल थ त काफ सँभल गई थी। क तु इसी बीच कुछ ऐसा आ क

कार और भी च तत हो उठा।

पा दो–तीन महीन से गभवती हो चुक थी। इस बार उसका वा य गरने

लगा था। गभवती होने के महीने–भर बाद ही उसक देह पीली पड़कर ह के–ह के सूज गई। रामू और गृह थी के काम—दोन को सँभालना बेहद क ठन होने लगा। दो–तीन महीन बाद उसे अकसर बुखार आने लगा। देह एकदम कमज़ोर हो गई।

अ त म वै जी को खबर गई। बेट क यह दशा वै जी ने देखी तो माथा पीट लया। बगल म खड़े ए कार से बोले, “जवार–भर के लोग क दवा म क ँ, मेरी ही बेट क यह हालत इस समय भी मुझे बुलाने क या

ज रत थी? जो मन म आता, करते जाते।”

“ मेरा वश चला होता बैदजी, तो म इनको चौबेछपरा प ँचा आया होता। म बार–बार आपके पास आदमी भेजने को तय करता, पर हर बार ये मना कर देती थ ”

“ घर के मा लक तुम हो, कार अपना भला–बुरा तु ह समझना चा हए। अब बताओ न, म या क ँ ? यह चौबेछपरा जाने लायक नह है। यहाँ दवा–पानी देने म त नक भी गड़बड़ी ई, तो बीमारी वश के बाहर हो जाएगी।”

“ नह , आप ले जाना चाह तो आज म ही असवारी (पालक) ठ क कर ँगा।”

“ फर तुम लोग को यहाँ कौन देखेगा?”

“ जब याह नह आ था, तो कौन देखता था?”

“ तब क बात और थी, कार उस समय केवल भोजन बनाने क ही च ता

थी। अब तु हारा एक पैर चौबेछपरा म रहेगा, फर इस बसी–बसाई खेती–गृह थी का या होगा?”

“ यहाँ रहकर भी तो अब कुछ करने–धरने लायक यह रही नह , बैदजी ”

“ हाँ, पर इसे यह रखो। म रोज़ आऊँगा। रसोई–पानी के लए गुंजा को जाकर च दन ले आए, या म ही कल अपने साथ लेता आऊँगा।” वै जी दवा देकर तथा परहेज़ क बात अ छ तरह समझाकर चौबेछपरा वापस लौट गए, तो कार खाट पर लेट ई पा के सर पर हाथ धरकर

बैठ गया। आँख आशं कत हो कसी गहरी च ता के अतल सागर म डूब ग ।

सरे दन वै जी गुंजा को अपने साथ लेते आए। गुंजा को रसोई–पानी तथा

भीतरी गृह थी के काम को सँभालने म देर न लगी। बाहर, माल–गो तथा खेती के काम म च दन जुट गया। कार का एक पैर भाई को सहारा देने

बाहर रहता, सरा बीमार प नी क देख–रेख म रहता। प ह–बीस दन के बाद पा क हालत कुछ सुधरी। देह क सूजन कम होने लगी। कार ाय: पा के पास बैठा रहता। कुछ अ छ होने लगी तो एक दन पा बोली, “मेरे पास बैठने क या ज रत है? सारा भार च दन पर पड़ा है। अभी वह बाँस क क पल है। यान नह रखोगे तो मुरझा जाएगा।”

“ और तुम?” कार हँसते ए बोला। “ म ” पा भीतर से स हो क तु ऊपर से बनावट वर म बोली, “म मर जाऊँगी तो तुम सरा याह कर लोगे। बीतेगी तो मेरे बेटे पर।”

“ अब या याह…”

“ ऐ प ना ” गुंजा बीच ही म बगड़ पड़ी, “यहाँ बैठके यही सब असगुन भाखना है तो जाओ आर पर, यहाँ य बैठे रहते हो, तु हारा काम या है यहाँ पर? रसोई, दवा–पानी के लए म घर म ँ ही, तुम हर घड़ी घर म य घुसे रहते हो? चलो, जाओ आर पर ” बाहर दँवरी–ओसावन क भीड़, घर म प नी बीमार, दोन क भीड़ म

कार ई क तरह धुन गया। यह तो च दन था, जो बाहर का सारा काम

अकेली देह पर रोके ए था। बाहर च दन, भीतर गुंजा। क तु सब–कुछ

नपट गया। दँवरी–ओसावन होकर, अनाज घर म चला आया, भूसा ख प

और भुस ल म भर दया गया।

कार ने कुछ चैन क साँस ली। जेठ बीत चला। पा क तबीयत काफ़

सुधर गई। देह क सूजन बला गई। पीलापन ब त हद तक र हो गया। वह चलने– फरने लगी। खाना पचने लगा। वै जी ने बेट को बचा लया। उसी समय कसी गाँव से च दन के देखनह आए। कार कह गया था।

च दन खंड म गाय–बैल को खला– पला रहा था। इधर–उधर क बात के बाद, वे काका क मौत क घटना पूछ रहे थे। च दन अनमने भाव से उ र दे रहा था।

“ तो बबुआ, काका का सारा ह सा तो…तु ह लोग को मला होगा?” एक ने पूछा।

च दन बगड़ गया, “आप लोग कस मतलब से आए ह? हमारे घर का भेद पूछनेवाले आप लोग होते कौन ह?” तभी कार आ गया।

कार से लोग ने खुलकर बात क । याह क बात चली। च दन क

कुंडली क नकल माँगी गई।

कार घर आया। पा से बात बताई तो पा बोली, “अभी कह से भी

याह क बात न चलाओ। काका क बरखी हो जाए, तब इसक चचा

उठेगी।”

“ ले कन कुंडली क नकल देने म या हज़ है? देखनह ब त धनी घराने के ह।”

गुंजा ख भे क ओट म खड़ी हो चुपचाप सुनती रही। “ धनी घराने के ह चाहे रजवाड़े के ह अभी कुछ नह होगा जाओ, उनसे कह दो।”

कार वापस लौट गया। कार का बाहर नकलना था क गुंजा धरती पर

बैठकर चारपाई पर बैठ ई पा क गोद म मुँह छपा अनायास ही

ससकने लगी।

गोद म मुँह छपाए बहन क भरी ई आँख, बड़े लार से ऊपर उठा, पा

ने अपने आँचल से प छ द , “यह या रे रोती य है तू? जो चाहती है, वही होगा। च दन ही तेरी माँग भरेगा? रो मत। मेरी ओर देख गौरा, तेरे भोले बाबा ही बरात लेकर आएँगे।” और हँसती ई पा गुनगुनाने लगी। गुंजा का उतरा मुँह खलकर लाल हो गया। तभी च दन आ गया। “ कसके याह का गीत गा रही हो, भउजी?”

“ तेरे ”

“ मेरे च दन का याह तो कुंडली म लखा ही नह है।”

“ काहे रे खाएँगे गे ँ नह तो रहगे ऐ ँ ‘ क बनु गौरा रहबो कुँआर हो।’ ” हँसती ई पा ने एक कड़ी गा द ।

“ इस समय तो भूख लगी ई है, उठो न, दोगी कुछ खाने को?” तभी गुंजा ने पीछे से च दन के आगे, छोट -सी ड लया म टटका भुजना और गुड़ रख दया।

धरती पर बैठे ए च दन ने एकाएक ऊपर देखा, तो गुंजा को सर पर झुका पाया। “देख लो, भउजी तुम कहती हो क...” गुंजा ने पीछे से च दन का मुँह दबा दया। च दन चुप लगा गया। “ एक-से-एक बढ़के ह।” पा हँसती ई बोली, “अब छोड़ उसका मुँह।”

क तु च दन ने गुंजा के हाथ म त नक कसकर चकोट काट द । गुंजा

झमककर हाथ झाड़ती ई बोली, “द तेरे कसाई क । त नक भी दया-माया नह ।”

“ पानी लाओ, पानी ”

“ हाथ काटो तुम, पानी लाऊँ म उठ के लोटा माँजो और पानी ले लो।” च दन सचमुच को उठने लगा तो खड़ी ई गुंजा ने बैठे च दन के दोन क धे दबा दए।

पा देखकर हँसती रही। च दन भुजना चबाता रहा। पीछे द वार के सहारे

खड़ी हो गुंजा पूवतया मुसकराती रही।

तीन

पा क बीमारी म सुधार आर भ होते ही कार भी कुबेर क पलानी म

बैठने लगा। थके मन को ताश के प म बड़ी राहत मलती। पीछे के ख

और परेशा नयाँ ब त हद तक मन से बसर गई थ । लू क गम से बचने के

लए, दन–भर पलानी म बक देह का मन भी, एक ही ओर लगा रहा।

मन बहलाने को सरा और साधन ही या था? इस वष लू इतनी चली थी

क जामुनवाली परती क भी तीन–चौथाई ब सूख गई थी।

आषाढ़ लगा। आकाश म मेघ मँडराने लगे तो देह–मन दोन को बड़ा सुख

मला। कार ने सोचा, घर से खंड आने–जाने के लए, सोना से फूटकर नकले ए इस बीच के खरोह म माट का एक पुल बनवा दया जाए, तो

लोग के आने–जाने क सु वधा हो जाए। कुबेर क पलानी म ही उसने

बटोर कया। ब ती के पास इसी का एक खेत पड़ता था, उसम से यह माट

देने को भी राजी हो गया। लोग ने अपने सर पर माट काटकर पुल बनाने क बात तय कर ली।

इस नणय के बाद, गाँव–भर म कार क त ा बढ़ने लगी। सभी लोग यही कहते क एक काका गाँव का मान बढ़ा गए, यह घर क इ जत बढ़ा देगा। गाँव के इस छोटे–से उगते ए घर के त लोग के भीतर

ह क –ह क देख जगने लगी।

माट क खुदाई का काम शु होने ही वाला था क एक दन अचानक पानी बरस गया। काम क गया। लोग भदई बोने क च ता म लग गए। कुबेर क पलानी का अड्डा टूटा। कार अपनी पलानी के आगे बैठकर

च दन के साथ यह नणय कर रहा था क इस वष कतनी भदई बोई जाए।

कधर के खेत म या बोया जाए।

उसी समय घर से इन दोन क बुलाहट ई। घर प ँचा तो देखा, पा

असीम दद से खाट पर मछली क तरह छटपटा रही थी। पेट म लगभग सात महीने का ब चा था, क तु सव का दद आर भ हो गया था। चमाइन बुलाई गई। पड़ोस क औरत जुट ग । लगभग घंटे–भर के बाद पा ने मरा

आ ब चा जना। छटपटाहट तो कम ई, क तु र का नकलना कम होने

क जगह बढ़ता ही गया। देह पीली पड़ने लगी। पहले से ही रोगी बल देह र का अ धक जाना सह न सक । देखते–देखते पा न ाण हो गई। घर के बाहर ओसारे म बैठे ए कार और च दन को

बुलाया गया। भीतर

प ँचते ही कार को च कर आ गया। गुंजा और च दन क ची कार से

लगा क घर भहरा पड़ेगा।

होश आया, तो माट के बुत क भाँ त पा के शव को कार एकटक

नहारता ही रह गया। धड़ तक ढँक ई मृत प नी, बगल म ढँका आ

नवजात मरा ब चा और अलग–अलग चार ओर, धरती पर बहकर जमा

आ लाल–काला र

कार क आँख के आगे अ धकार छा गया। च दन ने भाई को अँकवारी

म भरकर बाहर नकाला। सवेरे से झाँझ तक टकनेवाला मेला, दोपहर को ही उठ गया। कार को लगा, कसी ने अधकचरी न द म ही थ पड़ मारकर जगा दया। चोट ऐसी गहरी थी क न द टूटने पर भी आँख को कुछ सूझता नह था। आँगन म आकर, घनौची के पासवाले चबूतरे पर, द वार से पीठ टेककर वह बैठ गया। रह–रहकर आँख भर आत , तो उनका भारीपन र करने के लए, क धे के अँगोछे से प छ लेता। च दन रामगढ़ के ब नये क कान से कफ़न खरीद लाया। बँसवारी से बाँस काटकर अथ बनवाई।

मरी भौजाई को नहला–धुला कफ़न पहनवाकर लोग क मदद से लाकर आँगन म अथ पर लटा दया। अथ जब अ छ तरह बँध गई, तो जाकर

कार के सामने वह खड़ा हो गया।

कार ने सूचक से च दन क ओर देखा।

“ उठो क धा लगाने ” च दन ने जैसे आदेश दया।

कार चुपचाप वैसे ही बैठा रहा।

दोन बाँह पकड़ भाई को झटका दे ख चता आ च दन फर बोला, “भइया, उठो ”

“ उठ?” कार ने अजीब–सा कया। “ हाँ, उठो।”

आ ाकारी शशु क तरह कार उठ गया। अथ के पास प ँचा, तो पुरो हत ने पा के मुँह पर से कपड़ा हटा दया। कार, च दन और गुंजा ने प नी, भौजाई और बहन को अ तम बार देखा। गुंजा फफक पड़ी। मुँह ढँक दया गया। अथ मचमचाकर उठ गई। गुंजा के क ण दन को ‘राम नाम स य है’ के वर ने एकबारगी ही दबा

दया। बलखती ई गुंजा क गोद म छोटा–सा रामू, महतारी क उठती ई

अथ को टुकुर–टुकुर ताकता ही रह गया। चार

ा के सबेरे जब वै जी जाने लगे तो कार ने पूछा, “और गुंजा?” “गुंजा

जाएगी तो यहाँ रोट –पानी कौन करेगा?”

“ रोट –पानी के लए गुंजा यहाँ अकेली कब तक रहेगी?” कार बोला। “ अकेली कहाँ है, तुम लोग हो, रामू है, दन–रात संग रहनेवाली बहंसी है।”

“ बहंसी तो है बैदजी ले कन गाँव–नगर या कहेगा?”

“ बेट मेरी है कार, कोई कहेगा कससे? अभी एक महीने रख लो। घर जब सलस त (शा त) हो जाए, तु हारा मन थर हो जाए, तो गुंजा और रामू को च दन के साथ भजवा देना।”

कार चुप लगा गया। वै जी चले गए।

आषाढ़ आधे से अ धक बीत चुका था। चार ओर ह रयाली छा गई थी। वषा मजे क होने लगी थी। क तु कार के घर म मौत क खामोशी और

एक–सी ठहरी ई उदासी छाई रहती। य प गुंजा, रामू तथा बहंसी के कारण घर म मनसायन रहता, रसोई–पानी पहले क तरह ही होती, ले कन

कार दन–भर म केवल दो ही बार, सबेरे और साँझ को, खाने के लए

आता।

आषाढ़ बीतते–बीतते इतना पानी बरसा क सोना उफन पड़ी। वै जी के जाने के ठ क पचीस दन बाद कार ने गुंजा और रामू को चौबेछपरा

प ँचा आने का आदेश च दन को दया। उखड़े, उदास मन को भाई के आदेश ने और भी तोड़ दया। पानी बरस रहा था, क तु भीगते ए ही च दन खंड से घर चला आया। रसोईघर के आगे

पीढ़े पर चुपचाप वैसे ही बैठ गया। गुंजा भीतर रसोई बना रही थी। रामू वह खेल रहा था। च दन को देखकर वह लपका तो गुंजा का यान टूटा, “अरे, यहाँ कब से बैठे हो?”

“ अभी आया ँ।”

“ बोले भी नह ? रसोई कब से तैयार है प ना खा गए, तु हारा पता ही नह ।”

“ हाँ, म ठया चला गया था। देर हो गई।”

“ तो जाओ, नहा–धो आओ तो थाली परसूँ।”

“ जाता ँ, जरा सु ता लूँ।”

गुंजा बगल म खड़ी हो च दन को देखने लगी और च दन सामने के खुले

कवाड़ से बाहर पड़ती ई पानी क फुहार से टप्–टप् चूनेवाली ओ रयानी

के वर पर कान लगाए, न जाने कहाँ खो गया कुछ देर खड़ी रहने के बाद गुंजा बोली, “ या सोच

रहे हो?"

" कुछ नह ।"

" नह , कुछ ज र है, बोलो न " गुंजा ने खड़े-खड़े च दन का हाथ पकड़ते

ए कहा।

" सोचता ँ गुंजा, क भगवान को भी दया नह लगती। काका को गए अभी

दन ही कतने ए, भउजी भी चली ग । इतनी मेहनत से यह घर बसा था, तो अब फर जैसे-का-तैसा होना चाहता है। अब तुम भी चौबेछपरा चली जाओगी, फर तो इस घर म रहना क ठन हो जाएगा "

" म य जाऊँगी?" गुंजा बना सोचे-समझे बोल गई। " जाओगी नह , तो यहाँ अकेली कैसे रहोगी?" गुंजा का मुँह उतर गया। उसने धीरे-धीरे च दन का हाथ छोड़ दया, "अ छा उठो। जाओ, नहा-धो आओ, भूख लगी होगी।"

" अब इस भूख क च ता कौन करेगा, गुंजा " गुंजा ने च दन को एक बार देखा, फर उसके दोन क धे दबाती ई बोली, " नह , अभी बैठे रहो।" और फुरती से एक लोटा पानी लेकर बोली, "चलो, मोरी पर तु हारे पैर धो ँ "

" नह , नह , जब नहाना ही है तो इनार पर धो लूँगा।" इतना कहकर वह चला गया।

थोड़ी देर बाद आहट पाकर वह उठ खड़ी ई। रसोईघर म से थाली परसकर, जब च दन के सामने रखने लगी, तो पीढ़े पर बैठते ए च दन बोला, "अब एक-दो दन और अपने हाथ क रसोई खला लो। भइया ने परस तु ह चौबेछपरा प ँचा आने को कहा है।" गुंजा कुछ नह बोली, एक पीढ़ा ख चकर पास म बैठकर च दन पर पंखा झलने लगी।

जब वह आधा खा चुका तो बोली, "रसोई कौन बनाएगा?"

" म बनाऊँगा।" च दन कुछ रोब म बोला। ह का-सा मुँह बचकाकर गुंजा बोली, " - ँ ँ जस आदमी को अपने खाने क सु ध नह रहती, वह सरे को रसोई बनाकर खलाएगा?" रामू बार-बार च दन क थाली म हाथ डाल देता था। च दन बार-बार मना कर रहा था। एक बार गुंजा बगड़ गई, " य रोकते हो इसको, तु हारे लड़के-ब चे नह ह गे या?"

" मेरे... " मुसकराते ए च दन ने गुंजा क ओर देखा। गुंजा के गोरे चहेरे पर ला लमा क एक लहर दौड़ गई। च दन वैसे ही ताकता रहा।

" बक् ताकते या हो, खाओ न " गुंजा ने सरी ओर मुँह फेर लया। च दन खाने लगा। गुंजा पंखा झलने लगी।

खाकर उठा तो पानी तेज़ पड़ने लगा था। आँगन म खुलनेवाले दरवाज़े के पास खाट ख चकर च दन लेट गया। आसमान का अ धकार बढ़ता गया, बादल मकान के मुँडेर को छूने लगे, पानी क धार तरछ होकर छरछराहट के साथ बरसने लगी। गुंजा ज द से खाकर च दन के सरहाने धरती पर बैठ गई। दोन पानी का बरसना देखते रहे। पानी का गरना और तेज़ होता गया। आँगन क ओ रयानी, दो-दो गज क री पर आगे क ओर धार फकने लगी। बाहर बादल क गड़गड़ाहट म

बजली चमक तो गुंजा ने च दन को ज़ोर से पकड़ लया। चार ओर जैसे

अँधेरा छा गया। पानी क उस अनवरत मार ने सब कुछ ढँक दया, अपने म समा हत कर लया। फर न जाने, च दन को कब न द आ गई। न द खुली तो देह म बड़ी श थलता आ गई थी। पानी अब भी वैसे बरस रहा था, क तु गुंजा ओसारे के प के चबूतरे पर बैठकर बतन माँज रही थी।

उसके तीसरे दन गुंजा को वदा करने क तैयारी होने लगी। ह ते–भर का आटा पीसकर, चावल–दाल बीनकर, गुंजा ने भंडारघर म अ छ तरह रख, च दन को दखाकर समझा दया। घर क तमाम इधर–उधर क बखरी चीज़ तरतीब से लगाकर रख द ।

गुंजा काम करती जाती और रह–रहकर आँख क कोर भर आत । च दन चौके के ख भे पर पीठ टेके, उदास, व त होकर चुपचाप बैठा रहा। रामू के और अपने कपड़े थैले म रखकर गुंजा बोली, “अब चलो।”

“ पैर नह रँगोगी?”

“ नह ।”

च दन गुंजा का मुँह ताकने लगा।

“ नह , पैर म नह रँगूँगी। कौन खुशी का मौक़ा है, जो पैर रँग लूँ” च दन चुप लगा गया।

“ तो चलो नकलो।” गुंजा बोली।

“ नह , भइया आ रहे ह गे। घर ब द करके चाभी कसको ँगा?” तब गुंजा को घर के खाली होने का सहसा ान हो आया। फर आँसु क

धार उमड़ी, गले म हचक बँधी, गुंजा ससक– ससककर रोने लगी।

कार आ गया, “यह या? बात या है, गुंजा? घर तो अपने–आप ही उदास

है, तुम और भी उदासी भर के जाओगी चलो, नह तो बरखा–बूँद का दन, कौन ठकाना, पानी कब बरसने लगे ”

कार ने रामू को तीर तक प ँचाने के लए गोद उठाया, तो वह रोने लगा।

लाचार होकर कार को गोद से रामू को उतारना पड़ा। उतरते ही वह

लपककर गुंजा क गोद म चढ़ गया। गुंजा आँचल से आँसू प छ, रामू को गोद म ले, घर से नकल पड़ी। पीछे च दन, उसके पीछे कार ने

नकलकर, नकसार क जंजीर ब द कर खट् से ताला लगा दया।

पाँच

फर वही सोना का जल, वही घर क ड गी, वही च दन, वही गुंजा और वही

दशरथ...इस बार केवल रामू नया था, जो गुंजा क गोद म नाव क अगली फग पर बैठा था। सब सवार हो गए तो कार ने तीर पर खड़े होकर नाव

को धार म ठेल दया। भोर म लगभग छह बजे सोना के शा त जल म चौबेछपरा क ओर नाव बढ़ चली। आकाश के बादल, हवा न होने से, कुछ थमे ए थे। पानी कभी भी बरस सकता था, क तु दशरथ इ मीनान से ल गी मार रहा था। नाव के चार ओर एक अजीब–सी शा त और भारीपन फैला आ था। गुंजा दशरथ क आँख बचा, रह–रहकर च दन को देख रही थी और च दन अपलक जैसे सोना के गहरे जल म डूब गया था।

खरोह म नाव प ँची तो दशरथ ने चु पी तोड़ी, “च दन ”

“ या है?”

“ इस ल छन से तो हमसे नाव नह सरकेगी।”

“ तो या कहता है?”

“ कुछ बोलो–ब तयाओ, हमसे नह , गुंजा बबुनी से ही सही। कुछ मनसायन करो, यार या मौनी बाबा क तरह देह साध के बैठ गए और गुंजा बबुनी, तुम तुमको तो देखके लगता है क डूबनेवाले को और डुबा दोगी। तुम दोन को या हो गया है?”

गुंजा का मुँह और भी उदास हो आया। चुपचाप मश: पीछे छूटते ए ब लहार को वह नहारती रही। खरोह के कनारेवाली बँसवारी छूट , सु र राउत का घर छूटा, कोने के तवारीजी का पकवा मकान छूटा, गाँव के कोने पर सोना के जल म लटका आ तीर पर का बौना बबूल छूटा और सबसे अ त म तूफानी बाबावाला पीपल का पेड़ भी छूट गया, जहाँ बहना के साथ तीज के दन वह पूजा करने आई थी।

नाव ब लहार का सवान पार कर गई। खुलाव म आए तो नाव पर क उदासी और भी फैल गई। दशरथ से रहा न गया तो उसने अलाप ली : कछु दन खेले पवनी हम नइहरवा, सइयाँ, माँगेला गवनवाँ, बाला जोरी से नाह मोरा लू र ढंग, नाही मोरा गहनवाँ बाला जोरी से...

नाव बढ़ती गई। मौसम इतना सुहावना था क थकन आई ही नह । क तु आधी र आने के बाद, च दन ने वयं ही जाकर दशरथ से ल गी ले ली। न चाहते ए भी दशरथ को ल गी देनी ही पड़ी। बीच का गाँव पार करते ही सोना कुछ पतली हो गई थी। धार तेज़ थी, इस लए आगे बढ़ने म बड़ी आसानी थी।

देखते–देखते द पास ी आ गई। च दन ने काटकर नाव कनारे लगा द । गुंजा अचरज से देखने लगी।

“ यह या ?”

“ थोड़ी देर को उतरो।” पहले वयं ही कूदकर च दन ने नाव को तीर से अ छ तरह सटा दया। रामू को अपनी गोद म लेकर, गुंजा को उतरने म एक हाथ का सहारा देते ए च दन बोला, “चलो, द पास ी को गोड़ लाग ल।” गुंजा का चेहरा खुशी से खल उठा।

दशरथ नाव पर बैठे–बैठे मुसकराता रहा। द पास ी के चौरा के पास जा, च दन–गुंजा दोन सर

टेककर लौटे तो दशरथ वैसे ही मुसकराता रहा, नाव पर चढ़ने लगे तो बोला, “रो गया को भावे, सो बैदा फुरमावे ”

लाज के मारे सरी ओर मुँह करके गुंजा बैठ गई। नाव चली तो दशरथ ल गी मारते ए बोला, “हे द पास ी, एक चुनरी हमरी ओर से। च दन पं डत, अहीर के बेटे का बरदान लो, पूजै मनोकामना तोहारी।” और ह:– ह: करता आ वह ल गी मारने लगा। चौबेछपरा प ँचे, तो गुंजा क महतारी ने अपने दन से घर सर पर उठा

लया। बड़ी क ठनाई से चुप ई।

खा–पी लेने के एक घंटे बाद ही च दन ने वापस जाने क माँग कर द । “ रामू, चल ” च दन ने भतीजे को बुलाया। रामू गुंजा क गोद से चपट गया।

दरशथ आगे बढ़ गया था। च दन गुंजा क महतारी के पैर छू चलने लगा, तो

नकसार के पास गुंजा बोली, “च दन फर कब आओगे?”

“ आना–जाना मेरे बस का नह , गुंजा ”

“ य ?”

“ भइया जब भेजगे तो आऊँगा।”

“ रामू को देखने के लए?”

“ हाँ, ये बहाना तो अ छा है। इसके आगे तो भइया भी कुछ नह बोलगे ”

च दन ं य से गुंजा क ओर ताकने लगा। गुंजा च दन से आँख न मला सक । उसने आँचल से अपना पूरा मुँह ढँक

लया।

च दन बाहर नकल गया। गुंजा वह खड़ी हो, धीरे–धीरे उसका ओझल होना देखती रही।

छह

कार और च दन फर वैसे ही हो गए, जैसे काका के प रवार म मलने से

पहले रहते थे। पहले का जीवन इससे कह अ छा था। बूढ़ बेवा फूआ भोजन बना देती थी। दोन भाई मल–जुलकर, खेती से कुछ पैदा कर लेते, कुछ खेत क ब दोब ती से मालगुजारी आ जाती। ज़ दगी न त अ हड़पन से भरी ई थी। सुख– ख देखा न था, इस लए मन म कभी उतार–चढ़ाव आया ही नह । क तु अब कुछ वष तक पा रवा रक जीवन म रहकर उससे अलग हो जाने के बाद देह–मन, दोन म ह क –सी था होने

लगी।

गुंजा चौबेछपरा चली गई तो च दन ाकुल हो उठा। च दन का मन खेती के काम से उचट गया।

कभी कुबेर क पलानी म, कभी जामुनवाली परती म, कभी प छम क बारी, कभी म ठया पर मँडराने लगा। अ धक मन उचटता तो करइल माट के ब से भरी गुलगुली खेत क मेड़ पर, या हरी ब से ढँक ई क ची छव र पर, अकेले ही वह र तक टहलने नकल जाता। कभी-कभी तो माल-गो भी सँझवत तक चरन म बाँधे न जाते। भटकता

आ च दन सोचता—भइया ह गे, भूसा-पानी डाल दगे। कार च दन क

आस म रह जाता।

खेती खराब होने लगी। पछली क तक ने जहाँ चार सौ मन के लए कार

घंटे-भर को चौबे छपरा गया था। गुंजा ने रामू को गोद म से कार को

देना चाहा तो वह रोने लगा, कार को तो वह पहचान भी न सका। सास ने दामाद से घर का हाल-चाल पूछा, “आगे कैसे चलेगा?”

“ आगे क बात हम या बतावे ”

“ आ खर घर-गृह थी तो बसानी ही पड़ेगी।”

“ हाँ, सोचता ँ इस वष च दन का याह कर ँ।”

“ और तुम?”

“ म अब याह करके या क ँ गा? वंश के नाम पर रामू है ही। च दन क ब आ जाएगी, रोट -पानी का सहारा हो जाएगा। और चा हए ही या?” अ धक बातचीत करने क उसक इ छा भी न थी। दामाद का उखड़ा मन देख सास आगे न बोल पाई। कार ब लहार लौट आया। सात

गुंजा ब लहार से लौट तो उस पर नया रंग छा गया। हँसमुख-अ हड़ गुंजा धीर ग भीर हो गई। घर से ब त कम नकलती, नकलती भी तो अपनी एकमा सखी फुलेसरी के पास, नह तो घर के काम म ायः लगी रहती। तन-मन का देवता च दन, हर समय आगे-पीछे लगा रहता। तड़के नहा-धोकर, आँगन क तुलसीजी को जल चढ़ा, उ ह क छाँह म बैठकर हनुमान चालीसा और एक प ा गुटका रामायण का पाठ करके बड़ी ा से

शीश झुकाती, तब कह गले से पानी क बूँद उतरत । वै जी के नान से पहले ही घर म धूप क गमक फैल जाती। गुंजा म एक लगन समा गई। च दन के साथ दशरथ था, गुंजा के साथ फुलेसरी थी। ब लहार से पहली बार लौट थी तो गुंजा के मन म सारी बात, धीरे-धीरे पक रही थ । सरी बार लौट , तो उ ह मन म दबाए रखना अस भव हो गया। उसके बदले

वभाव को दो-चार दन तक फुलेसरी ताड़ती रही, फर उसने गुंजा को

खोदना शु कर दया। भेद खुल गया, तब से फुलेसरी और गुंजा एक हो ग ।

वै जी को खला- पलाकर गुंजा थोड़ी देर के लए रोज़ क तरह फुलेसरी के घर चली आई। रामू सोकर उठा तो रोने लगा। उसक आदत पड़ गई थी

क दन म सोकर उठते ही य द ध न मला, तो छ रयाने लगता था। एक

बार छ रयाने लगा, तो फर उसे मना सकना केवल गुंजा के वश क बात थी। वै जी क प नी आकर बगड़ने लग , "तू यहाँ बैठ है, रामू छ रया गया है, चल "

" गुंजा का याह हो जाएगा तो रामू को कौन मनाएगा, चाची?" फुलेसरी क माँ बोली।

" यही बात तो मेरी जान खाया करती है रे "

" तो य नह उसी घर म गुंजा को भी डाल देत ? देखा–सुना घर है। एक पंथ दो काज।" फुलेसरी क माँ ने कहा। " थोड़ी सी हचक लगती है फुलेसरी क महतारी, उस घर म गुंजा को डालते

ए। एक बेट मर गई, स तान के नाम पर ले-देकर गुंजा बची है, यह गई

तो घाव नह मटेगा।"

" मरने–जीने क बात छोड़ो। मरना तो सबको है, जब तक जो जीता है अपने भाग से जीता है, च दन जैसा सु दर वर नह पाओगी, गुंजा क महतारी अगर याह नह करना है, तो मुझसे मुँह खोलकर नाही कर दो, म फुलेसरी के लए उसके बाप को भेजूँ?"

" या?" थोड़ा अचरज से गुंजा क महतारी बोली। " हाँ, अब आपस क बात है, इस लए पहले पूछ लया क हमम–तुमम बीच न पड़े। वै जी से पूछके हम दो–चार दन म बता दो।" गोल–मटोल–सा उ र दे वै जी क प नी वापस लौट आ । क तु उनके कान खड़े हो गए, इधर–उधर क तमाम बात वह सोचने लग । जेठ म एक दन वै जी ब लहार प ँच ही गए। पलानी म कार और

च दन बैठकर कसी खेत का ब दोब त करने क सलाह कर रहे थे। थोड़ी देर सु ताने के बाद वै जी ने याह क चचा उठाई। कार ने फर च दन

का याह कर लेने को कहकर टाल दया। " देखो कार, मने नया देखी है। च दन क ी, च दन क होगी। रोट –पानी के अलावा इस देह को जो सुख प नी से मलना चा हए, उसक ज रत चालीस साल के बाद पड़ती है। तु हारी अभी अव था ही या ई? ले–देकर, स ाईस–अट्ठाईस क । इस ज दगी को कैसे सँभालोगे?"

" सो तो कट जाएगी वै जी; एक रामू है, उसको च दन और उसक ब सँभाल लगे। मायभा (सौतेली माँ) लाकर रामू को ख म या डालूँ? च दन से क हए क वह अपना याह करने पर राज़ी हो जाए।" ख भे क टेक दे सरी चारपाई पर बैठे ए च दन क ओर वै जी देखकर बोले, " य च दन?"

" बैदजी, बड़े भाई के रहते छोटे भाई का याह कैसे होगा? दे खए न, इसी गाँव म पतालीस वष के पत बर म ह, पढ़े– लखे, बी ए पास, बहार म कह हेडमा टर ह। देखा ही होगा, सर के बाल एकदम सफेद, कमर समलवाई से झुक गई है, जब कोई पूछनेवाला न आया, तो लड़क खरीदकर

याह कया है। या ज़ रत थी उनको याह करने क ? दो–दो याही ई

सयानी लड़ कयाँ थ , घर था, भतीजे थे, ले कन नह , याह करना ही पड़ा।

पयरी प हन, माथे पर आल अँगोछ लेकर चले, तो जैसे अँगोछ बरा (चढ़ा) रही थी। तब भइया के याह म या हज है। एक–से–एक लोग आते ह, इनके मुँह खोलने क देर है। हाँ तो कर, फर कल से आर पर लोग क जुटान दे खए। और जब तक यह याह नह करगे, म तो कर ही नह सकता, घर उजड़ा है तो उजड़े। गाँव हम दोषी नह ठहराएगा।" एक साँस म च दन न जाने कैसे यह सब बोल

गया। च दन क बात कार आँख नीची करके

चुपचाप अपराधी क तरह सुनता रहा।

“ बोलो कार, अब या कहते हो?”

कार चुप रहा।

“ चु पी मत साधो, ब त से लोग मेरे पास सफ़ा रश को दौड़ते ह क कार

को राज़ी क ँ । अगर तुम हाँ कर दो तो म कोई अ छा-सा स ब ध तय कर

ँ ?”

“ अ छ बात है...जैसी आपक राय ” कार ने हारकर अपनी वीकृ त दे द ।

च दन क देह म खुशी क एक लहर दौड़ गई। “ तो इस बारे म मेरी एक राय है, अगर कहो तो क ँ?” वै जी बोले। “ क हए ”

“ रामू का मुँह देखते ए सोचता ँ क तुम अपना याह गुंजा से कर लो।

कसी और घर क लड़क आएगी तो शायद चल न सके। मायभा (सौतेली

माँ) मायभा ही है। रामू गुंजा से हला- मला भी है। गुंजा ने इस घर को देखा-सुना है, तुम सब एक- सरे को जानते भी हो। घर क लड़क घर म ही रह जाएगी।”

गुंजा से याह क बात कार ने कभी न सोची थी। वह चुप लगाकर कुछ

सोचने लगा, तो वै जी फर बोले, “बूढ़े बाप क यह आ खरी बात मान लो। देह थक जाती है, अब अ धक घूमा- फरा नह जाता। बड़े धम-संकट म पड़ा ँ, जीते-जी य द वह भार उतर गया तो सुख से मर सकूँगा।” द नता से वै जी ने कार के आगे हाथ फैला दए। च दन क सारी देह ऊपर से नीचे तक झनझना रही थी। वह पालनी म ख भे के सहारे पीठ टेक, फट आँख से वै जी को देख रहा था। देख या, सुन रहा था। वै जी का एक-एक श द उसक छाती पर हथौड़े क तरह बरस रहा था। देह का सारा र दमाग म चढ़ आया था, वह पसीने-पसीने हो गया।

“ बोलो कार ” वै जी ने हाथ जोड़े ए ही पूछा।

कार ने च दन क ओर देखकर पूछा, “च दन, तु हारी या राय है?”

देह का बचा आ र भाई ने पचकारी लगाकर ख च लया। च दन नज व होकर च गर गया। गला सूख गया, जीभ जैसे तालू से सट गई। क तु एक बार देह क सारी श बटोरकर, सर के ऊपर के बाँस को अपने दोन हाथ से पकड़, पैर के अँगूठे से पाट का बाध इधर-उधर करता आ बोला, “ इसम हमसे या पूछना है, जैसा तु हारा मन हो कह तो याह करना ही है।”

उसके बाद वहार-कुशल बूढ़े वै ने प र थ त सँभाल ली, “अब या चाहते हो च दन कोई ब चा नह है, अपना हा न-लाभ समझता है।” और वै जी साथ म लये अपना प ा खोलकर बैठ गए। “ हम कुछ सोचने का मौका द जए, वै जी ” कार बोला। “ अब इसम कुछ सोचना नह है, सोचने क बात

भी या होगी, जो हो गया, सो हो गया।"

च दन टुकुर-टुकुर ताकता ही रह गया और वै जी ने पाँचव दन तलक और तलक के सातव रोज़ याह का दन प ा देखकर तय कर दया। पतली, पीली कमानीवाला च मा, तैल-मैल से काली पड़ गई खोल म रखकर, अपनी तीन-चौथाई गंजी खोपड़ी के कनारे- कनारे चार ओर मेड़ क तरह बचे ए सफ़ेद बाल को दोन हाथ से सहलाते ए बोले, " कसी

कार क तूल, परेशानी करने क आव यकता नह है, कार जैसा देश

वैसा वेश बनाना चा हए। दखावे क लालच म पड़कर, लोग शाद - याह म हजार फूँक देते ह। मेरा गया तो तु हारा, तु हारा गया सो तु हारा है ही। अब तो, यहाँ-वहाँ दोन जगह के तु ह हो। तलक म गने- गनाए पाँच आदमी आएँगे, सो बरात म भी दस-पाँच के साथ आ जाना, समझे " उसके बाद वै जी ने अपनी मजई के ब द बाँधे, क धे पर चादर रखी, चमरौधा जूता पहन, खड़े हो बोले, "बेटा च दन, घोड़ी खोल लाओ, अब म चलूँगा, राह म एक-दो रोगी देखने ह।"

" आज भी रोगी दे खएगा?"

" य ?"

" इतना बड़ा शुभ काय तय करने के बाद रोगी देखना तो बड़ा अशुभ सा लगता है।"

वै जी ठठाकर हँसे, "अभी नादान हो बेटा, रोगी नह देखूँगा तो ार पर तु हारी खा तर कहाँ से क ँ गा? नया का काम कभी कता है? मरना-जीना तो लगा ही रहता है। चलती गाड़ी म लोग चढ़ते-उतरते न रह, तो फर आफत हो जाए, समझे "

च दन चुप लगाकर सामने क बँसवारी म बँधी वै जी क घोड़ी खोल लाया। पास के खूँटे पर पैर रख वै जी घोड़ी पर सवार हो गए। कार ने

बढ़कर उनके पैर छुए, च दन हाथ जोड़कर रह गया। तभी घूमता आ सरी ओर से दशरथ आ गया। वै जी को जाते देखा, तो मुसकराकर च दन से बोला, "बैदजी य आए थे?"

" बआह तय करने "

" बआह तय करने आए थे तो मुँह काहे को लटकाके बैठे हो "

" भइया का बआह तय करने आए थे।"

" भइया का बआह तय करने कससे?" दशरथ अचरज म बोला। " अपनी बेट से।"

" बेट से गुंजा से "

" हाँ रे बैकल हाँ, गुंजा से ही "

" भइया ने या कहा..."

" कहा या , तय हो गया, पाँचव दन तलक, उसके सातव दन याह।"

“ द लगी मत करो च दन, सही बताओ।”

“ यही तो कहते ह क आठ साल तक अहीर बैकल ही रहते ह।”

“ बैकल म नह ँ, तुम हो। चुपचाप बैठकर सुना तो मान लया, एक बार मुँह खोल देते तो या भाई क इ जत उतर जाती। आने दो कार भइया को, म क ँगा, यह एकदम अ याय है। कहो तो दौड़कर राह म ही वै जी को रोक लूँ?”

“ चुप रह, चुप रह दशरथ, च दन क कुंडली म बआह नह लखा है। हो रहा है, सो होने दे। भइया ने खुद नह सोचा, तो तेरे–मेरे कहने क अब ज़ रत नह रही। अपना मुँह ब द कर ले और भइया के बआह म मेरी मदद कर।”

“ हद आदमी हो यार, मरद ब चा होके मुँह सी लेते हो, तो गुंजा बबुनी का कौन ज़ोर चलेगा मेरी बात मानो, एक बार भइया से कहने दो।”

“ नह दशरथ कोई फ़ायदा नह , अब...जो होता है सो होने दो...जब भइया ने नह सोचा तो...” कहते–कहते च दन उदास हो आया। सूनी आँख से सवान क तरफ देखता रहा।

आठ

वै जी चौबेछपरा प ँचे। आँगन म गुंजा बैठकर थाली म दाल रखे बीन रही थी। रामू उसे पकड़कर घुटन के सहारे खड़ा होकर थाली म हाथ डालकर दाल छ टने क को शश कर रहा था। गुंजा बार–बार से बठाकर अलग कर देती, क तु वह मानता ही न था।

वै जी आँगन म खाट पर बैठकर मजई उतार रहे थे। गुंजा क माँ बगल म खड़ी हो कुछ सुनने क ती ा कर रही थी। “ ब लहार से आ रहा ँ।” वै जी ने प नी को मजई पकड़ाते ए कहा। गुंजा जा रही थी क अनायास ही महतारी क बगल म ठठक गई। “ या आ?” वै जी क ी ने पूछा। “ गुंजा का याह तय हो गया। आज के पाँचव दन तलक, उसके सातव दन

याह।”

दरवाजे क राह पवन का एक ह का–सा झ का आया और गुंजा क सारी देह लहरा गया।

“ बाबू, पानी लाऊँ?”

“ हाँ बेट , ला, पहले रगड़ के पैर धो दे।” बड़ी स ता और उमंग से गुंजा फूल क थाली म पानी भरकर बाप के पैर धोने लगी।

“ गुंजा क क मत बड़ी तेज है, इसके लए हाथ लगाओ तो अनहोनी हो जाती है।”

गुंजा का जी आ बाप के पैर गोद म रखकर आँख से छुआ ले। बड़े मन से, मल–मलकर घुटने से नीचे का पैर धो, एक–एक अँगु लयाँ बजाकर अपने आँचल से दोन गीले पैर प छ दए। गुंजा खुशी से उठकर दाल बीनने लगी। “ ब त कम दन का मौका मला।”

“ या करना है, बेचार को कोई रोट –पानी देनेवाला नह है, जतनी ज द सूना घर भर जाए अ छा है।”

“ दान–दहेज के लए कुछ मुँह खोला?” गुंजा क माँ ने पूछा। “ नह जी। कार का वभाव जानती नह हो, अपने याह म कभी मुँह खोला था?”

वै जी उठ गए। गुंजा अपनी स खय से मलने के लए ाकुल हो उठ ।

मन–ही–मन उसने द पास ी को पाँच बार शीश नवाया। रह–रहकर च दन आँख के सामने नाचने लगा। उसक भरी ई, गोरी, दोहरी देह, सहमी ई बड़ी–बड़ी आँख, चौड़े ललाट वाले सर पर मौर पहने सामने आ खड़ी ई। गुंजा घूँघट नकाल उसके बगल म झुक गई। आँगन म मँड़वा छा गया, शहनाई के वर से घर–आँगन गूँजने लगे। गुंजा सुहा गन हो गई। पीढ़े पर बैठ चावल चलाती ई गुंजा झटके से उठ और घर म जा ताक पर के शीशे म अपना मुँह देख आई।

भाई के याह म, च दन तन–मन से जुट गया। चेहरे पर कह कोई शकन, कह कोई उदासी नह । अड़ोस–पड़ोस के गाँव म खुद जाकर घोड़े–हाथी रखनेवाले अ छे–अ छे लोग को बरात करने के लए योता दे आया। रामगढ़ के नूर मयाँ का इ यावन च पवाला बड़ा शा मआना, जो बड़ी–बड़ी बरात म जाता था, यारह गैस और सवा सौ पए का नाच–बाजा भाड़े पर तय कर आया। कार को खबर मली तो उसने पूछा, “ये सब या कर रहे हो, च दन?”

“ कर या रहा ँ, तु हारे याह क तैयारी ”

“ ख़च–वच का ख़याल है?”

“ ख़च–वच क च ता तुम मत करो भइया, तु हारे याह का भार मुझ पर है।”

कार चुप लगा गया।

भतवान या ई, ब लहार म आलू–चीनी का भात गमक उठा। जनसे खान–पान भैवद थी, जनसे नह थी, सबके घर च दन ने खाने का योता भेजा।

कार के खंड से लगभग तीन सौ आदमी, बाजे–गाजे, घोड़े–हाथी और

ऊँट के साथ सजकर बरात म चले, तो लोग देखते ही रहे। बाजे के वर ने ब लहार म एक कोलाहल पैदा कर दया। क ची छव र क धूल उड़ती ई पीछे छूटती गई, बरात अपनी उमंग म चौबेछपरा बढ़ती गई। घंटे–डेढ़ घंटे क राह, देखते–देखते बरात चौबेछपरा के बाहर प ँचकर क गई। लगभग बीस घोड़े, सात हाथी और दस ऊँट से अगवानी करने आए ए लोग और बरा तय के बीच क जगह म, गाँव के बाहर घुड़दौड़ होने लगी।

इतने घोड़े–हाथी तो बरले धनी–मानी लोग क बरात म जुटते ह। पालक म कार था और घूम–घूमकर, दौड़–दौड़कर ब ध करनेवाला च दन था।

पा क भी ऐसी बरात नह आई थी। गाँव के लोग ध य–ध य करने लगे।

गुंजा के भा य क सराहना होने लगी। ारपूजा के बाद मह फ़ल सजी।

यारह, बड़े–बड़े डवाले गैस ने, इ यावन च पवाले त बू के भीतर–बाहर

चकाच ध कर दया। नाच इतना नामी था क जवार के नचदेखवा टूट पड़े थे। चार–पाँच सौ आद मय से शा मआना घर गया।

याह के लए वर क बुलाहट ई। आगे कार, पीछे नाऊ, पं डत और

च दन आए। वही घर, वही दालान, वही आँगन; च दन ही सरा हो गया था। दालान म घुसते ही च दन को जैसे झटका लगा। चलते-चलते उसने पल-भर को आँख मूँद ल । उस पल-भर म ही बजली क धने भर-सा मन का वाह कहाँ-से-कहाँ लौटा लाया। च दन ने अपने को सँभाल लया। आँगन म प ँचा तो मँड़वे म औरत गाने लग — क ह तू त ए बेट , र छवइत , नाह त तनइत आहार हो, क हत तू त ए बेट , सूरज अलो पत सु दर बदन ना कु ह लाई हो

काहे के ए बाबा, र छवइबउ

काहे के तनाइब, ओहार हो, आजु के दने बाबा, तहरे मड़उआ

बहने सु र बर, साथ हो...

याह क एक-एक र म अन झपी आँख से च दन देखता रहा। गुरह थी, पूजा, हवन इ या द के बाद पुरो हत ने कहा क अब वर क या क माँग म

स रदान करे।

परदे क ओट म झुककर बैठ ई गुंजा क ओर जब कार बढ़ा, तो च दन क आँख पथरा ग । याह के बाद भी वह वैसा ही बैठा रहा। पुरो हत और नाऊ ने पूछा क वह बैठेगा या चलेगा, तब उसे अपनी प र थ त का ान आ। झटके से वह उठकर चलने लगा, तो मँड़वे के बाँस से ठोकर लग गई, दा हने पैर के अँगूठे का नाखून नकल गया, पैर से खून बह चला। च दन वह बैठ गया।

पानी से पैर धोया गया, पट्ट बाँधी गई। च दन को कने के लए कहा गया, क तु वह का नह । वैसे ही लँगड़ाते ए शा मयाने म चला आया।

यहाँ प ँचा ही था क पीछे से शहबाले क जगह उसक कोहबर पूजने क बुलाहट ई तो चौबेछपरा के हजाम से मुसकराते ए च दन बोला, “अब म शहबाले लायक ँ, नाऊ ठाकुर?”

नाऊ हँसने लगा, “कोहबर क रसम तो पूरी करनी ही है, बबुआ ”

“ वह तो एक बार कर चुका ँ ठाकुर, भइया क सास से कहना, अब मेरी वहाँ कोई ज़ रत नह है। देखते ही हो, पैर से चला भी नह जाता।” और नाऊ वापस लौट गया।

खंड : 3

एक

गुंजा वदा होकर ब लहार आ गई। ब लहार क पतो , घर क वा मनी बनकर। सूना, उदास घर एक बार फर से भर गया। स ब धय म कार

क एक बूढ़ वधवा फूआ तथा एक और ी आई थ । असवारी जब

दरवाजे लगी, तो कार के साथ गठब धन कए दौरी म डेग डालती ई

गुंजा को गाँव-भर क चर–प र चत लड़ कय ने घेर लया। पहले क सखी गुंजा, अब कसी क भौजाई, कसी क चाची हो गई। दो–तीन दन तक तो कंगन छूटा, कथा ई, भोज-भात आ, घर म रौनक बनी रही। घर क इस चहल–पहल म रामू सबसे अनची हा रहा। वह हर समय गुंजा के पास सटा रहता। औरत कहत , "अ छा आ जो इनका याह इसी घर म हो गया, नह तो इस लड़के को बड़ा ख होता।" ले कन इस घर क चहल–पहल को च दन नह देख पाया। मँड़वे म चोट लगा अँगूठा पक गया था। दवा करते रहने पर भी उसम सूजन हो आई थी। दद बढ़ गया था। खंड से घर आने म लगभग पाँच मनट लगते थे, इतनी देर तक लँगड़ाकर चलना च दन के वश क बात न थी। इस लए वह खंड म ही पड़ा रहता। वह नहाता, घर से खाना आता, वह खा भी लेता।

याह म, योते पर आए ए दो–तीन आदमी ही रह गए थे। बरात लौटे

आज पाँचवाँ दन था। खंड के आगे कुएँ के बीचवाली परती म रात को सबक खाट बछती थ — पहले च दन क , फर तीन र तेदार क , अ त म

कार क । पाँव म आज पीड़ा अ धक होने से च दन बेचैन था। थोड़ी देर

को भी लगातार पाँव एक जगह रख नह पाता था। ठ क से आज खाना भी न हो सका। आधा पेट खाकर वह चारपाई पर लेट गया। कभी बा करवट, कभी दा । आँख लगी, क तु पीड़ा ने सोने न दया। यास के मारे गला सूखा जा रहा था। चारपाई के नीचे, अँगोछे से तोपकर रखा आ लोटे का जल पीने को उठाया, तो एकदम गरम। पीने क ह मत न ई। सोचा, भइया को जगाए क एक लोटा जल कुएँ से ख चकर दे द। आ ख़र म लगी भाई क खाट क ओर ताका तो वह सूनी थी। अगल–बगल के खंड क ओर ताका तो सारे लोग सो रहे थे। धीरे–धीरे झुरनेवाली उस गरम पछुआ ने रात म और भी सूनापन भर दया था। भइया गए कहाँ यास तो सही न जा सक , उठना स भव न था, कुछ देर ती ा करने के बाद वह लोटे का गरम जल गट्–गट् पी गया। गले म कुछ नमी आई, तो न द क खुमारी उतरी। तब सहसा उसे कुछ सूझ गया, जसने पाँव के दद को देह–भर म पसार

दया। देह–मन क उस था म च दन मुँह के बल लेट गया और दोन

हाथ से आँख को कसकर दबाकर उसने सर त कए म गड़ा लया। गरम हवा म धीरे–धीरे ठंडक आने लगी। चत हो च दन ने आँख खोलकर देखा तो भोर हो रही थी, और घर क ओर से कोई खंड क ओर आ रहा था। धुँधलके म पहचाना तो न जा सका, क तु आदमी पास आया तो च दन ने चाल से पहचाना, ये तो भइया ह। और भइया अपनी खाली खाट पर चुपचाप आकर लेटने को बैठे क ख टया का कोई ब द पट् से टूट गया। च दन को सब कुछ समझ म आ गया। जी आ क

पके अँगूठे को चारपाई क पाट पर कसकर पटक दे।

दो

सात-आठ दन के भीतर-भीतर, योते म आए ए सभी ी-पु ष वदा हो गए। गुंजा इस चर-प र चत घर म अकेली हो गई। घर क ब त-सी चीज़ जहाँ जैसे रख गई थी, वैसे ही मल । इस लए काम-धाम शु करने म कोई क ठनाई नह ई। सभी कुछ वैसा ही था, क तु वह वयं ही बदल गई थी। मन क सारी उमंग, सारे उ लास को जैसे पाला मार गया था। घर के काम-काज अपने-आप ही शु हो गए। ब दनी राजकुमारी क तरह गुंजा अपने ही घर म क़ैद कर द गई थी। बुझी-बुझी-सी, एक अजीब-सी

ववशता म वह ज़ दगी क राह पर चल पड़ी।

सुहाग-रात को कार ने पूछा, "घर तो जाना-ची हा है, ले कन उदास य हो?" प त क बगल म चारपाई पर बैठ ई गुंजा एकाएक भरभराकर रो पड़ी। रोकने क ब त को शश के बावजूद आँसू टपटपा ही गए। "मेरा तो

याह करने का मन ही नह था गुंजा, ले कन रामू का मुँह देख बस न

चला...सोचा, तुमसे अ धक रामू के लए उसका अपना कौन होगा? घर तु हारा देखा-सुना था, इस लए और भी म झुक गया। यह भी सोचा, बाद म अगर याह करना ही पड़ा, तो कौन जाने कैसी लड़क मले " गुंजा को जैसे कसी वषैले नाग ने सूँघ लया। वह ऊपर से नीचे तक काँप गई। फूल-सी खली कोमल देह एकदम याह, झाँवर हो गई। देह पसीने से तर हो गई। बैठ -बैठ गुंजा खाट पर ढह गई। कार घबरा गया। मुँह पर

पानी के छ टे दए और खड़े होकर भरपूर श से उसक देह पर हवा

करने लगा।

पाँच-सात मनट के बाद गुंजा ने आँख खोल । मुँह एकदम पीला हो गया था, हथेली एकदम सफ़ेद, जैसे कसी ने सूई लगाकर हाथ का र ख च

लया हो।

कुछ व थ ई तो कार ने पूछा, " या बात है?"

" पता नह , जैसे च कर आ गया।"

" पहले भी कभी ऐसा आ था?"

" हाँ, एक बार चौबेछपरा म आ था, याह के दन, जस समय सगुन उठा था। घर म बैठ थी, तु हारे नाम का जैसे ही सगुन उठा क लगा, मेरी देह म से जैसे कोई कुछ नकालकर भाग चला। आँख के आगे अँधेरा छा गया।

सरी बार आज आ है।"

कार कसी गहरी च ता म डूब गया।

“ च दन का अँगूठा कैसा है?” गुंजा ने पूछा। “ अभी तो वैसा ही है। पक जाने से पीड़ा हो गई है, मने कहा क घर ही चलकर रहो, ले कन वह तैयार नह आ। बोला, ब त असु वधा होगी।” गुंजा चुप लगा गई।

भोर होने से पहले ही कार घर से नकल आया और अपनी चारपाई पर

लेट गया था। बाहर व छ, ठंडी बयार लगी थी, क तु उसे न द नह आई। एक अजीब–सी मान सक बेचैनी होने लगी। करवट घूमकर देखा, तो च दन अपनी खाट पर बैठकर चुपचाप पूरब क ओर ताक रहा था। तीन

च दन का पैर ठ क होने म लगभग दस दन लग गए। क तु इन दस दन म गुंजा के दस कम हो गए। वह छटपटाकर रह गई। कब च दन घर म आए क वह देखे कार के हाथ खाना भेजती तो तड़पकर रह जाती। रामू कुछ–कुछ बोलने लगा था, च दन उससे बात करता—खाने के बारे म, ध के बारे म, सोने के बारे म। रामू एक–एक बात गुंजा से कहता, जब न

कहता तो गुंजा खोद–खोदकर पूछती। सवेरे कार दाना–भूसी लेने गया तो उसने गुंजा को बता दया क आज च दन यह खाना खाने आएगा, तो गुंजा क खुशी का ठकाना न रहा। बड़ी

च से च दन को भानेवाली चीज़ बना । समय से एक घंटा पहले ही

भोजन तैयार कर, लीप–पोतकर पीढ़े रख, प त और देवर के आने क

ती ा करने लगी।

च दन नहा–धोकर कार क ती ा म खंड के आगे नीम के पेड़ तले बैठ

गया। कार कह से लौटा, तो च दन को बैठा देख बोला, “तुम बैठे य हो, रामू के साथ जाकर खा य नह आते? मुझे तो थोड़ी देर लगेगी।”

“ अभी तो मुझे भी भूख नह लगी है, नहा–धो लो तो साथ ही चलगे, रामू मुझसे तो चलेगा भी नह । अँगूठे पर ज़ोर पड़ता है तो खने लगता है।”

कार च दन का मुँह देखने लगा।

“ हाँ, म ठ क कह रहा ँ, मुझे अभी भूख नह लगी है। जाओ, नहा–धो लो।” च दन ने भाई से फर कहा।

कार नहाने–धोने म जुट गया।

कवाड़ बजे, गुंजा बजली क फू त से उठकर झाँकने लगी। आँगन का

आदमी रसोईघर के दालान से ही दखने लगता था। गुंजा ने देखा—आगे बाप के क धे पर रामू, पीछे साध–साधकर पैर रखते ए च दन आ रहा था।

ण–भर को गुंजा देखती ही रह गई।

कार और च दन रसोईघर के आगेवाली दालान म प ँच गए।

प के चबूतरे पर पैर धोने के लए दो लोट म पानी रखकर गुंजा झुककर च दन का अँगूठा देखने लगी। च दन को लगा उसक आँख मुँद जाएँगी। वह द वार का सहारा ले खड़ा हो गया। गुंजा च दन का अँगूठा पकड़कर अ छ तरह देखने लगी।

" अब भी खता है?" गुंजा ने पूछा। " ऐसे नह , दबाने से खता है।" और पैर धोकर वह पासवाले पीढ़े पर बैठ गया।

" अरे, तुम उधर वाले चौड़े पीढ़े पर बैठो, यह तो पतला है, इस पर म बैठूँगा।"

कार ने कहा।

" एक ही बात है, अब तो बैठ गया।" च दन बोला। " बैठ गए तो या, उठो, आराम से बैठकर खाओ।" कार ने च दन क बाँह

पकड़कर उठा दया। ववशता म च दन वह गुंजा के पासवाले पीढ़े पर बैठ गया।

आँख गड़ाए च दन चुपचाप खाने लगा। खाते समय, थाली म कोई चीज़ घटने पर च दन कभी माँगता नह था, गुंजा इसक आदत जानती थी। आज खाते-खाते एकाएक तरकारी क माँग कर बैठा।

" अरे च दन आज या आ? नई बात।" कार ने मुसकराते ए कहा। " कुछ भी नह , आ या?" च दन चुपचाप खाने लगा। गुंजा कार क आँख बचाकर, रह-रहकर च दन को ताक लेती थी, क तु एक बार भी च दन ने सर उठाकर गुंजा क ओर नह देखा। खाया और हाथ धोकर भाई के पीछे-पीछे खंड क ओर नकल गया। दोन के बाहर होते ही, गुंजा ने च दन क जूठ थाली म खाना परसा और खाने लगी। धीरे-धीरे, चबा-चबाकर वाद लेते ए... मन क गंगा अनायास ही बहने लगी, ब लहार, चौबेछपरा, सोना का जल, करइल माट का ताल, सब पट गए।

जब तक अँगूठे का घाव था, च दन न त होकर खाट और खंड तक सी मत था। अब चलने- फरने लायक आ, तो उसके सामने एक सम या आ खड़ी ई। घर जाने पर वह और भी संकोच म पड़ गया, आ ख़र वह गुंजा को अब या कहकर पुकारे भाई कार के साथ म रहता तो रामू के

मा यम से वह गुंजा से कुछ माँग लेता, ले कन अकेले रहने पर... वैसे अकेले आने म वह ाय: कतराता रहता। ब त लाचारी म अकेले आना ही पड़ता, तो ज द -से-ज द वह बाहर भाग जाने क ताक म लगा रहता। गुंजा देखती, समझती, क तु चुपचाप मुँह ब द कए दस-प ह दन तक सहती रही, भीतर-ही-भीतर सुलगती रही, कलपती रही। एक दन कार को कह जाना था, सो उसने कुछ ज द नहा-धोकर भोजन कर लया। बाद म रामू के साथ च दन प ँचा। नकसार का ार तो खुला था, क तु चौके म प ँचने के लए जस घर से होकर जाना पड़ता था, उसका ार जान-बूझकर गुंजा ने ब द कर दया था। आज पहली बार ऐसा

आ था। च दन ठठक गया, रामू से बोला, "पुकार—मौसी " अपनी तोतली

आवाज़ म रामू ने एक-दो बार 'मौसी-मौसी' क आवाज़ लगा , क तु कोई उ र न मला। फर च दन ने जंजीर खटखटाया, उसका भी कोई असर न

आ। हारकर उसने पुकारा, "भउजी "

च दन क बोली समा त ई नह क खड़ाक् से दरवाजा खुल गया, चौखट के बाहर च दन और भीतर खड़ी गुंजा एक– सरे को ताकने लगे। गुंजा च दन को अपराधी क भाँ त देख रही थी, च दन सर झुकाए आगे बढ़ने को राह पाने क ती ा म खड़ा रहा।

गुंजा एकाएक हट गई। च दन आगे बढ़ गया। बा ट म पानी लाई पैर धोने लगा, तो गुंजा लपककर उसका पैर पकड़ धोने को बैठ गई। च दन ने झटके से पैर ख चना चाहा, क तु गुंजा क पकड़ ऐसी थी क पैर छूट न सका। च दन ने झुककर गुंजा के दोन हाथ पकड़े और उससे पैर छुड़ाते ए बोला, “नह –नह , अब पैर न छुओ, अब तुम बड़ी हो गई, भौजाई ”

“ एकाएक इतना बदल जाओगे, च दन भगवान ने तो मारा ही, अब तुम भी चोट करोगे ”

“ जब भगवान ने ही बदल दया, तो उसके आगे हम कहाँ टकगे, भउजी ”

“ सुनो, च दन ” गुंजा आहत होकर बोली, “मेरी एक वनय सुनो ”

“ वनय– सनय नह , जो कहना हो सीधे से कहो ”

“ बना भउजी कहे भी तो काम चल सकता है ” च दन ने कोई उ र नह दया।

गुंजा थाली परसने के लए रसोईघर म चली गई। च दन खाने लगा। गुंजा पास म बैठकर पंखा झलने लगी। रामू खेलते–खेलते च दन क बगल म सो गया था, “इसे हटा के ख टया पर सुला दो।” वह बोला।

गुंजा रामू को खाट पर सुलाकर लौट , तो च दन ने तरकारी माँगी। “ पहले तो खाते समय अपने से कभी कुछ नह माँगते थे, अब या मुझ पर से इतना व ास उठ गया?”

“ नह –नह , ये बात नह है?”

“ तो फर या बात है, एकाएक इतना य बदलते जा रहे हो?” मुँह म डालने के लए हाथ का उठा आ कौर हाथ म ही रह गया। “ पहले क बात है, जब भउजी आई थ , ऐसे ही खाते समय कुछ घट गया, दो–तीन बार माँगा; भउजी कसी काम म बझी थ , सुना ही नह , फर वैसे ही उठ गया। तब से ण कया क अब खाते समय घटने पर कभी कसी से माँगूँगा नह । भउजी ने बाद म जाना तो ब त रो , ले कन सोच लया तो सोच लया। खाते समय तभी से, कभी वे मेरे सामने से हट नह । लड़कपन को या क ँ, उनसे ब त ख सया जाता था। ले कन मेरी वह ज़द बड़ी अशुभ नकली, भउजी चली ग । तुम आ , तो अपने मन के भय से वह

ण मने तु हारे सामने तोड़ दया।”

गुंजा च दन का मुँह ताकने लगी।

फर गुंजा बोली, “तु हारा ब त बड़ा भरोसा था च दन, म सोचती थी क मेरे

नेह–छोह म य द बल होगा तो तु ह पाऊँगी ही। बाबू याह तय कर लौटे तो जी आ तुलसी के चबूतरे को अँकवारी म भर लूँ। च दन, म आसमान म प ँच गई, ले कन सगुन म प ना का नाम सुना तो धरती पर आ गरी। आज सोचती ँ क आदमी का भा य ही बली होता है। हाँ, कभी–कभी, ब त चाह करके भी, मन को बोध नह होता, कोई जवाब नह मलता, च दन म तो परबस थी, ले कन तुम कैसे मान गए?”

“ ज़ दगी म नेह–छोह ही तो सब–कुछ नह होता, गुंजा जस भाई ने बेटे के समान पाला–पोसा, उसके आगे म मुँह खोलकर कहता क भइया, तुम अपना याह कह और करो गुंजा, तुम तो बाद म आई हो, आँख खोली तो पहले भइया को जाना।” चुप लगाकर च दन गुंजा को देखने लगा। घर म एकाएक न त धता भर गई थी। च दन फर कहने लगा, “ले कन कह तो तु हारा याह होना ही था। मान लो, ब लहार न आकर कसी और गाँव चली जाती तो?”

“ तब च दन, जल म खड़े होकर कपड़ा धोनेवाले धोबी-सी, यास से

मरनेवाली यह ग त तो मेरी न होती ”

“ अब तो दन काटने ही ह गुंजा, चाहे म चूका या तुम चूक ग ।”

“ यह तो सगुन म प ना का नाम सुनते ही, कोई तमाचे मारके कह गया। और मने भी सोचा क य द ख ही भोगना है, तो ख देनेवाली आँख के सामने सही... ” गुंजा क सारी पीड़ा आँख म उभर आई, “जीने के लए हजार बहाने होते ह च दन, ले कन मरने के लए...एक भाई धमराज थे, ज ह ने सरे भाइय का ख़याल न करके ौपद को जुए के दाँव पर लगा दया, और एक भाई तुम हो। तु ह तो म धमराज से भी बड़ा मानती ँ।” फर एक ल बी साँस ख चकर गुंजा बोली, “और यह बात तो भूलना ही

पड़ेगा, कल को तु हारा याह होगा, ब आएगी, घर–गृह थी म समा जाओगे, फर कौन कसको याद आएगा?...”

चार

वारी गुंजा के सपने देखनेवाला च दन कुछ और था, याह तय हो जाने के

बाद गुंजा के ब लहार आ जाने तक वह कुछ और हो गया था। गुंजा का

याह कार के साथ तय होते ही, मन क सारी क णा और आँसू एक

साथ ही च दन पी गया। भीतर से आग सुलगती थी, ऊपर से च दन पानी के छ टे मार–मारकर उसे दबाता जाता था, क तु उस आग को दबाने के

यास म उठनेवाला धुआँ देह क रग–रग म भरता गया; च दन भीतर–भीतर

ही झुलसने लगा। भरे ए मुँह क हरन–सी, हरदम मुसकराती ई आँख के नीचे कालापन छाने लगा। शेर क तरह तनी ई छाती भीतर को दब गई। च दन अपराधी क तरह नीची नज़र कए ए ाय: झुककर चलने लगा। आर भ म देह–मन दोन पर त या ई थी, उसने च दन के मन म एक नशा भर दया था। सब कुछ भूलकर, अपने को ऊपर से प थर बना वह भाई के याह म जुट गया था। और अब सारी पीड़ा, सारा ख, घोर मान सक अस तुलन के बावजूद, गरल पए ए शंकर क तरह च दन अपने को नए सरे, नए ढंग से तैयार करने लगा। पैर का घाव अ छा हो जाने पर, अगम अथाह सागर–सा च दन पहली बार जब गुंजा के सामने पड़ा, तो बड़ी मज़बूती से कसा आ धीरज का ब धन एकाएक ही तड़ से टूट गया। गुंजा क आरत आँख ने च दन को दागना आर भ कर दया। गुंजा ने च दन को अपराधी ठहरा दया—जो कुछ आ था सबका ज मेदार च दन ने बना कसी वरोध के अपने को दोषी मान लया और तब से वह भीतर–बाहर और भी छटपटाने लगा, लू के थपेड़ से गाछ क तरह सूखने लगा। भीतर–भीतर ही घुटने लगा। आषाढ़ लग गया था, लोग भदई बोने क

तैयारी करने लगे। बैसाख-जेठ क तपन के बाद ती त आषाढ़ क बूँद च दन के त त मन को त नक भी ठंडक न प ँचा सक । उसने जबद ती अपने को खेती के काम म लगाया। बोवाई के दन खाने-पीने म ऐसे ही देर-सबेर होती है, च दन और भी लापरवाह हो गया। उसक लापरवाही पर कार झुँझलाता, डाँटता, क तु च दन भाई क हर बात, बना कसी उ र या सफाई के सर-माथे पर ओढ़ लेता।

भदई तो कसी तरह बो द गई, क तु इन दो-तीन महीन म च दन के बदले

ए वभाव से कार च तत हो उठा। च दन ने घर म आना-जाना कम

कर दया था। पहले भाई के साथ ही दोन जून खाने क ऐसी आदत थी

क समय पर य द च दन खंड म न रहता, तो कार ती ा करता, कार

न रहता तो च दन क जाता। यह समझौता अजीब-सी क ड़य म गुँथा

आ था। पर अब, इसक एक-एक कड़ी अनायास ही टूट जाती थी। च दन ाय: भोजन के समय खंड म न रहता, कार अकेले खा आता। दन म

दोपहर क बेला ढल जाती, गुंजा च दन क ती ा म बना खाए-पीए बैठ रहती। कार ने गुंजा को कई बार टोका था, क तु गुंजा पर इसका कोई असर नह आ। देर-सबेर, जब च दन के मन म आता, घर चला आता। गुंजा चुपचाप परस देती, च दन बना कुछ बोले, खाकर प छम क बारी

नकल जाता। गुंजा, कार, च दन—तीन -के-तीन , एक ही मार से प त

होकर जैसे भहरा गए थे। घर क खुशी एक अजीब-सी खामोशी धारण करती जा रही थी।

याह के दो-तीन महीन म ही कार, घर क इस बदलती प र थ त से

गहरी च ता म डूबने लगा था। अपना दोष अ छ तरह समझ लेने के बाद भी उसने सोचा था क समय के साथ गुंजा और च दन का मन घर के काम-काज म लग जाएगा, पीछे का सब कुछ भूल- बसर जाएगा, गुंजा से उसे स तोष हो चला था, क तु च दन था, जो बुझती आग म रह-रहकर जैसे घी डाल देता था। गुंजा बुझ-बुझकर सुलग जाती थी। उड़नेवाले रंग से बने च क भाँ त गुंजा का छ जता आ चेहरा और च दन के अबोध, उतरे, नद ष मुँह का भाव देख कार भीतर-ही-भीतर मथकर रह जाता। प रवार

के भ व य क बात सोच-सोचकर वह मन-ही-मन काँप जाता। पाँच

गाँव के प म, आम के बड़े बगीचे म पाँच-सात नेटु के घर थे, उ ह म से एक नेटुए क बेट थी बाला। गोरा रंग, भूरे बाल, देह पर धप्-धप् सफेद साड़ी। गुंजा को गोदना गोदने आई थी। च दन आँगन म बैठकर दाना चबा रहा था, बाला आँगन म चली आई। सर पर क छोट -सी दौरी उतार च दन से थोड़ी र बैठकर उसने पुकारा, “ब रया ” च दन ने पीछे मुड़कर देखा, “कौन है रे?” बाला हँसने लगी, “गाँव के आदमी को भी नह ची हते, बाहर भी जब सर नवाके चलते हो तो ची होगे कैसे?” च दन बाला के मुँह क ओर भटर-भटर ताकता ही रह गया। तभी रामू भीतर से आँगन म आया। च दन ने उससे कहा, “जा, भीतर से मौसी को बुला ला, कोई आया है।”

“ और तुम या कहते हो?” बाला ने उसी भाव से पूछा। “ या कहती है?”

“ कभी सुनना चाहोगे तो सब बता ँगी।” तब तक भीतर से गुंजा नकल आई। उसे देखते ही बोली, “अरे ब रया ये तु हारे देवर ह, एकदम भोले बाबा, गाँव के लोग को भी नह ची हते। तु हारी बड़ी बहन को भी हमने ही गोदना गोदा था।”

“ छोट बहन के लए कहाँ मर गई थी, न जाने कतनी बार कहला के भेजा।”

“ हमारे घर कसी ने भी नह कहा, हम तो दौड़ के आते।”

“ कई बार तो इ ह से कहा।”

“ इनक बात छोड़ो, ब रया ये या कसी को खोजगे इनक राह म अगर

पए क थैली रख दो, तो बीस डग पहले से ही आँख मूँदकर चलगे, आँख

खुलेगी तब, जब थैली पीछे छूट जाएगी, या कोई सरा उठा लेगा।” बाला

खल खलाकर हँस पड़ी। “आओ, बैठो, गोदना गोद ँ” और बाला दौरी म से

सूई और बाँह पर लगानेवाला मसाला नकालने लगी। “ एक कटोरी पानी, सवा पया और सवा सेर आखत लेती आओ ” बाला ने कहा।

“ घर ही उठाके न दे द; ऐसे य नह कहती ” च दन बोला। “ चलो, चलो, तुम या दोगे, तु हारा जब घर होगा तो कहना। अभी भौजाई के हाथ क रोट खाओ।” फर फौरन ही बात बदलकर बोली, “कौन ढेर माँग

लया, साध सो हला क भौजाई, सवा पया माँगा तो बगड़ गए। ब रया

क गोदाई पाँच पए होते ह। तुमसे भी लूँगी।”

“ चल-चल, पहले गोदना गोद, तब पए-पैसे क बात करना।” गुंजा बाला के सामने बैठकर बाँह फैलाती ई बोली।

बाला ने गुंजा क कलाई पकड़ी और एक बार च दन क ओर ताक के बोली, “तो कहो या गो ँ? फूल-प ी बना ँ या म लकार का नाम

लखवाओगी? आजकल तो घर-घर म नाम लखाने का चलन बढ़ रहा है।

मन हो तो देवर से बाँह पर नाम लखवा दो, तो उसी पर गोद ँ।”

“ नह -नह , हम नाम-फाम नह लखवाना है। एक छोटा-सा फूल काढ़के सगुन कर दे।”

“ बस तो जाओ, कहो देवर से, क थोड़ी देर को बाँह थाम ल।” बाला ने कहा तो गुंजा ने च दन क ओर ताका। “ नह -नह , ये सब मुझसे न होगा, तुम लोग आपस म कर लो।”

“ चलो-चलो,” बाला बोली, “अब कोई हरज नह है, इसी सुभाव से तो यह ग त ई, इतना लजक कर बनोगे, तो नया म कोई भी नह पूछेगा। मुँह म कोई कौर नह डालता, सब वारथ के मीत होते ह ” और बाला उठकर च दन क बाँह पकड़ गुंजा के पास ख च लाई। च दन ताकता ही रह गया।

बाला का त नक भी वरोध कए बना, वह चुपचाप गुंजा के पास, जहाँ बाला ने बठाया, बैठ गया। “ लो, कसके हाथ पकड़े रहना, नह तो सूई इधर-उधर गड़ जाएगी तो बाद म बड़ा दरद होगा।”

च दन ने गुंजा क बाँह पकड़ ली। बाला टप्-टप् सूई से गोदने लगी। पीड़ा बढ़ तो गुंजा ने मुँह फेर लया। कलाई और कुहनी के बीच, गुंजा क गोरी नरम बाँह पर, खून क बूँद उभरने लग । गोदना गुद गया, तो गुंजा ने भीतर से एक ड लया भरकर अनाज ला, बाला क दौरी म डाल दया।

“ यह तो आ आखत, और बाक ?” बाला बोली। “ ले बाक ।” च दन ने जेब से सवा पया नकालकर बाला के हाथ पर रख

दया।

बाला च दन का मुँह ताकने लगी।

“ खुशी से दया है क मन मारके?” बाला बोली। “ चाहे जैसे दया, तूने माँगा, तेरी बात रख द , अब ज द से दौरी उठा और रा ता नाप।”

सर पर दौरी रखती ई बाला ने च दन को कुछ अजीब ढंग से देखा। चलने को मुड़ी तो च दन बोला, “गोदती है गोदना, ले कन साड़ी पहने है बगुला क पाँख जैसी ”

और चलते-चलते बाला बोली, “एक खरीद के प हना देते तो बात क शोभा बढ़ती।” और वह बाहर नकल गई। बाला बाहर तो नकल गई, ले कन च दन के गले म जैसे कम द का एक छोर लपेट गई। बीन के वर पर मोहनेवाले सप के कान म स मोहन का मधुर राग भर गई। मान सक तनाव म जकड़े मन को कुछ ढ ल मली, च दन सुगबुगाया। ऊपर मुँह कर, बयार म र से तैरकर आनेवाली, कसी फूल क यारी ग ध सूँघने का य न करने लगा। छह

और तब से च दन प छम क बारी म अकसर च कर लगाने लगा। जब भी वह इधर आता, बाला कसी-न- कसी बहाने उससे मल ही जाती, राह चलते भी दो-चार बात बोल देती। पहली बार गाँव के लड़क म, उसने च दन से बोलना शु कया।

सावन बीत रहा था। इस साल बाढ़ नह आई, तो गाँव के लोग म अपार खुशी भरी ई थी। जनेरा-जो हरी के खेत सरेह म लहलहा रहे थे। प छम क बारी के ठ क उ र, बगीचे के कोने पर, च दन के कई खेत थे। इनम जो हरी-जनेरा दोन खूब लगते थे। घर के जानवर ह रअरी से अघा जाते। दो-तीन दन से वषा थम गई थी। माल-गो के लए खेत से ह रअरी

काटना आसान हो गया था। लोग अपने-अपने खेत म हँसुआ लेकर जुटे थे।

दोपहर के बाद, लगभग दो घड़ी बेला ढल चुक थी। प छम क बारीवाले

कसी खेत से ह रअरी का एक बड़ा बोझ सर पर लये ए च दन घर क

ओर आ रहा था। बोझ भारी होने से चाल म कुछ तेजी थी जससे डड़ार पर झुके ए दोन ओर के खेत म पोर से भर ऊपर उठ ई फसल के प े, बोझ क रगड़ से फड़फड़ाहट पैदा कर रहे थे। अपने खेत से लगभग तीन खेत नकल आने पर बड़ी-सी खाँची लये बाला ब के टपके बीन रही थी। कसी के डड़ार पर बैठे रहने पर भी बगल से कतराकर नकला जा सकता था, क तु बाला ने अपनी बगल म, ब से भरी ई खाँची रख द

थी। सर पर बोझवाले आदमी के लए खाँची लाँघकर आगे नकल जाना स भव न था। लक चाल म चलते ए च दन ने दस कदम पहले से ही आवाज लगाई, “कौन है रे ”

क तु उस पुकार का कोई असर नह आ। बाला ने घूमकर पीछे क ओर

ताका तक नह । च दन बढ़ते ए आवाज़ लगाता गया। क तु बाला टस–से–मस न ई और पहले क तरह खुरपी से घास छ लती गई। पास प ँचकर च दन क गया, “डड़ार पर ही टपके बीनने थे?”

“ और मलते ही कहाँ ह ”

“ नह मलते तो राह रोक के बैठ जाओगी?”

“ तु हारी राह कौन रोक सकता है मरद ब चा हो, खाँची लाँघ के नकल जाते।”

“ कपार पर बोझा, राह म खाँची लाँघता फ ँ, तब तो हो गया ”

“ तुमसे तो ब तयाते भी डर लगता है ”

“ डर लगता है तो खेत के बीच टपके बीनने य आ गई?”

“ सुनो।” बाला ने धीमे वर म कहा। “ सुनो या , सर पर का बोझा नह देखती ”

“ बस, इतने म ही काँपने लगे भारी लगता है तो दो— आर पर पटक आऊँ।” खड़े होकर उसने च दन के बोझ पर दोन हाथ फैला दए। “ रहने दे, रहने दे ” दाएँ हाथ से च दन ने बाला का दा हना क धा पकड़कर उसे अलग हटाते ए कहा, “हटो, राह छोड़ो?”

“ नह , पहले एक बात बता दो।”

“ या है, ज द पूछ ”

“ सब खेत म मचान गड़ गई, तु हारे खेत म नह गड़ेगी या?”

“ जनेरा का खेत तो इस तरफ एक ही है, एक खेत के लए या मचान गड़े म तो पूरब खेत म अगोरने जाता ँ। पाँच खेत सटे ए ह, एक ही आदमी से काम चल जाता है।”

“ अब तो बाल लगने लग , उधर तो बानर– सयार प ँचते नह , ले कन यहाँ तो स यानास कर देते ह ” फर थोड़ा–सा मुसकराकर बोली, “मचान तो गाड़ दो, म ही रात को अगोर दया क ँ गी।”

“ तुझको तो खुद ही अगोरा जाता है...तू खेत अगोरेगी ” च दन ने मुसकराकर कहा।

बाला कुछ लजाकर बोली, “मचान गाड़ के देख लो।” एक बार बाला क ओर च दन ने भेद–भरी से देखा, फर दा हने पैर से आगे डड़ार पर पड़ी खाँची बगल म सरकाकर आगे नकल गया। थोड़ी देर बाद बाला भी आधी खाँची घास लेकर घर लौट आई। महतारी ने पूछा, “आज कधर नकल गई थी रे?”

“ यह बगल म डड़ार पर तो थे।”

“ बस आधी खाँची ही लाई ”

“ धरती अभी ब त नम है, घास के साथ माट नकलती है।” और खाँची भस के आगे पटककर वह मड़ई म घुस गई। सात

च दन का मन खेती म लगा। बाढ़ न आने से जनेरा के खेत म दोहरी– तहरी बाल लगने लग , तो मन म नए सरे से उ लास भरने लगा। गाँव के चार ओर के जनेरा के खेत, दन म एक बार वह घूमकर देख आता। प छम क बारी वाले खेत क फ़सल अ छ थी। ऊँचे, पु पौध म अ य खेत क अपे ा बाल ल बी लग रही थ । च दन ने कार से इस

खेत म भी मचान गाड़ने क बात चलाई। खेत के मामल म कार पूरी

तरह च दन क बात मानता। कौन खेत बोया जाएगा, कौन परती रहेगा, कस खेत म या बोया जाएगा, यह च दन के मन क बात थी, क तु हर

काम म च दन बड़े भाई क राय ज़ र पूछ लेता। प छम क बारी म मचान गाड़ने के लए भी उसने कार से पूछ लया। मचान गड़ गई। जनेरा के घने खेत के बीच म चौड़े फूस क छाजनवाली ऊँची मचान चढ़ते समय मचर–मचर करती थी। दोन ओर क फूस क ओ रया नय को काफ़ नीचे तक लटका दया था क पानी क बौछार मचान पर सोए ए को भगो न सके।

रात को खा–पीकर च दन उसी मचान पर चढ़ आया। पछुआ धीरे–धीरे ज़ोर पकड़ रही थी। आसमान म काले बादल का बोझ सरेह पर झुकता जा रहा था, डेढ़–डेढ़ पोर से ऊँची, जनेरा–जो हरी क तनी

ई फसल को, भाद क उस घनी अँ धयारी रात म, पछुआँ झकझोरने लगी।

रात के सूनेपन को भेदनेवाली पौध क सरसराहट बढ़ने लगी तो च दन

सरहाने क चादर ओढ़कर बैठ गया। देह म बड़ी बेचैनी–सी थी। तेज़ हवा

के झ के रह–रहकर मचान को हला देते, तो लगती ई न द उचट जाती। च दन ज़ोर–ज़ोर से सयार को लकाने लगा। रात का सूनापन बढ़ता जा रहा था। एक ओर दो–तीन बीघे पर ल बी–चौड़ी प छम क बारी, सरी

ओर बीस–प चीस बीघे पर नद । पलानी म से पासवाली म ठया क लालटेन क रोशनी साफ़ दखाई देती थी। मौनी बाबा नयम से रात को यारह बजे सोते थे। च दन थोड़ी देर तक सयार और जानवर को लकारता रहा, मन

आ क सरे खेत के मचान पर सोए, रामरतन को आवाज़ दे। ले कन वह

चार–पाँच खेत के बाद था, फर पछुआ क सरसराहट म सुनाई ही कहाँ पड़ता था थोड़ी देर बाद च दन ने फर एक बार म ठया क ओर ताका, तो मौनी बाबा क लालटेन बुझ गई थी। वह मचान पर लुढ़क गया, चादर को पैर और सर के नीचे अ छ तरह दबाकर ओढ़ लया। जनेरा के प पर

टपटपाहट होने लगी, तो समझ लया क पानी शु हो गया। सोए–सोए मचान के बाहर हाथ नकाला, तो पानी क बड़ी–बड़ी बूँद से हथेली म जैसे चोट लगने लगी।

एकाएक मचान मचमचाने लगी। च दन अ धकार म ही नीचे देखने क को शश करने लगा। दखाई तो कुछ नह पड़ा, ले कन मचान का हलना बढ़ता गया, "कौन है?" च दन ने कड़े वर म पूछा। कह कोई आहट न

मली। च दन करवट लेकर लेट गया।

बूँद के टपके ब द होकर पानी क बौछार शु हो गई। मचान फर हलने लगी। करवट लेटे-लेटे च दन ने ही झुककर देखा। सफ़ेद साड़ी पहने कोई औरत मचान पर चढ़ रही थी। च दन पल-भर को काँपकर बोला, "कौन है रे?"

" बाप रे बाप, एकदम सु हो या कब से मचान हला रही ँ, ये नह होता

क त नक नीचे उतर के देखते। यही खेत अगोरने चले हो " कहती ई बाला

ऊपर चढ़ आई।

" अरे, तुम यहाँ या करने आई हो?" पानी और तेज़ हो गया। बगल से पानी क बौछार भीतर आने लगी तो बाला च दन के पास और सरक गई। भीतर से, दोन कनारे म बँधे ए टाट के पद को च दन ने गरा दया, तब पानी से थोड़ा बचाव आ। " आठ दन पहले कहा था, मचान आज गड़ी है।" बाला ने पूछा। " भाद क इस आधी रात क अ हारी-बारी म कैसे नकली रे, तुझे डर नह लगा?"

" हमको डर-फर नह लगता।"

" और घर के लोग?"

" बाबू तीन दन के लए कह काम से गए ह। माई क नाक बज रही थी।"

" अगर जाग गई तो?"

" जाग भी जाएगी तो या करेगी? वह तो कह रही थी क म तुमसे ब त न बोला क ँ, गाँव म बदनामी हो जाएगी। मने कहा, हो जाएगी तो हो जाए।

जससे मेरा मन मानता है, बोलूँगी। बदनामी का डर है तो मेरी शाद कर दे, तेरी आँख क ओट हो जाऊँगी।"

एकाएक बड़े ज़ोर से बजली चमक । बजली क क ध के ह के-से काश म दोन ने एक सरे को देखा। फर इतने ज़ोर क कड़क ई क डर से बाला ने च दन को कसकर पकड़ लया। गरज के साथ पानी क बौछार तेज़ होने लग , मूसलाधार जल म इतनी तेज़ी आई क बात करना क ठन हो गया। हवा तो थम गई, क तु पानी क तेज़ बौछार से जनेरा-जो हरी के खेत, बगल का बगीचा, एकदम से ढँक गई। न जाने रात कतनी पहला पु तकालय सं करण

राजकमल काशन ाइवेट ल मटेड ारा

1965 म का शत

राजकमल पेपरबै स म

पहला सं करण : 1986

चौथा सं करण : 2015

राजकमल पेपरबै स : उ कृ सा ह य के जनसुलभ सं करण

राजकमल काशन ा. ल.

1– बी, नेताजी सुभाष माग, द रयागंज

नई द ली–110 002

 ारा का शत

शाखाएँ : अशोक राजपथ, साइंस कॉलेज के सामने, पटना–800 006

पहली मं जल, दरबारी ब डंग, महा मा गांधी माग, इलाहाबाद–211 001

36 ए, शे स पयर सरणी , कोलकाता–700 017

वेबसाइट : www.rajkamalprakashan.com ई–मेल : info@rajkamalprakashan.com KOHBAR KI SHART

Novel by Keshav Prasad Mishra ISBN : 978-81-267-1422-3ले उठकर अपने–अपने घर चले गए थे। न द खुली तो मौसम कुछ–कुछ साफ हो गया था। पानी के उमड़े ए बादल तो नह थे, ले कन ह क –ह क झ सी पड़ रही थी। मचान पर बैठे–बैठे ही उसने चार ओर सरेह म नज़र दौड़ाई, जो हरी–जनेरा और अरहर के पौधे, रात के पानी क मार से जैसे प त होकर झुक गए थे। क़रीब–क़रीब सभी खेत म पानी भर गया था। नीचे पैर लटकाकर च दन चाँचर पर कुछ देर बैठा रहा। रात क बरसात...मन म सहरन भर देती थी। पोर–पोर ढ ले पड़ गए थे, रग–रग क जकड़ खुल गई थी। क तु देह म सु ती और न द न आने से आँख म कड़वाहट भरी ई थी। जी चाहा, फर लेट जाए, ले कन माल–गो को

नाँद से लगाने क देर हो रही थी। दरी, लाठ और ओढ़नेवाली चादर क धे पर रख, धीरे–धीरे नीचे उतर गया। डड़ार पानी म डूब गए थे। नमल जल म डड़ार के ऊपर उठ ई ब को र दता आ च दन आर क ओर चला। बारी के बीच से, बाला क मड़ई से सटकर राह गई थी। मड़ई के पास प ँचा, तो अनायास ही नगाह घूम गई। बाला नाँद पर लगी भस को कु डाल रही थी। च दन से देखा–देखी ई तो बाला के मुँह पर गुलाबी हँसी

बखर गई। च दन फर आगे बढ़ गया।

च दन आर प ँचा तो कार ने गो को नाँद से लगा दया था। लाठ , दरी रखकर वह भूसी और जूठ ले आने घर चल दया था। घर प ँचते ही गुंजा ने टोक दया, “आज तो देर हो गई, आँख लग गई थी या ?”

“ हाँ।” च दन ने धीमे-से कह दया। “ ब त धीरे से बोल रहे हो। आँख तो चढ़ ई ह। न द नह आई या ? आती भी कैसे? रात का पानी, बाप रे बचे क भीग गए थे?”

“ एकदम सराबोर ” च दन ठठाकर हँस पड़ा, “लाओ, भूसी-दाना दो। हाथ-मुँह धोके अभी आर से पलटता ँ, बड़ी भूख लगी है, कोई ब ढ़या चीज़ बना के रखे रहना।”

दाना-भूसी देती ई गुंजा उसका मुँह नहारती रही। याह के बाद आज पहली बार वह खुलकर बोला था, अपने क तरह आ मीयता दखाकर। च दन ध लेकर लौटा तो जलपान तैयार था। मोटे-मोटे घी म तले ए चार ‘ लट्’ और बड़ी-सी गुड़ क एक भेली फोड़कर थाली म फैलाकर गुंजा ने च दन के आगे सरका द । च दन खाने लगा, गुंजा ने सारा ध औटने के

लए कड़ाही म डाल दया। चार ल ट्टयाँ* खाकर जब कटोरे-भर गरम ध

पेट म उतार गया, तो पीछे के ख भे से पीठ टकाकर च दन बोला, “अब जाके देह म जान आई है।”

“ य , आज या बात है? अब तक बे-जान कैसे हो गए थे?”

“ देह ही तो है, डूबती-उतराती रहती है।” गुंजा के मुँह को यान से देखते ए च दन बोला।

च दन क इस चतवन म गुंजा ने कुछ नयापन पाया, कोई भेद-भरी ।

एक अजीब-से ज ासु भाव से वह च दन को देखती ई बोली, “आज या बात है?”

“ कुछ नह , तुमने पूछा तो वैसे ही कह दया था। ‘सकल पदारथ ए ह जग माह , करमहीन नर पावत नाह ।’ अब मेरी कौन-कौन बात जानोगी? थोड़े

दन म मेरा याह होगा, मेरी औरत आएगी। म पूरा गृह थ बन

जाऊँगा- फर मुझम नया या रह जाएगा, कभी रहा भी नह । जो था, उसका मोल-भाव करनेवाला, हाट उठ जाने के बाद आया...।” और च दन उठकर चला आया। गुंजा वैसे ही मुँह ताकती रह गई। उसके बाद से भाद क येक रात, च दन ने प छम क बारीवाले जनेरा के खेत क मचान पर ही काट ।

आठ

जनेरा क बाल पकने लग , तो रात म सयार और ब दर खेत पर अ धक चोट मारने लगे। रात म अब सोने को कम मलता, अगोरवाई म जागना अ धक पड़ता था। च दन ने बाला को मचान पर रोज़-रोज़ आने से मना

कया, “आ ख़र ऐसे कब तक चलेगा रे?”

“ जब तक चलता है, चलने दो च दन ”

" ले कन कुछ तो लोक–लाज... "

" लोक–लाज तुम अपनी देखो च दन, अपनी च ता मुझको है।"

" म तो जब तक खेत नह कटता, मचान पर आऊँगा ही। ले कन तुझे तो अपने महतारी–बाप का डर..."

" ँअ–ह... " बाला मुँह बचकाकर बोली, "ये मेरा बाप नह है च दन, और न इसको अपनी महतारी ही मानती ँ।"

" या... ?"

" हाँ, इस आदमी क खा तर इस औरत ने मेरे बाप को जहर दे दया था।

इसक कोख से जनम लया, तो बाप के बाद म बेसहारा जाती कहाँ? ब त नह , सात–आठ साल क बात है। फर ऐसे लोग से म ड ँ जो मेरे मन को भाता है, चाहे जैसे हो, पा लेती ँ। नया म कौन कसका होता है सबको अपने–अपने भाग के हसाब से नाचना पड़ता है। आज तीन साल से तुमको देख रही ँ, ले कन तु ह तो गुंजा के अलावा नया म कुछ दखाई ही नह देता था। आ खर या मला तुमको च दन जसक चीज़ थी, उसके पास गई और तुम टुकुर–टुकुर ताकते ही रह गए। ज़ रत से अ धक मुँह ब द रखने से यही होता है।"

" ले कन ऐसे कब तक चलेगा?" च दन ने पूछा। " जब तक चलता है, चलेगा। जब तक तु हारा याह नह होगा, ब लहार म र ँगी। याह कर लगे, तो म भी कसी का हाथ पकड़ कह बस जाऊँगी। माई तो इसी साल के लए कहती थी, ले कन मने कह दया क जब तक म हाँ न क ँ, कह बात मत देना। च कर तो अ छे–अ छे नेटुए के बेटे मारते ह, च दन ले कन पहले जनम का इतना लगाव तु हारे साथ था, तो बाला कहाँ जाती "

चाहकर भी च दन बाला से मलना–जुलना रोक न पाया। य प इस

मलने–जुलने म दोन बेहद सावधानी बरतते, क तु बात कार के कान

तक प ँच ही गई। दो–चार दन तक कार प तयाता रहा। उसके बाद, ब त सोच–समझकर उसने गुंजा के आगे बात चलाई। गुंजा को कोई वशेष अचरज न आ, और न उ र म वह कार से कुछ बोली ही, तो कार बोला, "कुछ कहती नह हो?"

" मेरे कहने न कहने से या होगा? घर के मा लक तुम हो, हा न–लाभ तुम सोचो। जैसे तुम मरद ब चा हो, वैसे ही तो वह भी है।"

" देख–सुनके सोचता ँ क अबक लगन म उसका याह कर देना चा हए।"

" मुझसे पूछते हो, जैसे मेरी कोई वारी ब हन बची है।"

कार मुसकराते ए बोला, "होती भी, तो बना च दन क राय के इस घर

म न ले आते।"

उसी समय बाहर से च दन आ गया। कार ने बात क दशा बदल द ।

गुंजा गे ँ फटकने म लग गई। च दन के बैठते ही कार ने पके ए खेत

के कटवाने क बात छेड़ द , "पहले कधर के खेत कटगे, च दन?"

" पक तो सभी गए ह। प छम क बारी वाले पर बानर– सयार अ धक चोट मारते ह। पहले वही कटवा दया जाए, वैसे तु हारी मज़ ।"

" हमारी मज़ क बात नह है च दन, घर–गृह थी, नीमन–बाउर, कुल–खानदान क इ जत के मा लक तुम हो। जो अ छा समझो करो। जहाँ कोई बात समझ म न आए, हमसे पूछ लया करो। कसी चीज़ क कमी पड़े, बता दया करो। बाहर तुम, भीतर तु हारी भौजाई, म तो बस कहने–भर को ँ।" दो–चार मनट चुप लगाकर कार फर कहने लगा, "एक बात पूछनी थी?"

" हमसे " च दन कुछ अचरज से बोला। " हाँ, कई जगह से लोग बात चला रहे ह। अगर कहो तो कसी अ छे घराने से बातचीत क ँ और फर तु हारी ही राय से अगली लगन म तु हारा याह हो जाए।"

" अपना याह कया था तो हमसे पूछा ही था, हमारे याह के लए भी हमी से पूछोगे?"

" याह तो तु हारा ही होना है। पस द–नापस द तु हारी होनी चा हए।" कार

ने कहा।

" अब मेरी पस द या नापस द क बात नह रही, भइया जहाँ ले चलोगे, चला चलूँगा। याह तो करना ही है, बना याह के कब तक चलेगा " कहकर च दन कार क ओर देखने लगा। गुंजा ने फटकना ब द कर दया था।

च दन क चतवन का सामना कार न कर सका। कार बातचीत के

सल सले म बाला के स ब ध क ओर इशारा करना चाहता था, क तु छोटे

भाई क क णा के आगे वह वयं ही चत हो गया। " जो कुछ हमसे आ, च दन," कार कहने लगा, "अनजाने म आ, यह भी म पूरी तरह नह कह सकता। ले कन या क ँ, जो हो गया सो हो गया। मन म उसी एक बात का ख लये रहोगे, तो आगे के दन कैसे कटगे? तुम दोन मुझसे छोटे हो, ले कन पीछे का भूल– बसारके, य द खुश मन से नह रहोगे, तो मेरे मन क कसक कभी र न होगी। अब भी तु ह हो, मेरे बाद भी तु ह ही सँभालना है। ले कन हमारे या तु हारे कारण, वंश क त ा पर

कोई अँगुली उठावे, यह न तुम सहोगे, न म स ँगा–मयादा बड़ी क ठनाई से

मलती है, जाते तो देर नह लगती।" और कार ने उठते ए कहा, "भौजाई

से भी बात कर लो, उनक आँख म कोई लड़क हो, तो आपस म राय–बात कर लो।"

गुंजा को जैसे आग छू गई।

" ब लहार के लोग डाकू होते ह डाकू " गुंजा च दन क ओर देखती ई बोली।

“ गाजे-बाजे के साथ गए थे भउजी, चोरी से नह गए थे।” च दन हँसने लगा।

कार भी उसी रौ म बाहर नकल गया। कार के नकलने के बाद घर

का वातावरण और भी सरल हो गया। गे ँ फटकना ब द कर गुंजा उसक

मट्ट बीनने लगी। बोने के लए बीज बना रही थी, इस लए अ धकतर

आँख आगे धरती पर फैली ई गे ँ क रा श पर गड़ाए रखनी पड़ती थ । आँगन म बछ ई ट ऊबड़-खाबड़ थ , इस लए हाथ से गे ँ को इधर-उधर करने म सावधानी रखनी पड़ती थी। आगे के ग ले म से दोन हाथ से गे ँ अपने पास ख चती ई गुंजा बोली, “तो आजकल कधर के खेत म सोते हो?”

आज तक कभी गुंजा ने उस ढंग से नह कया था। इससे च दन

थोड़ा-सा सावधान आ और सतक हो, शरारत-भरी आँख से गुंजा क ओर देखते ए बोला, “ या कहा?”

गुंजा च दन क ओर देखती ई बोली, “आजकल कस खेत म सोते हो?”

“ अपने राम के लए कह पलंग-सेज तो है नह , जहाँ मन कया, वह ढरक गए।”

“ तो य नह पलंग-सेज का इ तजाम करते?”

“ इ तजाम तो हो गया है भौजाई, ले कन सेज तो सूली पर लगी है।” गुंजा च दन का मुँह ताकने लगी, “ऐसी सेज क ज द या थी?”

“ ज द तो म जानता ँ। कभी मौका आएगा तो बता ँगा।”

“ बताओ न जा म इतना तेज था क देवर बरसाती नद -नाले म डुबक लगाने लगे।

“ कौन कहे क देवर के लए आसपास गंगाजी बह रही ह ” च दन ं य से

बोला, “वैसे गंगाजी म खड़े ए क यास अगर नद -नाले के जल से ही बुझे तो या कर, कोई यासा ही मर जाए?” गे ँ बीनते ए गुंजा के हाथ एकाएक क गए। वह अजीब-सी चतवन से च दन को देखने लगी। उ र म च दन वैसे ही देखता रहा। अगल-बगल के वातावरण म अनजाने ही जैसे कुछ भरता जा रहा था। “ क तु हमने सोचा था च दन,” गुंजा सामने क बड़ेरी क ओर देखती ई बोली, “देह तो अपने काबू म न रही, ले कन मन तो...”

“ जसक देह चली जाती है उसका मन भी चला जाता है गुंजा, सब कहने क बात ह। जस देह के कारण भाई भाई पर स देह करे, उस देह के पीछे मन को बाँधे रखने से, बाघ-बन क र ा कैसे होगी?” जैसे तपते ए लाल छड़ से कोई दाग दे, गुंजा तल मला उठ , “ या कहा?”

“ एक ही रा ता रह गया था, गुंजा या तो म घर छोड़ के चला जाता, सो तु ह छोड़कर जाना मेरे बस क बात न थी। और नह ...यहाँ रहना था, तो भइया के मन का स देह मटाने के लए, प छम क बारीवाली मचान पर लगातार कुछ दन तक, रात म खेत अगोरने के अलावा और कोई चारा नह था। म चाहता था क भइया इसे जान जाएँ, कम-से-कम तुम पर तो कसी

कार उनके मन म मैल न आवे...मेरे आगे कोई सरा उपाय रह ही नह

गया था, गुंजा ”

“ च दन... ” गुंजा भीतर–ही–भीतर तल मला गई। “ कौन जाने... ” च दन आहत हो बोला, “आगे कभी और या– या भोगना है ले कन तु हारा मुँह देखता ँ तो मुँह से नकलनेवाली बात को कोई हाथ रखके ब द कर देता है। कभी–कभी सोचता ँ क अगर तु हारा याह कसी और गाँव म हो गया होता, तो या होता? हारे–थके याद आती है, तो मन म

फर भी स तोष होता है क भौजाई ही बनके सही, इस घर म आँख के

सामने तो हो ”

चुप लगाकर च दन ने सामने से हटाकर गुंजा क ओर देखा, तो पाया

क उसक आँख क धार बह रही है, आँसू गाल से ढरकक़र आगे के

आँचल पर टप–टप गरते जा रहे ह और गे ँ क बखरी रा श म आँख गड़ाए, तज म, वह कह र देख रही है। “ और तुम चाहती हो क मेरा याह तु हारे गाँव क सखी सरला से हो जाए ” च दन उसी टूट रौ म कहने लगा, “हमारी–तु हारी बात उससे छपी नह ह, कल को वह तु हारी देवरानी बनके आएगी दो दन बाद घर क माल कन बनना चाहेगी, खटपट होगी, बाँट–बखेर का सवाल उठेगा, इस आँगन म बँटवारे क द वार खचेगी, तब न तुम रोक पाओगी, न म। फर या होगा?”

“ तो या मेरे कारण याह नह करोगे?”

“ याह नह क ँगा, तो इस घर म इस तरह कब तक रह पाऊँगा ले कन तु हारे गाँव म नह जवार म ब त–सी लड़ कयाँ ह, कसी भी गाँव म मेरा

याह हो सकता है।”

गुंजा वैसे ही बड़ेरी क ओर ताकने लगी। चुप लगा च दन गुंजा से कुछ सुनने क ती ा करने लगा। दो–तीन मनट तक कोई भी नह बोला, तो च दन ने वयं ही मौन तोड़ा, “कुछ बोलो।”

“ या बोलूँ च दन, म कस लायक ँ जो बोलूँ याह आ था, तो यही सोचके मन को स तोष दया था क कसी मनचाही लड़क को तु ह स प

ँगी, देख–रेख खुद क ँ गी। ले कन जब से बाला वाली बात सुनी है तो मन

म कुछ खौलने–सा लगा है। लगता है, मेरी धरोहर कोई लेके भाग रहा है। च दन, न जाने कैसा लगता है ”

“ अब अ दाज़ लगाओ गुंजा क तु हारा याह जब भइया से आ, तो मुझे कैसे लगा होगा तब से आज तक म कैसे रहता आया ँ और आज थोड़ी भूख– यास लगी तो...”

“ नह –नह , च दन बाला से बोलने को म मना नह करती। मुरदे क देह पर, दो मन न चार मन। यह अपने वारथ क बात थी—ब त आ। मेरे कारण अ धक ख न भोगो। उपदेश देना तो सबको आता है, ले कन कभी–कभी सोचती ँ, तो सब कुछ अपने पर ही आ पड़ता है।”

“ या आ पड़ता है?”

“ यही क ये सब आ ख़र मेरे ही कारण तो आ या हो रहा है। हमारे या तु हारे मन के ताप को तो कोई न देखेगा च दन, ले कन बाला से बोलने-ब तयाने पर सभी अँगुली उठा दगे। कुल क लाज मद-औरत दोन के रखे रहती है। यह सोचती ँ तो मन को बोध नह होता।”

“ तो ठ क है, तु हारे मन को जससे बोध हो, आज से च दन वही करेगा, ले कन एकाएक नह गुंजा, धीरे-धीरे। अब साँझ हो गई, जाता ँ। आर पर ब त काम है। भइया ह , न ह ।” कहता आ च दन बाहर नकल गया। नौ

जनेरा क कटाई ख़ म हो गई। जो हरी और अरहर खेत म ही पकने के

लए छोड़ द गई। जन खेत म केवल जनेरा था, उ ह जोत दया गया।

खूँ टयाँ उखाड़कर, खेत म ‘हाल’ बनने को छोड़ दया गया। कुछ दन ठहरकर सरा जोत और ऊपर से हगाई। ढेल के फूट जाने से खेत क माट चकनी और मुलायम हो गई। क तक के लए खेत तैयार होने लगे। कछार का पानी सोना म उतर गया था। कनारे क धरती सूखकर कुटकुर हो गई थी, जस पर कनारे- कनारे ही चकनी पगडंडी नकल गई। पैदल आने-जाने क राह एकदम खुल गई। प छम क बारी, च दन के छोटे-बड़े सात खेत पड़ते थे। कार क राय न

थी क इनम जनेरा बोया जाए, य क य द बाढ़ आई, तो सारी फ़सल बह जाती है, फर खेत म डाले गए बीज भी डाँड़ पड़ते ह। क तु च दन ने अपनी राय म सबम जनेरा बो दया था। इस वष बाढ़ न आई। जनेरा क दोहरी- तहरी बाल से खेत लद गए। गाँव ऊपर, इस वष च दन के घर जनेरा आया। खेत म ही ढाट्हा के बोझ बाँध-बाँधकर खड़े कर दए गए थे। च दन सरे खेत क जुताई म लगा था। बाढ़ म बहकर आई ई गंगाजी क चकनी मट्ट खेत को बेहद उपजाऊ बना देती थी। बाढ़ के आने से लोग को भदई क फ़सल तो मल जाती थी, ले कन रबी के लए खेती म जी-जान से मेहनत करनी पड़ती थी। ‘हाल’ बनाने के लए, एक-एक खेत को दो-दो, तीन-तीन बार जोतना और हगाना पड़ता था। कभी-कभी खेत म द मक भी लगने लगती थी, इस लए लोग को और भी सतक रहना पड़ता था।

फुरसत पा च दन प छम क बारी के खेत म रखे ए, सूखे ढाट्हा के बोझ देखने आया, तो देखा क क़रीब-क़रीब हर बोझ म नीचे से द मक लग रही है। दो महीन क माल-गो क खुराक द मक बरबाद कर रही थी।

लगभग डेढ़ सौ बोझे, य द हटाए न गए, तो देखते-देखते पूरी तरह द मक छाप लेगी। साँझ हो चली थी। च दन बोझ ढोआने के लए गाँव म आदमी ढूँढ़ने नकला। गाँव के सारे ब नहार खेत क जुताई म लगे थे। च दन ने

कार से कहा। कार च दन को लेकर वयं ही खेत से बोझ ले आने

चला। प छम क बारी आया तो बाला का बाप पचीसा, अपनी पलानी के आगे बैठकर जनेरा का टटका लावा खा रहा था। आगे-आगे कार, पीछे-पीछे च दन। दोन सर पर गमछा का फटा। “ कहाँ चले राम-लछुमन?” बैठे-बैठे पचीसा ने पूछा। “ जहाँ जाते ह, वहाँ चलोगे?” च दन ने भाई के पहले ही उ र दया। “ पचीसा को कब पूछे हो, जो उसने इनकार कया है ऐसी बात य कहते हो, च दन?”

“ तो चलो खेत म, जनेरा के बोझ म द मक लग रही है, भइया क देह म पीड़ा है। गाँव म ब नहार

मले नह और खेत के सारे बोझ को आर पर आज ट लआ देना है।"

" बस, चलो।" अँगोछे म गाँठ बाँधते ए पचीसा बोला। च दन क बोली सुनकर बाला और उसक माँ पलानी से बाहर नकल आई थ ।

" सुनती है रे " पचीसा ने अपनी मेहरा क ओर देखकर कहा, "चल... " और कार के देखते–देखते पचीसा, बाला और उसक महतारी—तीन पास आकर बोले, "चलो।"

आगे कार, पीछे च दन, पचीसा, बाला और उसक महतारी। खेत म प ँचकर च दन ने कार से कहा क वह बोझे उठवाता जाए, ढोआई बाक लोग करगे। सूरज डूब चुका था। ढाई घड़ी रात जाते–जाते, खेत म दस–प ह बोझे रह गए। इस फेरे से जब सबके संग म च दन लौटा तो बोला, "पचीसा "

" या है?"

" पस द करके अपने मजूरी के बोझे छाँट लो।"

" ज द या बबुआ, पाँच इसी म से ले लूँगा।"

" बस। पाँच हमारी ओर से भी। च दन दस बोझे पचीसा के लए छोड़ देना। अब म चलता ँ।" कार बोला।

" इतना खुश हो कार बबुआ, कहो तो एक अरज क ँ ?"

" अरज म कस अरज के लायक ँ, पचीसा " कार बोझ उठाते ए क

गया।

" यह का कोई खेत पोतऊ पर दे देते, तो मेरी गुजर हो जाती। लगान जो कहोगे दे ँगा, चाहे लगान पर दो या अ धया पर।"

कार पचीसा क बात सुनकर चुप लगा गया। ऐसी बात क आशा उसने

पचीसा से न क थी। पचीसा फर कहने लगा, "दोन भाई यह ह। पचीसा क बात रख लो।"

" य च दन, या राय है?" कार ने पूछा। " राय या, घर के मा लक तुम हो, हमसे या पूछते हो? बोझा उठा दो, हम चलने दो, जो मन म आए तय–तपाड़ करते रहना।" च दन के सर पर कार ने बोझा उठा दया। च दन जाने लगा तो कार बोला, "एक खेत तुझको ँगा पचीसा, पर कौन खेत दया जाएगा, यह च दन बताएगा, य क खेत का मा लक वही है। उसके राज म म दख़ल नह

देता।"

" बस–बस, इतना काफ है, तुमने हाँ कर दया, मुझे इतना ही चा हए। च दन जो खेत दगे, ले लूँगा।" पचीसा ने बाला के सर पर बोझ उठाते ए कहा। बाला के साथ, जब उसक माँ भी कुछ आगे नकल गई, तो कार बोला, " और बाला का याह य नह करते?"

" या क ँ कार भइया, म तो बड़े फेर म पड़ गया ँ। सरे मरद क बेट है। मेरा एक नह मानती।

कहती है क सरे गाँव नह जाऊँगी। याह ऐसे से करो जो मेरी पस द का हो और इसी गाँव म आकर बसे। लड़क ऐसी है

क अ छे-अ छे नेटुए के बेटे ललचाए ह, ले कन इस गाँव म वे बसने को

तैयार नह ह, और दो-एक जो तैयार ह, इसे पस द नह ह। इसके लायक ह भी नह । सोचा, क अगर कोई इसके मन लायक यहाँ बसने को तैयार भी

आ तो यहाँ पेट कैसे भरेगा? इसी से सोचता ँ क अब खेती का सल सला लगा ँ।"

" सुनो, बाला को अब कसी तरह याह ही दो, खच-वच क घटती-बढ़ती म पूरा कर ँगा। ले कन इसक यहाँ से वदाई कर दो।" पचीसा हाथ जोड़कर कहने लगा, " जस कारन तुम ऐसा कह रहे हो कार

भइया, वह मुझसे छपा नह है। ले कन जान करके भी म चुप लगा गया क बड़े घर क बात है। हो-ह ला करने से दोन क बदनामी होती है। च दन बबुआ क शाद हो जाएगी, तो वह अपनी ही गृह थी म सना जाएँगे। फर अपने-आप ही ठ क-ठाक हो जाएगा। यह तो नई उमर का मामला है। समय के साथ सब दब-दबा जाता है।"

आर पर बोझ रख बाला, च दन और बाला क महतारी पास प ँच रहे थे।

बात वह रोककर पचीसा बोला, "तु हारी सरन म ँ कार बबुआ, जैसे कहोगे, चलूँगा।"

च दन पास आ गया तो कार बोला, "अ छा, म तो अब चलूँ, च दन दस बोझे पचीसा अपने लए उठा ले जाएगा। बाक ये लोग ढो ही लगे, बस आठ-दस तो और ह। चलो, ब त बड़ा काम नपट गया।" और जाते-जाते बोला, "जो मन करे वह खेत पचीसा को दे देना। कल से हल चलवाने को कह रहा था।"

" ऐसी कौन-सी साइत बीत रही है कल आर पर पचीसा को बुला लो।

ठकाने से बैठकर लगान तय करके खेत दगे... क कोई लड़क का खलवाड़

है " च दन ने कहा।

पचीसा ठठाकर हँस पड़ा। बाला क महतारी बोली, "बाप रे ये तो भाई को बु सखाते ह। देखने म ही छोट उ मर के लगते ह।"

कार मुसकराते ए बोला, "इतना जो अनाज देखती हो बाला क महतारी, सब इसी च दन के कारन है, म तो कुछ जानता ही नह । घर क इ ज़त-आब सब इसी के कारन मली है। मुझसे पाँच जौ आगे है, घर का असली म लकार तो यही है। इसक इ छा के आगे म नह बोलता। होगा वही जो ये चाहेगा। तो पचीसा, कल सवेरे आर पर आ जाना।"

कार घर चला गया। बाला, बाला क महतारी और पचीसा के सर पर

च दन बोझे उठवाने लगा। च दन ने बोझे गने तो अभी बारह बचे थे। चार फेरे क ढोआई। इतनी देर म बाला से च दन एक बार भी नह बोला। बाला भीतर-ही-भीतर कसमसाकर रह जाती थी। महतारी-बाप बोझे ढोते समय कभी आगे-पीछे हो जाते तो बाला च दन के पास सरक जाती,

बगल म चलने लगती, ले कन च दन कुछ न बोलता। बाला मौका ढूँढ़ रही थी। च दन ने बाला क महतारी के सर पर बोझा उठाया, फर पचीसा के। दोन बोझे लेकर बढ़े तो वह बाला के सर पर उठवाने चला। बाला पहले से ही अपने

सर पर ले जाने के लए बोझा झुककर आगे–पीछे डगरा रही थी। च दन ने

बाला क मदद से बोझ सर पर उठवाया, दोन के हाथ छोड़ने के पहले ही बाला ने बोझे क गुर्ही धीरे–से ख च द । बोझ खुल गया। जनेरा का बोझ आधा च दन, आधा बाला क देह पर गरकर खेत म फैल गया। “ यही बोझ बाँधे हो क बाला का हाथ लगते ही भहरा गया ” मुसकराती ई बाला च दन से बोली।

“ तेरा बोझ मेरे मान का नह ।”

“ अब ऐसा कहने से काम नह चलेगा, समझे अब कतराओगे तो ान दे

ँगी।”

“ बड़ी भारी बेवकूफ लड़क है।” च दन बखरे बोझ को बटोरते ए बोला, “ त नक भी बदनामी से नह डरती। लोग देखगे–सुनगे तो या कहगे?”

“ जसको देखना–सुनना था, देख–सुन लया। अब बदनामी–फदनामी से बाला नह डरती। बआह करके, जब मेहरा घर म ले आओगे और अपने हाथ उनक बाँह पर गोदना गोद लूँगी, तो मन को स तोष हो जाएगा। फर तुमसे नह बोलूँगी, च दन ले कन तब तक ख मत दो। मुझसे सहा नह जाता।”

खली ई चाँदनी म बाला और भी खल रही थी। बगल के खेत से हरी

घास क महक आ रही थी, जो हरी के क चे दान के बड़े–बड़े गु छे भार से लटक गए थे। झ गुर क लगातार आवाज़ के अलावा, एकदम सुनसान था—पूरी शा त। गोरे मुँह पर पड़ती ई चाँदनी म बाला क सुग ठत देह और बड़ी–बड़ी आँख च दन देखता ही रह गया। च दन ने बोझ उठवाया। बाएँ हाथ से सर पर बोझ साध, दा हने हाथ से आगे को फुफती पकड़कर, बाला लक चाल से च दन के आर क ओर चली। च दन ताकता रह गया। आँख क ओट हो गई, तो उसने एक बँधे

ए बोझ पर बैठकर सूनेपन को भेदनेवाली झ गुर क आवाज़ पर कान

लगाकर न जाने कहाँ प ँच गया।

पचीसा अपनी औरत के साथ पलटा तो च दन ने कहा, “अब कहो तो आर पर चलूँ पचीसा एक फेरे क बात और है, आपस म उठवा के प ँचा देना।”

“ हाँ–हाँ, जाओ, अब तो बोझे लगभग चुक गए।” च दन आर पर प ँचा, तो कार घर से खाना खाकर ब त पहले ही लौट

आया था। सामने के पकवा इनार पर साँझ को नहानेवाल क भीड़ छँट गई थी। बैल खा–पीकर चरन से हटकर परती म बैठ, पगुरी कर रहे थे। लगभग ढाई घड़ी रात बीत चुक थी। कार चबूतरे पर नीम के पेड़ के नीचे चौक

पर बैठा आ था।

“ नहाना मत, च दन गम–सद हो जाएगा।” कार ने कहा। “ सारी देह चुनचुना रही है, बना नहाए न द कैसे आएगी?”

“ तब थोड़ा सु ता लो। तु हारी राह देखते–देखते बना खाए ही रामू सो गया है।”

लगभग आधे घंटे बाद नहा–धोकर च दन घर प ँचा तो देखा, चू हे से थोड़ा–सा हटकर द वार से पीठ टेके ती ा म गुंजा बैठ है। “ बड़ी देर कर द ”

“ हाँ, आज बोझे ढोआ ही देने थे। सोचा, नपटा के ही चलूँ।”

“ सुना, बाला का प रवार जुटा था। देवरानी से या बातचीत ई?” गुंजा हँसने लगी।

च दन गुंजा का मुँह ताकने लगा। बना कुछ बोले ण–भर वैसे ही खड़ा रहा, तो चू हे के पास बैठती ई गुंजा ने बगल म च दन को बैठने के लए पीढ़ा सरका दया, “बैठो।” और चू हे म लकड़ी डाल उसे फूँक मार सुलगाने लगी। आग जब लहक गई तो तवा रखती ई बोली, “ या आ? आज इतने चुप य हो?”

“ च दन क ज़ दगी म चु पी के अलावा और कुछ नह है, गुंजा भूख लगी है, रोट दो।”

गुंजा रोट सकने लगी, च दन चुपचाप खाने लगा। दस

घर के खाने–भर को रख लेने के बाद च दन ने पाँच सौ पए का जनेरा बेचा। रामगढ़ के तीन ब नए आकर तौला ले गए। जस दन अनाज बका, उसी दन कार कसी मुकदमे क तारीख म ब लया गया था। पाँच सौ

पए जब च दन ने गुंजा के हाथ म रखे तो बोली, “यह या?”

“ जनेरा बका है।”

“ तो म या क ँ?”

“ अपने पास रख लो।”

“ नह –नह , भइया आव तो उ ह को दे देना। वैसे तु ह य नह रखते?”

“ हमारे पास मेहरा –लड़के कहाँ ह, जनके लए पए रखूँ पया–पैसा माया है, और साधू–स त को माया से र रहना चा हए।” च दन चुप लगा मुसकराती चतवन से गुंजा को ताकने लगा। गुंजा के चेहरे म कृ म तनाव आ गया, “सौ चूहा खाय के बलार बनी भग तन वाह रे साधू–स त ”

हँसते ए च दन ने गुंजा का आँचल पकड़कर फैलाया और पय क गड्डी उसम डालकर बोला, “यह च दन क कमाई है। जब तक कोई बाँटनेवाली नह आती, तब तक इस पर तु हारा हक है।” और आँचल का एक छोर मोड़कर गुंजा का हाथ ख च उसे थमाते ए बोला, “ये मत कहना क च दन ने तुमको कभी कुछ नह दया।”

“ अ छा, जो दया सो लया। अभी ही या, जब तक जीऊँगी च दन, तुमसे लेती ही र ँगी। अब

हमारी तरफ़ से इन पय को ले लो और ददरी के मेले से एक भस खरीद लाओ, ब ढ़या जमुनापारी।”

“ गाय तो घर म है ही, ध पूरा नह पड़ता या?”

“ नह , ध भी पूरा नह पड़ता। गाय का ध रामू के लए रहेगा, बाक लोग भस का पीएँगे। घी तो खरीदना पड़ता है। भस आ जाएगी, तो घर म घी, ध, दही—सभी का सुख हो जाएगा।”

“ ले कन भइया...”

“ भइया ही तो कह रहे थे। उ ह ने ही कह दया क च दन से पूछके तय कर लेना। ब लया से लौटते ह तो संग म चले जाओ और मनपस द धा जमुनापारी ले आओ।”

च दन कुछ देर तक सोचता रहा।

“ इसम सोचने क कुछ बात नह है, कभी-कभी हमारी बात भी मान लया करो।”

“ कभी-कभी ही... ” च दन ने मुसकराते ए कहा, “ऐसे ही कभी-कभी का ढंग तुमको पहले य नह आया?”

क तक क बोआई म च दन तन-मन क सु ध भूल गया। बाहर च दन, भीतर गुंजा और बीच म कार—दोन को सँभालनेवाला? गे ँ, जौ, चना, मटर, उद इ या द के बीज बनाने के लए सूप चलाने के कारण, रोज़ साँझ को गुंजा क बाँह फटने लगत । सुबह-शाम रसोई, तनहा देह, गुंजा तड़फड़ाकर रह गई।

च दन ने पचीसा को उसका मनचाहा खेत या दे दया, पचीसा पालतू कु ा बन गया। कार ने कुछ पए दे उसे बैल खरीदवा दए। च दन के पास

बीस बीघे खेत थे, पहले वह दस बीघे बोता था, पाँच-सात बीघे लगान पर ब दोब त करके, बाक खेत येक वष ‘हाल’ बनने के लए परती छोड़

दया जाता था। इस साल पचीसा का सहारा मला तो, लगान पर ब दोब त

होनेवाले खेत भी कार क राय से च दन ने बोआ दए। पचीसा एक पैर

पर खड़ा रहने लगा, तो च दन ने दो बीघे खेत और उसे अ धया पर दे दए। बोआई समा त ई तो लगा, बेट क बरात वदा हो गई। घर के लोग—च दन, कार, गुंजा—जोड़-जोड़ से टूट गए, अंग-अंग से छतरा गए, थककर

चकनाचूर बैल क गरदन पर रोज़ साँझ को हरवाही से लौटने के बाद

पसी ई ह द और कडआ तेल छाप दया जाता, तो भी सूजन दबने म

प ह दन लग गए। बोआई के बाद भी च दन- कार, बैल क गदन गरम पानी से धोकर उन पर पसी ई ह द और कडआ तेल छापते रहे। भृगु े म, दरदर मु न के नाम पर का तक क पू णमा से आर भ होकर प ह दन तक लगनेवाले मेले क ती ा जवार कर रहा था। बोआई ायः समा त हो गई थी। वा त न क ती ा म कुछ लोग ने अपने खेत छोड़ दए थे क अगर यह न बरस गया, तो

बोआई हो जाएगी, य क इसके बरसने के बाद बोआई करने पर खेत म अनाज कुछ अ धक उपजता था।

च दन के घर तैयारी हो रही थी, मेले से भस खरीदने क । पू णमा के दन

कार ने पचीसा को साथ चलने को पहले से ही कह रखा था। पचीसा

पुराना नेटुआ था, भस क अ छ पहचान करता था। चतुदशी क साँझ को ही कार, पचीसा और च दन रेलगाड़ी से ब लया चले गए। प ह दन तक

टकनेवाले मेले क भीड़ अपार थी। हर दशा से लोग आ रहे थे।

हाथी को छोड़कर सभी जानवर इस मेले म बकते ह। लकड़ी के सामान, चौखट, दरवाजे, कपड़े, जूते, लोहे के ब स इ या द क बड़ी-बड़ी कान आती ह। गंगा के तट पर लगनेवाले इस मेले म प ह-प ह कोस से औरत-मद उमड़ पड़ते ह। का तक क पू णमा को गंगा म नान, दन-भर मेले क घुमाई और खरीदारी, फर रात को या सरे दन घर को वापसी। पहले चार-पाँच दन जानवर क खरीद- ब म बड़ी भीड़ रहती है। सवेरे गंगाजी म नहा-धोकर च दन, कार और पचीसा ने तय कया क

पहले भस खरीद जाएगी। लोग भस के बाज़ार म घुसे। एक-से-एक ब ढ़या न ल क भस, गोल मुड़े ए स ग म तेल पुता आ, गदन म कौ ड़य क माला और घं टयाँ टुनटुनाती , पाँच-सात ल बी-ल बी क़तार म खड़ी थ । हर भस के आगे अपनी मोटरी-गठरी के साथ बेचनेवाले। आगे-आगे पचीसा, पीछे-पीछे कार और च दन भस पस द करने लगे।

कुछ देर बाद एक भस पस द आई, पहले बआन क । बातचीत के बाद पचीसा वयं हने बैठ गया। ह के मुलायम हाथ पर ही भस थन से ध फकने लगी।

जैसे-तैसे सौदा तय आ। पचीसा ने खुशी से हाथ हलाया। कार ने पए

गनकर पगहा पकड़ा। पचीसा पड़ को आगे ठेलने लगा, च दन भस

हाँकने लगा। लोग पैदल गाँव क ओर बढ़े। दन-भर क राह थी।

यारह

सरे दन, सवेरे दो घड़ी दन चढ़ने पर, आर पर पचीसा आया। च दन

पलानी म से रात का गोबर उठा रहा था। बाहर धूप म कार दतुअन कर

रहा था। बगल म कऊड़ खाली पड़ा था। पास क लकड़ी से कऊड़ क दबी आग इधर-उधर करता आ पचीसा वह बैठकर हाथ सकने लगा। “ या है, पचीसा?” कार ने दाँत पर दतुअन चलाते ए पूछा। “ आज तीन दन से बाला को कसके बुखार चढ़ा है, अक्-बक् कर रही है।” खरहर चलाते ए च दन के हाथ एकाएक क गए। वह पचीसा क बात सुनने लगा।

“ तो?” कार ने पूछा।

“ तो चाहता था क चौबेछपरा जाके बैदजी से कुछ दवाई ले आता ”

“ जाओ, ले आओ। इसम पूछने क या बात है?”

“ ले कन म तो चाहता था क अगर आकर वह देख भी लेते तो उसक महतारी को स तोष आ जाता। कल से मुँह उदास कए है। ले कन हाथ म तो कुछ नह है। जाऊँ तो या लेकर?”

“ तो ऐसे साफ़ य नह कहते क पए चा हए? कतने चा हए?”

“ अभी दस दो।”

“ ठ क है, म पए दे देता ँ। दवाई जाकर ले आओ, बैदजी से कह दोगे तो वह आ भी जाएँगे। आओ, चलो, घर चल रहा ँ, वह पए ले लेना।”

कार के पीछे–पीछे पचीसा घर चला, तो च दन के मन म कुछ

छटपटाहट–सी होने लगी। आँख के सामने बार–बार बाला ही आ जाती थी। रह–रहकर यान प छम क बारी को चला जाता था। ब त चाहा क काम म मन लगाए, ले कन मन बेकाबू हो गया। चरन पर से गो को हटाकर, अलग धूप म बाँधा। फर पकवा इनार के प थर पर गँड़ासी क धार तेज़ करने लगा।

कार जलपान करके घर से लौट आया। आते ही च दन पर बगड़ा, “आज

दतुअन–कु ला नह होगा या? बेर–सबेर का कुछ यान है गँड़ासी पजोने क कौन ज द है उठो, दतुअन करके घर जाओ।”

कार ने च दन के हाथ से गँड़ासी ले ली, “पलानी म दतुअन ख स दया है, जाके ले लो। रामू से थोड़ा तेल भजवा देना। आज घाम म तेल लगाने को मन करता है।”

मुँह धोकर, जलपान करने जब घर प ँचा तो गुंजा मुसकराने लगी, “तु हारी बुलाहट है।”

“ कहाँ?” च दन भेदभरी चतवन से बोला। “ बस, समझ लो ”

“ बताओ भी तो?”

“ लो, पहले जलपान कर लो, बताती ँ।” गुंजा च दन के आगे एक कटोरी म तीसी के दो लड्डू रखती ई बोली। “ ऊँट के मुँह म जीरा इतने से या होगा?”

“ सब एक ही दन म ख़तम कर दोगे या?”

“ तो ले जाओ यह भी, खाली एक लोटा जल दे दो, जलपान हो जाएगा।” गुंजा बगड़ गई, “तुम तो हैरान करके रख देते हो, एक दन अगर सवेरे कुछ खाने को न मले, तो मेरी आफ़त कर दोगे, और घर म कुछ बनाऊँगी तो भ मासुर क तरह एक ही दन म चट् करने के फेर म। हमको या, म सब ले आके रख देती ँ।” गुंजा झमककर मुड़ी तो च दन ने लपककर उसका आँचल पकड़ लया।

“ ज़रा–सी बात म ख सया जाती हो ”

“ आँचल अपनी सास का पकड़ना ” गुंजा मुसकराती ई बोली। एक लड्डू मुँह म रखते ए च दन बोला, “एक और ला दो।” भीतर से दो और लड्डू लाकर कटोरी म रखती ई गुंजा बोली, “देवरानी

बीमार ह, देखने गए क नह ?"

" बक्-बक् न कया करो " च दन खाते ए बोला। " हँसी नह करती। पचीसा दस पए ले गए ह। भइया से पूछ लेना।"

" ले गए ह गे। रामू से कडआ तेल भजवा दो। भइया ने माँगा है। म एक काम से जा रहा ँ।"

और घर से बाहर नकल, पहले तो च दन खंड क ओर बढ़ा, फर वापस मुड़कर सरी गली पकड़ ली। राह म एक-दो जगह ककर प छम क बारी क ओर बढ़ा। गड़हा पार कया, शवाला डाँक गया, फर बगीचे म।

र से ही देखा, बाला क महतारी मड़ई के आगे आँगन म बैठ ई है। पास प ँचते-प ँचते वह उठकर भीतर चली गई। आँगन म खड़े हो च दन ने पचीसा का नाम पुकारा, तो बाला क महतारी बाहर नकली। " बाला को या आ है?"

" भले आ गए। ऐसा तेज़ बुखार चढ़ा है क उसे सु ध भी नह है, बस कभी-कभी तु हारा नाम दोहरा देती है। आओ न, ज़रा भीतर चलके देख लो।"

च दन भीतर प ँचा तो बाला चादर से मुँह तोपकर चत लेट थी। महतारी ने

ार पर से ही आवाज लगाई, "मुँह खोल री, च दन आए ह।"

च दन का नाम सुनते ही मुँह पर से बाला ने चादर हटा द —गोरा चेहरा, तमतमाया आ, एकदम लाल, बड़ी-बड़ी आँख म खचे ए डोरे, अ त- त बाल

बाला कुछ बोली नह , च दन का मुँह नहारती रही। वर से तपते ए चेहरे म पल-भर को चैन आ गया। च दन ने झुककर उसका मुँह देखकर पूछा, " तु हारे गाल पर दाने कैसे ह?"

" दाने दाने कैसे ह गे कुछ।" बाला बोली। च दन ने उसक माँ को बुलाया। मुँह पर दाने का नाम सुन जैसे उसे झटका लगा। वह ग़ौर से बाला का मुँह देखने लगी—गाल, ललाट, गदन पर छोटे-छोटे दाने।

" च दन, बाहर नकलो, इसे माता नकली है। इसका बाप मले तो मना कर देना क दवा के लए न जाए।"

" वह तो पए लेकर चले गए।" च दन बाहर नकल आया। मन म भय भर गया, ले कन चुपचाप वह आर पर चला आया।

सरे दन पचीसा से ही जाना क बाला को बड़ी माता नकली ह, ब त

ज़ोर का चढ़ाव है, रोम-रोम म दाने नकल आए ह। च दन न जाने

या - या सोचता रहा रह-रहकर बाला क बड़ी-बड़ी आँख, गोरा मुँह, घुँघराले बाल और बगुले क पाँखी-सी ध प-ध प सफ़ेद साड़ी याद आती, तो कभी वर म डूबा आ लाल, तमतमाया चेहरा, गाल और ललाट पर माता के बड़े-बड़े दाने। अब न जाने या हाल होगा च दन अपने को कसी काम म जबद ती लगा देता।

बीमारी बाला के घर ही तक न रही, गाँव म वेश कर गई। धीरे–धीरे लोग के बीमार पड़ने क सूचना मलने लगी। माता का कोप बढ़ने लगा, गाँव भय से काँप उठा।

बारह

पूस का जाड़ा शु आ था क तु जाड़े क गुलाबी धूप म एक अजीब–सी उदासी छाई रहती। जामुनवाली परती म लोग जुटते, क तु डरे ए, पता नह कब कसके घर म माता वेश कर जाएँ अब तक लगभग दस घर पकड़ म आ गए थे। सरेह क फ़सल तेज़ी के साथ बढ़ रही थ , क तु दन म सरेह घूमने क जगह लोग माता क पूजा करने म लगे। दस–बारह दन तक लोग आशंका म डूबे रहे। अचानक भोर म खबर फैली

क खेलावन कुरमी का दस साल का बेटा मर गया। लोग थरथरा गए। उ र

टोल म जो आग फैली, तो बस चार ओर दहकने लगी। रोज़ लोग इसी शंका म कान लगाए रहते क कस टोल से कसके मरने क ख़बर मलती है। हर सरे–तीसरे दन कोई–न–कोई मर जाता। बीस–प चीस दन के भीतर गाँव के छोटे–बड़े प ह आदमी मर गए। लोग के दन और ची कार से बयार म भी हाहाकार भर गया। गली–गली म सूनापन, घर–घर के ऊपर मौत क छाया मँडराने लगी। सारा–का–सारा गाँव भयानक ख और अवसाद म डूब गया। सबके चेहरे भय और शोक से डरकर उतर गए।

च दन घर प ँचा तो देखा, कार रजाई ओढ़कर लेटा आ है, और सरहाने पीढ़े पर बैठकर गुंजा उसके सर म तेल लगा रही है। कार ने सवेरे

देह–कपार म दद क बात क थी। उसे लेटा देख च दन का मन कँपकँपा गया।

“ दद कैसा है?”

“ दद तो कहते ह, वैसा ही है, पर माथे क नस तनी ई ह, तुम भी ज़रा छूके देखो न, मुझको इनक देह गरम लगती है।”

“ या?” च दन ने कुछ डरकर भाई के ललाट पर हाथ रखा, “इनक देह तो गरम है ”

च दन और गुंजा दोन ने एक– सरे को देखा।

कार करवट घूमकर बोला, “दोन पैर फट रहे ह च दन, रजाई के ऊपर से

ज़रा कड़े हाथ दबा दे।”

“ नह –नह , देह गरम लगती है। ऐसी हालत म उसे दबवाना नह चा हए।

सर म तेल भी न लगवाओ।” फर गुंजा क ओर ताककर बोला, “रहने दो, अब तेल न लगाओ। इनको सो जाने दो। सरेह म ठंडक लग गई है। लाओ, हाथ धोके ध क बा टयाँ दे दो।” गुंजा ने तेल क याली ताक पर रख द और हाथ धोकर च दन को बा टयाँ थमाती ई बोली, “बाहर रामू मले तो भेज देना। और ध लेके ज़रा ज द आ जाना।”

“ य ?”

“ कुछ नह , ऐसे ही। तुम आ जाना।”

च दन बा टयाँ लेकर बाहर तो नकला, ले कन मन म कोई शंका भर गई थी। भाई क गरम देह के कारण मन म एक अजीब-सा, अनचाहा, जैसे डर भरता जा रहा था। उसे बाला का तमतमाया आ, वर से त त चेहरा याद आया और वह ज द -ज द आर क ओर डग बढ़ाने लगा। तीन दन तक कार वर से त त पड़ा रहा। आग म तपाए ए लोहे क

तरह देह तपती रही। च दन और गुंजा दोन के मन म भीतर-ही-भीतर एक दहशत भर गई थी। क तु कोई भी एक- सरे से कुछ कहता न था। दोन एक- सरे क उदास और उ साहहीन आँख देखते रह जाते। अगल-बगल क बूढ़ औरत कार को देख गई थ । वर के ल ण ठ क नह थे। सभी

चौथे-पाँचव दन क ती ा कर रही थ । घर म एकदम सूनापन भर गया था। घर क एक-एक चीज़ स रहाकर रखनेवाली गुंजा अपने तन-मन क सु ध भूल गई थी। जो चीज़ जहाँ पड़ी थी, वह पड़ी रह गई। चौथे दन देह म चेचक के दाने दखाई पड़ गए। गुंजा काँप गई। बड़ी-बूढ़ औरत ने जैसे बताया, गुंजा प त क सेवा म जुट गई। दोन समय नहा-धोकर, कार, कार क ख टया के नीचे क धरती हाथ से लीप ली, अ छा आ ढेला रख छाक देती, धूप जलाती, घुटन के बल बैठ असीम

ाथना से लपी धरती पर नाक दरती। और तब चारपाई क बगल म धरती

पर बैठकर माता क पूजा और ाथना के गीत गाने लगती, “ न मयाँ क डार मइया, लावेली हड़ोलवा, क झू म-झू म ना।” इस अकेले कंठ क पुकार म इतनी वनय और द नता होती क घर का कोना-कोना जैसे साथ देने लगता। घर के ज़ री काम को ज द -ज द नपटा, धुली ई साड़ी पहनकर, गुंजा बगल म बैठकर, प त के मुँह पर आँख गड़ा, ाथना के गीत

फर गाने लगती।

और च दन था, जो दन-भर घर और आर के बीच जैसे दौड़ा करता। घंटे-घंटे पर भाई को देख जाता। सवेरे ताज़ी प य से भरा आ नीम का छरका तोड़ता और भाई के सरहाने वयं रखता। दोपहर को फर नीम के पेड़ पर चढ़ता और ताज़ा छरका तोड़ लाता। सवेरे का रखा आ छरका मुरझाने न पाए क उसे बदल दया। जब देखो, तो खाट के पास खली ई नीम क प य वाला टटका छरका रखा आ है।

क तु देह पर क गो टयाँ बढ़ती ही ग । सरे ह ते म सारी देह चेचक के

बड़े-बड़े दान से भर गई। हाथ, मुँह, पैर म सूई क नोक के बराबर खाली जगह न बची। दान क भीषण गरमी से कार छटपटाने लगा। दाने पकने

शु हो गए, तो उनक टभकन से बेचैनी और छटपटाहट होने लगी। कोई चारा नह , कोई वश नह , चारपाई के एक ओर गुंजा और सरी ओर च दन बैठ जाता। गुंजा दन-रात बस माता क पूजा के ही गीत गाती रहती, च दन भाई को पंखा झलता रहता। उदास, कभी-कभी रो पड़नेवाली गुंजा को समझाता रहता, बोलता रहता। अगल-बगल क बूढ़ औरत ने भी आना-जाना कम कर दया था, जससे गुंजा अपने को और भी असहाय समझने लगी थी।

कार क हालत गरने लगी। वह रह-रहकर बकने लगा। सूनी रात म

रह-रहकर च ला पड़ता, कभी-कभी उठकर बैठ जाता, रोने लगता। घर म अकेली-असहाय गुंजा

डर से काँप जाती। च दन माल-गो को अगोरने

के लए रात म आर पर रहता, ले कन गुंजा ने अब उसे घर पर ही रहने को कहा। जानवर क देख-रेख के लए च दन ने रात म पचीसा को आर पर रख दया। रात म च दन भी घर ही पर रहने लगा, तो गुंजा क जान-म-जान आई।

क तु गुंजा क ◌ाथना और पूजा-गीत का कोई फल न मला। बीमार पड़ने

से ठ क चौदहव रात को कार बुरी तरह छटपटाने लगा। कराह म इतनी

पीड़ा थी क घर-आँगन का कोना-कोना भयानक हो गया। आधी रात से भोर तक कार झटपटाता और कराहता रहा। भोर होते-होते सारी कराहट और छटपटाहट ब द हो गई। गले से ल बी-ल बी हच कयाँ आने लग । एक, दो, चार गनकर—कुल प चीस हच कय के बाद सब कुछ समा त, देह एकदम अकड़ गई।

ब लहार क उस भोर म गुंजा का आतनाद गूँज उठा। च दन क ची कार ने पास-पड़ोस के लोग को जगा दया। मौत के उस भयानक स ◌ाटे को गुंजा का वलाप भेदने लगा। देखते-देखते आँगन लोग से भर गया। कोई गुंजा को पकड़ता, कोई च दन को सँभालता।

* मोट -मोट रो टयाँ

खंड : 4

एक

सारा खेल ही समा त हो गया। इस हरे-भरे घर क फ़ज़ा ही बदल गई। उछलते-कूदते हरन क जैसे चार टाँग एक साथ ही कोई बाँध दे, च दन भहराकर बैठ गया। सूझ-बूझ एकदम हवा हो गई। आर पर रहता तो वहाँ क उदासी काटने लगती, घर म आता तो बलखती ई गुंजा मन का ढाढ़स ही तोड़ देती। क तु वह समझाने लगता। समझाते-समझाते वह वयं भी रो पड़ता। बाहर आता तो फर वही अकेलापन, आर-खंड क वही उदासी मन को बेधने लगती।

यह पचीसा था जसने आकर आर का काम सँभाल लया। रह-रहकर च दन को समझाता रहता, बोधता रहता। वै जी हर सरे-तीसरे दन आकर गुंजा से मल जाते, च दन से कह-सुन जाते। ा के बाद वह फर आए। च दन आर पर ही था। आँगन म खाट पर बैठकर गुंजा से बोले, "महतारी ने बुलाया है।" गुंजा ने कुछ भी उ र नह

दया, वह सर झुकाए चुपचाप नीचे देखती रही तो वै जी फर बोले, "कुछ दन के लए चौबेछपरा चलोगी?"

" चौबेछपरा जाके अब या क ँ गी, बाबू?"

" तु हारी महतारी तु ह देखना चाहती ह। तु हारा मन भी बहल जाएगा।"

" अब चौबेछपरा म मेरे लए या धरा है? सुख इस घर म भोगा, तो ख के दन म नइहर जाके या क ँ गी? थोड़े दन के लए अगर चली भी चलूँ तो

यहाँ रामू-च दन को कौन देखेगा? इनको कस पर छोड़कर चलूँ।"

" रामू तो साथ चल सकता है।" वै जी बोले। " ले कन च दन?"

वै जी चुप लगा गए तो गुंजा फर बोली, "जब इस घर पर वप आई है

तो घर के सभी लोग एक ही जगह साथ रहकर भोगगे। अब मेरे लए इस घर म सरा कौन सहारा है बाबू, म च दन को छोड़के नह जाऊँगी। ख ही भोगने के लए जब म पैदा ई ँ तो यहाँ से भागकर म भला सुखी होऊँगी " रामू को भेजकर वै जी ने च दन को आर पर से बुलवाया। च दन आया तो बोले, "म चाहता था च दन, क गुंजा थोड़े दन के लए चौबेछपरा हो आती। तु हारी या राय है?"

" उनका मन हो तो चली जाएँ, नइहर उनका है।"

" ले कन यह तो तैयार नह है, तुम कहो तो शायद तैयार हो जाए।"

" अपना भला-बुरा ये खूब समझती ह, म अब इनसे कुछ नह कह सकता। अब तो जैसा ये कहगी, वैसा ही मुझको चलना है। बाहर दो बैल, दो लगहर, रामू, यह घर, इनको कौन सँभालेगा—यह तो अ छ तरह यही समझ सकती ह, मुझसे आप नाहक पूछते ह।"

" तो कससे पूछूँ, च दन, घर के मा लक एक तरह से पहले भी तु ह रहे हो, अब हो ही गए।"

" मा लक–म लकाँव क बात छो ड़ए बैदजी, जो हमारी क मत रही है उसे देख ही रहे ह। ऐसा भी दन कभी देखना पड़ेगा, यह सपने म भी नह सोचा था। आप तो इनके बाप ह, ख म सहारा देने चले आए ह, मुझे तो अपने बाप–महतारी के चेहरे तक याद नह । होश सँभाला तो भइया क गोद म, घर म लारनेवाली मली भउजी, सो भी न टक । अब तो भइया भी चले गए, बची ह ये, सो इनको आप ले जाइए। आगे जो देखना होगा सो देखूँगा, भोगना होगा, भोग लूँगा। सर तो झुका ही है।" च दन क आँख भर आ । वह सरी ओर देखने लगा।

" नह –नह , ऐसा न सोचो, च दन अब गुंजा को नह लवा जाऊँगा। म अपने मन से नह आया था, इसक महतारी इसे देखना चाहती थी। म तो यहाँ आ गया, ले कन वे कैसे आएँगी? ले कन म जाकर समझा ँगा। फर दो–चार महीने के बाद अगर हो सके, तो दन–भर को तु ह प ँचा आना। यहाँ–वहाँ, दोन जगह के लए, अब तो तु ह बचे हो।" वै जी गुंजा को समझा–बुझाकर वापस लौट गए। महामारी का कोप सराने लगा। इसके बाद भी दो–चार लोग बीमार पड़े, ले कन बच गए। गाँव का उ साह ही जैसे ठंडा पड़ गया। सभी एक ही बयार क चपेट म चत गरे थे। उखड़े ए, उदास चेहरे, सबके दै नक काय म बेहद श थलता आ गई। जामुनवाली परती म यदा–कदा ही कोई बैठता, सब अपने खंड– आर पर। गाँव क फ़ज़ा ही बदल गई। च दन और भी सु त हो गया। न सरेह घूमने म मन लगे, न खंड– आर पर बैठने क इ छा हो। कभी यहाँ, कभी वहाँ बैठ–बैठकर दन काटने लगा। माघ बीत रहा था। खेत म मटर और चना गोटा रहे थे। पचीसा च दन के

सर पर सवार रहता, बार–बार टोकता, समझाता रहता, "च दन, इतनी बड़ी

खेती–गृह थी बरबाद न करो, भउजाई और भतीजे का मुँह देखो। जो आ सो बीत गया। जसको जाना था चला गया, उसके कारन, जो पास है उसक ओर से आँख य मूँद रहे हो? ऐसी जमी ई खेती, य द उखड़ गई तो कह के न रहोगे रोने–धोने और उदास रहने से कुछ नह मलता। पीठ क धूल झाड़–प छकर खड़े हो जाओ, च दन आगे ब त काम करने ह।"

पचीसा के बार–बार समझाने से च दन कुछ सँभलने लगा। खेत–सरेह घूमने लगा, काम म च लेने लगा। जब तक बाहर रहता, मन लगा रहता, घर आता तो गुंजा को देखकर उसका सारा धीरज छूट जाता। गुंजा जैसे फर

वारी हो गई। कौन कह सकता था क इस माँग म कभी स र भरा होगा

इस उ म तो ब त–सी लड़ कयाँ वारी रहती ह। कभी–कभी गुंजा के तीन प च दन क आँख म नाच जाते— वारी गुंजा, सुहा गन गुंजा और अब क न तेज, बुझी ई, मुरझाई, वधवा गुंजा च दन भीतर–ही–भीतर काँप जाता।

गुंजा चुप हो गई। उड़नेवाले रंग म रँगे ए च क भाँ त उसके चेहरे क का त फ क पड़ती गई। आँख के नीचे कुछ याही आने लगी। च दन बार–बार समझाता, बार–बार बोधता, अकसर अपने अँगोछे से उसक आँख प छता, ले कन गुंजा के उतरते ए चेहरे पर पल–भर को भी ठहराव न आया। च दन एक दन खीज गया, "तो ठ क है, अब म भी इस घर म नह र ँगा।"

" या आ?" गुंजा ने पूछा।

" मेरी एक भी बात जब सुनती ही नह हो, तो इस घर म रहके या क ँ गा? तु हारा घर है, तुम सँभालो।"

" तो जाओगे कहाँ?"

“ जहाँ मेरा मन करेगा, चला जाऊँगा। इतना अब मुझसे सहा नह जाता। पचीसा कहता, ‘भौजाई–भतीजे का मुँह देखो, मन म ढाढ़स करो’, ले कन तुम हो क सारा ढाढ़स, सारा धीरज चुटक बजाके तोड़ देती हो। आ ख़र म प थर का नह ँ गुंजा, तुम एक मार म तल मला ग , मेरे सर पर तो न जाने कतने नशान ह ”

“ म ही तु ह ख देती ँ।”

“ हाँ–हाँ–हाँ मेरे सारे ख क जड़ तुम हो, और कोई नह है। अब तक जो

आ सो आ ही, आगे भी चाहती हो क म घुट–घुटके ही मर जाऊँ। मुझसे

अब नह सहा जाता, म घर छोड़कर चला जाऊँगा।” च दन ने अपना मुँह घुटन म छपा लया।

गुंजा उठ खड़ी ई और च दन का सर ऊपर उठाती ई बोली, “तो कहो, मुझे या कहते हो?”

“ कहना या है, मेरी देह छूके कहो क अब तुम कभी न रोओगी ” गुंजा च दन का मुँह ताकने लगी तो च दन ने अपनी बाँह बढ़ाकर कहा, “लो, मेरी देह छूके वचन दो क अब कभी नह रोऊँगी।” गुंजा च दन क बाँह छूकर बोली, “लो, अब कभी नह रोऊँगी।” च दन बाहर चला आया।

दो

धीरे–धीरे घर म थरता आने लगी। गृह थी के काम म गुंजा मन लगाने लगी। घर एक ढर पर आने लगा। च दन बाहर–भीतर के सारे काम नय मत

प से सँभालने लगा। घर का बखरा आ, उदास, अलस वातावरण

समटने लगा, भारीपन कम होने लगा, खेती–गृह थी के काम के बारे म

गुंजा–च दन बैठकर राय–बात करने लगे। ज़ दगी चल नकली। छपट काटनेवाली गँडासी क धार मुरहा गई थी। सवेरे ही च दन ने गँड़ासी पचीसा को दे द थी क रामपुर के लोहार से जाकर पटवा लाएगा। दोपहर को खेत से ह रअरी का बोझ लेकर लौटा तो गँड़ासी अपनी जगह पर न

मली। अगल–बगल सभी लोग अपने–अपने आर पर छपट काट रहे थे, माँगता भी तो कससे हारकर पचीसा के घर क ओर बढ़ा। ब त दन बाद प छम क बारी म पैर रखा था। मन म अजीब तरह क उ सुकता भरी ई थी। बाला को देखे ए ब त दन हो गए थे। अब न जाने बीमारी के बाद उसका चेहरा कैसा हो गया हो पचीसा क एक मड़ई के ार पर चाँचर चढ़ा था, सरी म भीतर कोई छपट काट रहा था। आगे के नाँद और फाटक के बीच चकनी ज़मीन पर खड़े होकर च दन ने आवाज लगाई, “पचीसा ” कोई उ र न आया, भीतर छपट काटने का म जारी रहा, ख च–ख च क आवाज़ आती रही। च दन ने फर दो–तीन बार धीरे–धीरे ही आवाज़ लगा , क तु कोई उ र न आया। अबक बार कुछ सोचकर जोर से पुकारा, “पचीसा ”

भीतर छपट काटने का ख च–ख च का वर क गया और आवाज आई, “ कौन है?”

च दन ने जो सोचा था वही आ। थमे वर म धीरे–से बोला, “म ँ च दन ”

“ काम या है, बाबू घर म नह ह?” भीतर से ही बाला बोली। च दन ककर कुछ सोचने लगा। भीतर भी बाहर से कुछ सुनने क ही

ती ा थी।

“ या बाहर नह नकलोगी?” च दन ने धीरे–से कहा। इतना ब त था। बाला क बीमारी के बाद उसे पहली बार च दन देख रहा था। हाथ–पैर झाड़, छपट काटना छोड़कर बाला बाहर नकली। च दन सहम गया, यह कौन है? वह बाला कहाँ गई? हाथ, पैर और मुँह पर चेचक के बड़े–बड़े दाग...उस गोल, गोरे चेहरे क बड़ी–बड़ी दो आँख म से एक...? बाला ने मुँह फेर लया।

“ अब मेरी ओर देखोगी भी नह ”

“ देखने– दखाने लायक अब यह देह नह रही, च दन ”

“ नाता बस देह–देह का ही था?” च दन ने पूछा। “ जो चीज़ आँख को बुरी लगे, उससे लगाव होता ही कहाँ है, च दन मन का नाता भला कौन नबाहता है ”

“ तू भी यही कहती है, बाला ”

“ मेरे कहने–न–कहने से होगा ही या, च दन जो तु हारे सर पर आ पड़ी है उसी से उबर जाओ तो ब त है। इतना जो सँभाल रहो हो, तु हारे लए कम नह है। कल शीशे म अपना मुँह देखा, तो लगा क भगवान ने मेरा हक–पद छ न लया। जब प ही न रहा च दन, तो भला मोह कौन देगा अ छा आ जो आ गए, ब त दन से मन करता था देखने को। सोचती थी, माई से कहके बुलवाऊँ, ले कन ह मत नह होती थी।”

“ और जब आया तो मड़ई के बाहर नह नकलती थी?” च दन ने बात कस द ।

“ हाँ, यह एक आँखवाला कु प मुँह लेकर तु हारे सामने आने म थमती थी। भउजाई कैसी ह?”

“ ह ”

कुछ ककर च दन बोला, “पचीसा को गँड़ासी पटवाने को द थी, देखो कह रखी है या?”

“ देखती ँ,” बाला मुड़कर मड़ई म गँड़ासी खोजने चली गई। दो–एक मनट के बाद गँड़ासी लेकर लौट तो च दन बोला, “कहते ह, ना रयल का पानी मलने से माता के दाग ब त ज द भर जाते ह।”

“ ना रयल का पानी म कहाँ पाऊँगी, मुझे कौन लाकर देनेवाला है, च दन और ये दाग भर या ना भर, मन म अब कोई लालसा न रही। संसार म कब

कसका मन भरा है प का घमंड कभी मन म आया था, सो परमा मा ने

चूर कर दया। अब तो इसी ब लहार म दन काटते ह। कभी–कभी सु ध लेते रहोगे, तो मेरे लए ब त बड़ा सहारा होगा। अगर भूल– बसार दोगे तो भी

या क ँ गी—पहले–सी बात अब कहाँ रही। न वह मन रहा, न वह उमंग

रही।” बाला क आँख भर आ ।

च दन चुपचाप बाला क ओर देखता रहा। बाला क आँख से जब टप् से आँसू गरा और उसने अपने आँचल से आँख प छ , तो च दन बोला, “तू अपने ही भा य को रोती है। घड़ी–भर को भी

कभी मेरी क मत के बारे म सोचा है "

" हाँ, च दन यह तो ठ क कहते हो, आदमी इतना वारथी होता है क उसे अपना ख, सरे के बड़े-से-बड़े सुख से भी भारी लगता है। जस दन भाई को फूँककर लौट रहे थे तो मने तु ह देखा था। बड़ी देर तक यही सोचती रही क आदमी से बड़ी उसक क मत होती है। अपने कए-कराए कुछ नह होता। और वैसा आदमी, जो सर के आँसू ही प छने के लए बना हो, उसक थाह कौन पा सकता है च दन ...जाओ, तु ह देर हो रही होगी।"

" हाँ, अभी छपट काटनी ह।" च दन लौट पड़ा।

आर लौटते ए च दन का मन नए सरे से उचट गया। जनेरा के खेत म, मचान पर ही बाला बार-बार आँख के सामने खड़ी हो जाती—यह वही बाला है ले कन हरनी क एक आँख कहाँ गई? चेहरा इतना कु प कैसे हो गया भइया का चेहरा भी कतना भयंकर हो गया था, वह उनके साथ ही चला गया। तो सबको एक दन चल देना है, यहाँ का कुछ भी टकना नह है—न यह प, न यह देह और न संसार क कोई भी चीज़ तो यह माया-मोह कस लए? भौजी चली ग , भइया चले गए, एक दन म भी चला जाऊँगा, गुंजा चली जाएगी, बाला चली जाएगी, एक-एक करके सब चले जाएँगे, सब चले जाएँगे। तो यह सब खेल है, तमाशा है पेड़ के नीचे से, आर क ओर बढ़ते ए च दन के अगल-बगल जैसे कोई गरम बयार बह

गई। सामने के खेत क ओर नगाह गई, तो देखा जैसे ह का पीलापन छा रहा था। खेत पकने लगे, हरी-भरी यह सरेह सूखकर झनझना जाएगी, खेत कट जाएँगे। लहलहाती ई यह धरती एक दन सुनसान, उजाड़ हो जाएगी। च दन आर पर तो प ँच गया, ले कन मन म एक अजीब-सी उचटन और अ न छा भर गई थी। भाई क मौत के बाद से वह जैसे चकोह म पड़कर नाच रहा था, आज जैसे एकाएक कनारे लग गया, और आँख के सामने का सब कुछ अपने असली प म साफ़-साफ़ दखाई देने लगा... तीन

फागुन लग गया। दस दन जाते-जाते वै जी फर आए। गुंजा को दो-चार

दन के लए ही चौबेछपरा ले जाने क च दन से वनय करने लगे। गुंजा

पास ही म धरती पर बैठ ई थी। वै जी ने च दन से फर पूछा, " या कहते हो च दन?"

" दे खए बैदजी, हमने तो आज तक एक बार भी मना नह कया। मने तो बीच म इनसे दो-तीन बार कहा क जाओ, चौबेछपरा एक बार हो आओ। महतारी देखने को छछनती होगी। ले कन इनके गुम-सुम चेहरे के आगे अब मेरी एक भी नह चलती। अब आप आ ही गए ह, तो अ धक नह , दस दन के लए इनको लेते ही जाइए। पर इससे आगे न र खएगा, नह तो फगुआ बीता क कटाई शु ई। और आप जानते ही ह क अब सारा भार इसी

देह पर है। म खेत देखूँगा क रोट -पानी " वै जी स हो गए। च दन ने गाँव क असवारी ठ क कर द । गुंजा रामू को लेकर चौबेछपरा चली गई।

च दन नता त अकेला हो गया। दन म बगल क चाची के घर खा लेता, रात म आर पर ही कभी लट्ट लगा लेता, कभी फुटेहरी। कभी भरपेट

ध ही पीकर रह जाता। उसक ज़ रत से ब त अ धक ध, दोन जून बच जाता था। कभी कसी के घर दे आता, कभी पचीसा ले जाता। घर म ताला ब द कर दया तो फर गया ही नह । रामू और

गुंजा के चले जाने के बाद सूनापन तो ज़ र लगने लगा, ले कन च दन को यह सूनापन कुछ अ छा भी लगा। शा त, न त होकर, वह आर पर पड़ा रहता, साँझ–सवेरे जानवर के खलाने–पलाने म बीत जाता, बाक समय म फ़ुरसत और अकेलापन। इस अकेलेपन म मन को उबानेवाली उदासी न होती, ब क उसे सोचने–समझने का एक ह का–सा सुख मलता— वर ता का सुख। च दन के मन म नए सरे से कुछ भरने लगा। यह माया–मोह कुछ नह है।

याह–शाद का झंझट—सब बेकार है। जो आ त ह, बस उ ह पार लगा दो।

घर–गृह थी बढ़ाना एकदम थ है। च दन ने न य कया क वह अपना

याह नह करेगा, कसी भी हालत म नह ।

गुंजा को गए दस दन हो गए थे, क तु चौबेछपरा से कोई हाल–चाल नह

मला। पाँच दन और... फर भी कोई समाचार नह आया, तो च दन

सगबगाया। फगुनहट बहने लगी थी। दल म कुछ उदासी और खापन आने लगा था। खेत पयराकर पकने लगे थे। कसकर फगुनहट बही क खेत म डाँठ सूखकर झनझना गए और कटनी शु ई। च दन रोज़ अपने खेत देख

आता क कौन पहले काटने लायक होगा। फगुआ दस दन रह गया, तो च दन ने वै जी के नाम एक चट्ठ लखी और पचीसा के हाथ भजवा द ।

साँझ को वै जी गुंजा और रामू को लेकर आ गए। गुंजा बरा गई थी। " प ह–बीस दन म ही यह हालत आ ख़र बात या है?" च दन ने गुंजा से पूछा।

" बात म या बताऊँ दो बार बीमार पड़ गई।"

" आ या था?"

" पहली बार तो बुखार लगा था, तीन–चार दन तक उसी म डूबी रही, फर एक दन च कर आ गया और आँगन म बेहोश होके गर पड़ी। फर दो–तीन दन तक ख टया पर से उठा ही नह गया। देह का सारा बल ही जैसे कसी ने हर लया। अभी तो बाबू भेजना नह चाहते थे, ले कन तु हारी

चट्ठ गई, तो नाह न कर सके। म तो च ता म सूखी जा रही थी क तुम

या सोचते होगे, खाने–पीने का या इ तज़ाम होगा। ले कन देह के आगे म

तो बेबस हो गई थी।"

" खाना–पीना तो चल ही जाता था। पहले दो–चार दन तक तो अकेले रहना अ छा लगा, ले कन बाद म मन ही उचट गया। रामू भी चला गया था, सो अपना तो कोई दखाई ही नह पड़ता था।"

" घड़ी–दो घड़ी के लए भी चौबेछपरा एक बार य नह आ गए? मेरा मन नह लगता था, आ गए होते तो म चली भी आती।"

" चौबेछपरा म मेरा अब या धरा है " च दन ने एक ल बी साँस ख ची, "वहाँ जाने को अब मन नह

करता। स ब ध तो ऐसा हो गया है चौबेछपरा से क जीवन–पय त आना–जाना लगा ही रहेगा, ले कन मुझे लगता है क चौबेछपरा म चोरी करते ए ही म पकड़ लया गया। खैर हटाओ, इन बात म अब या धरा ही है" गुंजा च दन को अपलक ताकती रही। च दन ने बात ही मोड़ द , "गाँव म क टया करनेवाले ब नहार आने लगे ह। खेत पक चले ह। फगुआ के बाद ठहरगे नह । कटाई लग ही जानी चा हए। अगर कहो तो ब नहार (खेत काटनेवाले मज़ र) को बयाना दे ँ?"

" ये सब मुझसे पूछके होगा "

" तो कससे पूछूँ? अब कौन रह गया है?"

" जब कोई था, तब भी म लकार तु ह थे, च दन मुझसे पूछना हो तो इस घर के बारे म पूछा करो। खेती के बारे म म या जानती ँ ले कन ब नहार आने लगे ह और कहते हो क फगुआ के बाद खेत ठहरगे नह , तब तो ब नहार को बयाना देकर छक लेना ही ठ क होगा।"

च दन ने प ह ब नहार को बयाना दे दया। फगुआ आ गया, ले कन इस वष कसी ने भी रंग नह खेला। ब लहार ने होली नह मनाई। इस महामारी ने सबके मन का उ साह ही हर लया था। होली बीती, च दन खेत क कटाई म जुटा। ब नहार के दल–के–दल गाँव क सरेह म जुट गए। ख लहान म अनाज के बोझे ट लयाए जाने लगे। अँजो रया रात म ब नहार लगभग रात–भर काटते रहते। च दन के साथ पचीसा और उसका प रवार था। च दन ने पचीसा को एक बार मना भी

कया क साथ म खुद रहे, बाला और उसक महतारी को कटाई म न लाए, ले कन वह माना नह , बोला, "खाने–भर को अनाज मुझे मलने लगा च दन, तो हम बदल नह गए। हम अब भी तु हारे लए वैसे ही ह। तु हारा जो उपकार हम पर है वह इस ज दगी म भूल नह सकता। हम अब भी तो ब नहार ह। तु हारे खेत म काम करगे, मजूरी लगे।" च दन चुप रह गया। दस–प ह दन म कटाई समा त हो गई। ख लहान म बोझे गँज गए। दन को धूप म मज़े क गरमी आ गई थी। थोड़े दन तक बोझ को सूखने दया गया, फर दँवरी के लए च दन ने गे ँ के बोझ को खुलवाया। चैत बीत रहा था। लोग दँवरी कर रहे थे। गे ँ क दँवरी म ही च दन को प ह दन लग गए। ख लहान म गे ँ–भूसे के बड़े–बड़े दो टाल लग गए। फर चना और तब सरस क दँवरी ई। बैसाख क गरमी और ऊपर से पछुआँ, दँवरी म डाँठ खूब टूटने लगे। बैसाख बीतते–बीतते च दन क दँवरी–ओसावन समा त हो गई।

ख लहान म से अनाज घर ढोया जाने लगा। घर म खड़े ए अनाज के कोठले और द वार के सहारे रखे ए बड़े–बड़े मट्ट के कूँड़े जब अनाज से भर गए तो च दन ने गुंजा से पूछा, "साल भर के खच से अ धक के लए तो अनाज घर म आ गया, अब बाक का या क ँ?"

" ख लहान म अभी कतना अनाज है?"

" तौल का अ दाजा तो हम नह है। ले कन जतना गे ँ घर के लए आया है उससे सात–आठ गुना ज़ र होगा। चार ह सा जौ होगा, पचीसा कह रहा था क बीस मन चना होगा। दस मन अरहर और लगभग तीस मन सरस । बाक और अनाज।"

" सबके आँगन म गाड़ गड़ता है, च दन देखके साध लगती है...हमारा आँगन सूना लगता है।"

" कहो तो गाड़ गड़वा ँ"

" हाँ, ख लहान का आधा अनाज गाड़ म डलवा दो, बाक बेच दो।"

" ले कन इतना अनाज होगा या ?"

" यह भी पूछने क चीज़ है। घर म 'परोजन' पड़गे, तु हारा याह होगा, खानेवाले मुँह बढ़गे।"

" तुम भी सपने देखने लग " च दन कुछ हँसकर बोला, "आँगन म गाड़ क तु हारी साध है, तो पूरी हो जाए, बाक तो मन का मोदक फोड़ना है।" च दन बाहर नकल आया।

साइत देखकर दो–चार रोज़ के भीतर आँगन म गाड़ गड़ गया। गुंजा का मन

लस गया। बाक अनाज ख लहान से ही च दन ने बेच दया।

ख लहान से अनाज उठ गया। साल–भर माल–गो के खाने लायक खोप

म भूसा भर गया, तब जाकर च दन ने चैन क साँस ली। पचीसा को उसक मजूरी से दो मन अ धक अनाज च दन ने दे दया था, सो वह जुड़ा गया था।

जेठ क लू और तपन बढ़ने लगी थी। खा–पीकर लोग अपनी–अपनी पलानी म घुसते, तो साँझ को ही नकलते। दन–भर पला नय म ताश जमता। शाद – याह के देखनह घूमने लगे थे। लोग च दन के लए मँडराने लगे। वै जी भी दो–एक लोग के साथ आकर, च दन को दखा गए थे। गुंजा से च दन के याह के बारे म बात भी चलाई थी, ले कन गुंजा ने अभी तक च दन से कुछ नह कहा था।

दन म खाना खाने च दन आया, तो खाना परसकर आगे बैठ पंखा झलती

ई गुंजा ने धीमे–से कहा, "अब आगे या होगा, च दन?"

च दन ने कौर चबाते ए गुंजा क ओर देखा, " या क ँ?"

" आगे क कुछ सोचते हो?"

" आगे क भगवान सोचता है, यह मेरे ज मे नह है, गुंजा जो होना है, वह तो आगे आता ही जा रहा है।"

" ले कन अपना धम?"

" धम–उपदेश क सूझने लगी "

" धम–उपदेश नह , लोक–लाज क बात कहती ँ, च दन "

" लोक तुमसे या कहता है?"

" आज नह कहता, तो कल कहेगा ही। घर क पर परा तो चलानी ही है।"

" इसम कोई रोक–टोक तो आई नह , घर चल ही रहा है।"

" ले कन इस तरह से हम और तुम कब तक रहगे?" गुंजा ने फर धीमे–से कहा।

" मेरे फेर म तुम इतना य पड़ती हो?"

“ तो कसके फेर म पडँ, च दन मेरा अपना कौन है, अब म कसका मुँह देखूँ, कससे सुख- ख क बात क ँ?”

“ तो चाहती या हो, खुल के कहो?”

“ मेरी ही चाह क बात नह है, च दन चाह तो मेरी भगवान ने कभी पूरी ही न क । म तो कहती थी क मेरे नसीब म भगवान ने सुख नह दया, तो मेरे कारन तुम य ख भोगो?”

च दन भोजन कर चुका था। हाथ धोकर बगल म थाली सरकाकर, गमछे से हाथ प छ, द वार से पीठ टेक बोला, “अगर तुमसे मेरा याह आ होता, तो भी तुम मेरी आँख के सामने इसी घर म रहत , सो ह ही। अब और या चाहती हो?”

“ ले कन अब लगता है क इतना ही सब कुछ नह है, च दन इसके बाद के

लए हम–तुम नह रहे। देह क भूख- यास भी तो होती है। मेरे लए

भगवान ने पग–पग पर गड़हे खोद ही दए। अब तुम मुझे नह बचाओगे तो खड़े होने के लए मुझे बराबर धरती कहाँ मलेगी। मुझे तो जैसे रखोगे र ँगी, ले कन हम–तुम दोन से बड़ा यह कुल है, उसक लाज है, वंश क पर परा है। अब तो हम उसके अनुसार चलना होगा। हम तो हमेशा नह रहगे, ले कन जब तक ह, य द उस बीच कह भी हम चूक गए तो फर—तो फर, यह सब कुछ उजड़ जाएगा।”

च दन गुंजा का मुँह ताकने लगा तो गुंजा बोली, “मेरा मुँह न देखो, च दन, आगे क राह नकालो।”

“ च दन के राह नकालने से य द कभी कुछ हो सका होता, तो आज यह सब न आ होता अब तो जो कुछ भी होगा, उसे सर–माथे पर ओढ़ने के लए तैयार बैठा ँ, गुंजा ”

“ ऐसा कह देने से अब मुझे कहाँ शरण मलेगी?”

“ शरण तु ह वही देगा, जसने यह सब कुछ कया है।”

“ मगर सहारा तो तु हारा ही है। शु से अब तक तु हारा ही मुँह देखके मन को ढाढ़स देती रही ँ। ले कन बाबू कभी–कभी कहते थे क जो दवा कभी

ान बचाती है वही कभी घातक भी हो जाती है।”

“ यह ठ क कह रही हो, गुंजा मने कभी कसी को सुख नह दया है, ले कन

या क ँ, भगवान ने मेरा आँगछ ही ऐसा बना दया क जस बरवे पर भी

नज़र पड़ी, वही सूख–मुरझा गया। जनम लया, तो महतारी–बाप चले गए, पोसने–पालनेवाले भइया चले गए, लारने–सँवारनेवाली भउजी भी चली ग । कल तक जसका भरोसा था, आज उसी के लए घातक बन गया। पता नह आगे या- या देखना पड़े ”

बात समा त कर च दन ने गुंजा क ओर देखा तो उसक आँख से गंगा–जमुना बह रही थ ।

“ इसम रोने क या बात है?”

“ हो या न हो, ले कन मेरे भा य म घुट-घुटके ही मरना लखा है, तो उसे तुम कहाँ तक रोकोगे? जस घर को तुमने सँवारा-बनाया है, चाहते हो, तु हारे ही सामने उजड़के उसम आग भी लग जाए तो लगे। घर तु हारा है, तुम घर के मा लक हो, ले कन एक बात सुनो, च दन अपने कोहबर क रात म होश म थी, तब द पास ी क कथा भी रह-रहके याद आया करती थी, और सोना म पानी भरा था। ले कन म सब कुछ सह गई तु हारी आस पर। और आज तक यही सोचती रही ँ क तु हारे ही सहारे जैसे-तैसे दन कट जाएँगे। घाव म इतनी था न होगी, ले कन...”

“ ले कन या ?”

“ ले कन, अब तो तुम मेरी बात भी सुनने को तैयार नह हो ”

“ तुमने कहा या जसे मने नह सुना?”

“ अपनी ही ओर से नह कहती, और क ओर से भी कहती ँ। दो बार बाबू आए, दोन बार उ ह ने मुझसे कहा क म तु हारे याह क बात चलाऊँ।”

“ मेरा याह ” च दन कुछ च ककर बोला। “ हाँ, तु हारा ही।”

“ और तुम अगुवायी करोगी ”

“ यह भी हो सकता है।”

च दन ठठाकर हँस पड़ा, “अभी खलवाड़ से तु हारा पेट नह भरा है गुंजा, मेरे ख से तु ह स तोष नह आ।”

“ अगर यह खलवाड़ है च दन, तो ठ क है, तु हारे जो मन म आए करो। तु हारी राह रोकनेवाली म कौन होती ँ म तो अपने जीने क राह बनाना चाहती थी, ले कन तु ह सरे ढंग से सुख मलता है तो वही करो। मुझे तो अब भी द पास ी क कथा भूली नह है, सोना म बाढ़ भी फर से आएगी...” और गुंजा क आँख एकाएक मुँद ग । वह द वार के सहारे टक गई, दाँत बैठ गए। जब धरती पर गरने लगी, तो च दन क नगाह पड़ी। लपककर गुंजा क गदन और पैर के नीचे हाथ लगा च दन ने उठा लया और बगल क चारपाई पर सुलाकर मुँह पर पानी के छ ट देते ए उसने गुंजा क नाक दबा द । थोड़ी देर म गुंजा ने आँख खोल द । च दन सरहाने बैठ पंखे से हवा कर रहा था। हाथ उठाकर गुंजा ने मना कया, क तु च दन ने गुंजा को करवट लटा दया और पंखा हाँकता रहा। गुंजा का चेहरा एकदम पीला हो गया था, आँख के नीचे याही-सी भर आई थी। लगभग आधा घंटे बाद वह बैठ सक ।

“ तो च दन, मुझे इस घर म नह रखोगे? अपना याह नह करोगे?”

“ मेरे याह करने-न-करने से तु हारे यहाँ रहने म या अ तर पड़ता है?”

“ बना तु हारी ल हन के, तु हारे साथ मुझे अकेला कौन रहने देगा? और

सरा ऐसा कौन-सा ठौर है, जहाँ तु हारे बना म जी सकती ँ ” गुंजा क

आँख फर भर आ , “बोलो न च दन, मेरे लए या कहते हो?”

“ मुझे कुछ नह कहना है, गुंजा मरे क देह पर जैसे दो मन वैसे चार मन। ले कन भइया क बरखी

भी अभी नह ई, और तुमने याह क बात उठा द ”

“ मने नह , बाबू जब आते ह, तो यही पूछते ह। म उ ह या क ँ? अब उ ह जवाब दे ँगी।”

“ ले कन एक बात सुनो गुंजा, तु हारे गाँव म म याह नह क ँ गा।”

“ य ?”

“ हर बात म सवाल न कया करो। अगर मेरा याह होना है तो सरे गाँव म ही होगा।”

“ ठ क है, म भी नह चाहती क चौबेछपरा म तु हारा याह न हो, याह होगा इतना ही म बाबू से क ँगी।”

चार

जैसे सागर क लहर आए, और तीर पर का सभी कुछ बहा ले जाए...खेलनेवाले ब चे, तीर पर छूटे ए शंख और सी पयाँ ही बटोरकर स तोष कर, गुंजा को भी कुछ वैसा ही लगा। नए सरे से उसने ज़ दगी शु क । चले गए का मन म जतना ख था, बचे ए का उतना ही बड़ा आसरा था। गुंजा इसी आधार पर अटक गई। बखरे मन को समेटना शु कर दया।

मन तो समटा, ले कन देह को बटोर न सक । तन क कमज़ोरी धीरे–धीरे बढ़ने लगी। महीने म तीन–चार दन न नहा सकने क जगह, आठ–आठ

दन तक वह नहा न पाती। इन आठ दन म देह से ज़ रत से अ धक र नकल जाता। कमजोरी बढ़ , तो बेहोशी के दौरे भी बढ़ने लगे।

च दन नई मुसीबत म पड़ा, वै जी हर सरे–तीसरे आकर गुंजा को देख जाते, दवा दे जाते। आने–जाने क परेशानी से बचने के लए वै जी ने गुंजा को चौबेछपरा ही चलने को कहा, ले कन गुंजा ने अ वीकार कर दया। दवा से अ छा होना है, तो यहाँ रहकर भी अ छा आ जा सकता है। आषाढ़ लग गया था। पानी एक–दो बार बरस गया तो लोग हल–बैल लेकर खेत जोतने को दौड़े। च दन सु त रहा। “ समु त नह करोगे या?” गुंजा ने च दन से पूछा। “ नह , अभी तो मन नह करता। इस साल बाढ़ आने क पारी है, भदई बोने से कोई लाभ न होगा?”

“ पहले ही ख़राब सोचोगे तो कैसे होगा?”

“ जो मेरा मन कहता है, वही म करता ँ, गुंजा मन के ख़लाफ़ जब कभी

कया है, भोगना पड़ा है।”

गुंजा चुप लगा गई।

आषाढ़ बीतते–बीतते गुंजा ने चारपाई पकड़ ली। च दन का एक पैर खंड म, सरा घर म रहने लगा। कब गुंजा बेहोश हो जाए, अ दाज़ नह लग पाता। जब वह बाहर जाता, तो रामू को घर म बठा जाता। रामू को भी उसने नाक दबाकर मुँह पर पानी के छ टे मारने क तरक ब सखा द थी। घर म खाना बनाना, खंड म बैल क देख–रेख करना, फर गुंजा को सँभालना, समय से दवाई देना, च दन के सर पर यह सब एक ही साथ आ पड़ा। वै जी क दवा से वशेष लाभ न आ, तो च दन ने सरे वै को बुलाया। बुलाया या, वै जी वयं ही ले आए। क तु हालत म ब त सुधार न आ। चारपाई

पर बैठने या उठने के लए च दन को ही सहारा देना पड़ता। घर का सारा उ साह थम गया। कोने-कोने म जैसे सूनापन भरने लगा। च दन के मुँह पर एक नई उदासी छाने लगी—अजीब-सी क णा-भरी उदासी भस बसुक गई थी, सेवा न होने से कुसारी हो रही थी। च दन ने गुंजा को

बना बताए ही भस को बेच दया। केवल गाय लगती थी, जससे घर का

काम कसी तरह चल जाता था। आर पर के काम को ज द से नपटाकर च दन घर आ जाता। कमज़ोर होने से गुंजा चड़ चड़ी हो गई थी। त नक-सी देर म मुँह फुला लेती या रोने लगती। च दन को उसे मनाने और चुप कराने म ही परेशानी होने लगी। क तु च दन गुंजा क सेवा म त नक भी थका नह । नयम से गुंजा को भोर म उठाता, दतुअन-कु ला कराता, दवाई

पलाता, ब तर झाड़ता, ध देता, वै जी के बताए अनुसार भोजन देता।

गुंजा क सेवा म च दन त मय हो गया—जैसे सेवा करने क मन क कोई पुरानी साध पूरी करने लगा। और गुंजा थी, जो बैसाख क नद क भाँ त धीरे-धीरे कम होने लगी। चेहरे क आभा बलाने लगी, भरा आ गोल मुँह दबने लगा, कनपट दोन ओर से दब गई। गाल क ह डुयाँ उभर आ । देह खाट पर जैसे सट गई। ब त दन से बाल म कंघी नह हो पाई थी, इस लए सर म खुजली मच रही थी। पहले चारपाई पर बैठकर ही वह कंघी कर लेती, पर जब देह म उतना भी बल नह रहा तो वह लाचार हो गई।

सर क चुनचुनाहट जब अ धक बढ़ गई, तो उसने च दन से कंघी माँगी।

कंघी तो हाथ म पकड़ ली, क तु बाँह म इतनी श न थी क कंघी से

बाल को ख च सके। हारकर कंघी सरहाने रख द । च दन ने कंघी ले ली और सरहाने पीढ़े पर बैठकर गुंजा के बाल म हाथ लगाया।

“ अब ये भी करोगे?” गुंजा क आँख भर आ । “ जतना इस भा य म लखा है उतना तो करना ही पड़ेगा, गुंजा ”

“ अ छा तो ये होता च दन क कची से इन बाल को काट ही देते।”

“ या?”

“ हाँ, म ठ क कहती ँ। मुझम दम नह है क अब सरे-तीसरे इनम कंघी क ँ, और तुम अकेली देह, या- या करोगे? बाल म लाटा बँध जाएँगे, तब तो और भी तकलीफ़ होगी।”

“ इतने ल बे-ल बे बाल फर कतने दन म उगगे, यह भी सोचती हो ”

“ उग के करगे ही या च दन, अब ये कस काम के रहे अब तो इनको सँवारने म भी लोग को बुरा लगेगा, कापर क ँ म सगार...” च दन कुछ नह बोला। बाल म कंघी करता रहा। चार-पाँच बार म ही टूटे

ए बाल से कंघी भर जाती। च दन जब कंघी साफ़ करने लगा, तो गुंजा

फर बोली, “इ ह टकना नह है च दन, ऐसी बीमारी म ये बाल बचगे नह ।

मेरा मोह न करो, इ ह काट डालो।”

“ तु हारा मोह मने कया ही कब है, गुंजा और अब मोह करने–न–करने से होता ही या है जैसे देह के लए दवा खा रही हो, वैसे ही इनके लए भी तो कुछ होना चा हए, आ खर ये भी तो उसी देह म ह।”

“ तुम तो मानते ही नह हो, म तो कहती ँ क अब दवा–पानी भी ब द कर दो। जससे कुछ लाभ ही न हो, उसे खाना–न–खाना, दोन बराबर ह। जब

ख ही भोगना है तो नया–भर क परेशानी म अपने को डालने से या

लाभ ”

“ बक्–बक् न करो, चुपचाप पड़ी रहो। जब बोलना चा हए था उस समय तो मुँह म ताला पड़ा था, जब चुप रहना चा हए, तो नया–भर का

ान–उपदेश छाँट रही हो ”

कंघी करने म मुट्ठ –भर बाल टूटकर नकल गए। धरती पर गरे ए बाल को फकने के लए च दन उठाने लगा, तो करवट घूमकर गुंजा बोली, “देखा, तुम मेरा कहा तो मानते नह हो ”

च दन कुछ नह बोला। जँगले से बाल को गुमेटकर बाहर फक दया। गुंजा

फर टुकुर–टुकुर ताकती रही।

प ह–बीस दन बाद गुंजा क हालत सुधरने लगी। सावन क बरसात शु हो गई थी। दस–बारह दन जाते–जाते सोना म जल भर गया। चार ओर ह रयाली छा गई थी। लोग ने भदई बो द थी, क तु च दन था क गुंजा क बीमारी से कुछ कर ही न पाया। पचीसा ने अपने मन म थोड़ा–सा खेत बो

दया था। खेत और खंड क देख–रेख पचीसा ही करने लगा था। रात को

वह अपने घर न रहकर च दन के आर पर ही सोता, य क च दन के लए

रात म भी घर म ही रहना ज री हो गया था। गुंजा का बुखार धीरे–धीरे घटने लगा। बेहोशी के दौरे भी देर से आने लगे। इस बार वै जी ने नाक म डालने को ऐसी दवा द थी, जो तुर त बेहोशी को

र कर देती थी। इस लए बेहोशी के बाद होनेवाली कमजोरी से गुंजा बचने

लगी। वै जी के चेहरे पर स ता दखी, तो च दन को अपार खुशी ई। सोना का जल धीरे–धीरे ऊपर चढ़ रहा था। भाद लगते ही गंगाजी ने भी ज़ोर पकड़ा, तो सोना और भी उफन गई। दोन ओर के सरेह म जल भर गया। ब लहार के चार ओर बाढ़ आ गई। खेत क फ़सल एकदम डूब गई, लोग वाहन पर इधर–उधर आने–जाने लगे। इन बीस–प चीस दन म गुंजा क थ त काफ़ सँभल गई थी। क तु

महीने (मा सक धम) के समय फर से ज़ रत से अ धक खून जाने लगा। चौथे–पाँचव दन तो देह म अपार श थलता आ गई। ब तरे क चादर अकसर खराब हो जाती। च दन ने पचीसा को वै जी के पास चौबेछपरा दौड़ाया।

दोपहर को खाकर गुंजा सो गई थी। सोकर उठने के बाद दवा म मलाकर देने के लए च दन पान का रस गार रहा था। सोई-सोई ही गुंजा

हचक– हचककर रोने लगी। च दन रस गारना छोड़कर गुंजा को जगाने

लगा। गुंजा ने आँख खोल , तो च दन को अपने ऊपर झुका देख, उसक दोन बाँह पकड़ जैसे डरकर बोली, "च दन "

" अरे बात या है, रो य रही हो?" और च दन आँचल से गुंजा क आँख प छने लगा। गुंजा तेजी के साथ हाँफ रही थी। च दन ने फर पूछा, "आ ख़र

आ या? डर गई या?"

गुंजा क आँख एकदम सफ़ेद हो गई थ । डरी ई, धँसी आँख के सफ़ेद कोये अजीब–से लग रहे थे। पाँच–सात मनट के बाद गुंजा कुछ ठ क ई, तो उसने च दन क बाँह छोड़ द । च दन खाट क पाट पर बैठ गया, तो

चत लेट ई गुंजा च दन का मुँह नहारने लगी।

" कुछ बोलोगी नह , या सोच रही हो?"

" सोच रही ँ क ब हना के याह म कोहबर क रात जब तुम ऊँघ रहे थे, तो तु हारे मुँह पर पानी डालकर, आँचल से मने तु हारा मुँह प छा था, याद है च दन और आज, तुम मेरे आँसू प छ रहे हो " लू क गरम बयार जैसे देह के असं य र गटे खड़े कर दे, च दन वैसी ही बयार क चपेट म आ गया।

" भूल गए या , च दन "

" नह , याद है गुंजा, और यह भी याद है क उसी रात तुमने एक शत भी बद थी, ले कन शत या थी, आज तक मेरी समझ म नह आया।" गुंजा क आँख क कोर से फर टप्–टप् आँसू गरने लगे। च दन के मुँह पर नगाह गड़ा जैसे कह र देखती ई ज़ोर लगाकर साँस ख चकर बोली, " अ छा ही आ च दन, जो नह समझे, वह तो ऐसी शत थी, जसम हम दोन ही हार गए।"

गुंजा क साँस फर तेज़ चलने लगी। कमर के नीचे ब तरे क चादर खून से तर हो गई थी। चादर बदलने के लए च दन ने गुंजा को करवट लवाया तो मू छा का आ मण हो गया और वह आँख मूँदकर जैसे कसी शू य म खो गई।

च दन उसक नाक म दवा डालकर, बेहोशी र होने क ती ा म, च तत, डरे मन से, उसके सरहाने बैठ गया। गुंजा के चेहरे पर पसीने क बूँद मोती के दान क तरह उभरने लग । च दन अपने गमछे से धीरे–धीरे उ ह प छता जा रहा था। लगभग बीस–प चीस मनट के बाद गुंजा ने फर पहले ही–सी डरी ई आँख खोल द । चार ओर देखकर बोली, "च दन "

" या है?"

" सामने आओ, इस तरफ़।"

च दन गुंजा क खाट क दा हनी पाट पर बैठ गया। गुंजा का चेहरा इस बार पहले से अ धक

भयभीत लग रहा था—बेहद डरा आ। “ म यह ँ गुंजा, तुम इतनी घबराती य हो?”

“ मने अभी एक सपना देखा है च दन, क आसमान म चार ओर काले–काले घटाटोप बादल घरे ह, और एक ब त चौड़ी नद है, जसके कनारे ब त ऊँचे ह। उसी के कनारे– कनारे, आगे–आगे तुम, पीछे–पीछे म चल रही ँ... ” गुंजा क साँस फर तेज़ होने लगी, सीना फूलने– चपकने लगा। ब त ही को शश के साथ वह फर कहने लगी, “और च दन, मेरी गोद म एक छोटा–सा ब चा है। ब चे को गोद म चपकाए, तुमसे सट ई म

ज द –ज द दौड़ रही ँ। और ब लहार के लोग हम लोग को खेदते ए पीछे–पीछे चले आ रहे ह। एकाएक तु हारे पाँव के नीचे का कगार फट जाता है और तुम नद म गरकर डूब जाते हो। च दन, तुम डूब जाते हो।” साँस फर तेज़ हो चली। मुँह पसीने से तर होने लगा। च दन उसके मुँह पर हवा करते ए बोला, “ले कन तुम हाँफती य हो? सपने से इतना य डरती हो?”

“ नह –नह , च दन, मेरे सपने झूठे नह होते। याह के पहले भी जो सपना देखा था, वह एकदम सच आ। अब यह भी सच होगा या? या कभी ऐसा भी हो सकता है, च दन?” हाँफती ई बेहद डरे वर म गुंजा बोली, “तब

या होगा?” फर गले से ह क –सी आवाज नकलते– नकलते गले म अटक

गई। गुंजा क आँख मुँद ग । चेहरा शा त, न ध और शीतल हो गया। च दन ने समझा, बेहोशी का दौरा आया है। नाक म दवा डाल, गुंजा के होश म आने क ती ा म वह चुपचाप बैठा रहा। उसी समय वै जी प ँचे। बेट क ना सका पकड़ी तो च क गए। कनपट के नीचे दबी ई हथेली पकड़कर बाँह सीधी करने लगे, तो च दन गुंजा का सर उठा सहारा देने लगा।

“ छोड़ दो च दन, अब छोड़ दो।”

“ य , या आ?”

“ जो होना था सो हो गया, च दन गुंजा चली गई।” पाँच

बँसवारी म पानी भरा था। बाढ़ के दन म साँप ायः इन बाँस पर ही

लपटे रहते थे, इस लए बाँस काटना ख़तरनाक काम था। साँझ हो चली थी, इस लए यह काम और भी क ठन था, क तु बाँस तो काटना ही था। च दन चुपचाप द वार के सहारे पीठ टेककर जड़वत् बैठा था। सभी लोग उसे समझा रहे थे, वै जी बार–बार उससे उठने को कह रहे थे क देर हो रही है च दन, बाढ़–बूड़े का दन, अ ये – या आज ही हो जानी चा हए। क तु

च दन पर इसका कोई असर नह आ। कफ़न पहनाना था। देर हो रही थी। पचीसा आया और च दन क दोन काँख म पीछे से हाथ लगा, जबरद ती उठाकर आँगन म ले आया। बाँस भी वही काट लाया था। अथ बन गई थी। गुंजा के शव को नान कराकर कफ़न पहना दया गया, तो घर म से वमान पर रखने के लए वै जी ने च दन का क धा पकड़कर उठाया।

“ या है?”

“ उठो, हमारे साथ भीतर आओ।”

च दन चुपचाप उठ गया। घर म गुंजा कफ़न न म लपट ई धरती पर पड़ी थी।

“ यह या ?” च दन ठठक गया।

“ कुछ नह च दन, कुछ नह , धीरज धरो। आओ, उठाने म सहारा दो। मन म ढाढ़स करो, च दन लो, गदन और क ध के नीचे हाथ लगाओ।” गदन क ओर च दन और पैर क ओर से वै जी ने शव को उठाकर आँगन म रखे ए वमान पर लटा दया। लोग अथ उठाने को तैयार खड़े थे। सबसे पहले रामू को क धा लगाना था। वै जी कुछ बोल न पाए। फर च दन ने अथ म हाथ लगाया। एक ओर च दन, सरी ओर वै जी, पीछे क ओर गाँव के दो आदमी और। अथ मचर-मचर करती ई क ध पर उठ गई, ‘ले बाबुल घर आपनो, म चली पया के देश...’ मरघट तो पानी म डूबा था, जलाने क कोई सु वधा न थी, शव को केवल जल म वाह कर देना था। गंगाजी का जल तो चार ओर फैला था, क तु शव को गंगा क मु य धारा म ही डालना था। गंगाजी वहाँ से लगभग दो मील पड़ती थ । गाँव के कनारे चार ड गयाँ आद मय से भरी ई तैयार थ । पाँचव ड गी के बीच क जगह चाँचर से पाटकर अथ रखने के लायक बनाई गई थी। अगली फग पर च दन, वै जी और रामू बैठे। पीछे क ओर तीन-चार लोग।

आगे-पीछे, अगल-बगल, पाँच ड गयाँ बरसात क उस अँधेरी रात म गंगाजी क ओर बढ़ चल । सुनसान, भयानक रात, केवल एक नाव पर जलती लालटेन का काश आगे क राह दखा रहा था। आकाश के घने, काले, भूरे बादल ने वदा क इस बेला को और भी भारी कर दया था। ब लहार छूटा। गंगापुर क घनी बँसवा रय से भी आगे नकल गए। गंगाजी क मु य धारा अभी आधा मील थी। बाढ़ का उफनता आ जल, लोग के मन म और भी भय भर रहा था।

गंगा क बीच धारा म जब ड गयाँ प ँच ग तो पुरो हत ने गुंजा के मुँह पर का कपड़ा हटाते ए कहा, “बेट का मुँह आ ख़री बार देख ली जए, वै जी ” वै जी कुछ पास सरक आए। लालटेन क रोशनी मुँह पर कर द गई। वै जी पीछे हटते ए बोले, “च दन, तुम भी आ जाओ।” च दन ने पास आकर गुंजा के मुँह पर का कपड़ा अ छ तरह हटा दया। लालटेन अपने हाथ म लेकर ब ी उकसाकर रोशनी तेज़ कर द । घुँघराले बाल, उभरे ललाट के नीचे मुँद ई आँख—जैसे गाढ़ न ा म लीन। “ वै जी मुँह तोप ँ?” च दन ने पूछा। वै जी फफककर रो पड़े।

च दन ने मुँह ढँक दया। आगे-पीछे दोन बाँस म म ट्ट के चार घड़े मजबूती से बाँध दए गए। दो ड गयाँ क ठनाई से सटाकर, पानी म अथ उतारी जाने लगी। एक ओर के बाँस च दन पकड़े था, सरी ओर के दो

आदमी।

“ च दन, साध के छोड़ना, एक साथ।” वै जी बोले। पहले घड़ म जल भर दया गया, फर लोग एक- सरे से छोड़ने के लए कहने लगे। क तु च दन था, जो बाँस को पकड़े रहा। “ च दन, छोड़ो छोड़ो च दन ख़तरा करोगे या? बढ़ गंगा क धारा है, नाव उलट जाएगी।”

वै जी ने च दन का हाथ झकझोरकर छुड़ा दया। गहरे, अतल जल म गुंजा समा गई। ह क -सी एक भँवर आई, ले कन साधकर, हसाब से नाव ब लहार को मोड़ द ग । गाँव क ओर पीठ करके बैठा आ च दन भँवर से भरी ई उस मटमैली धारा को थोड़ी देर चुपचाप देखता रहा। फर अपने मुड़े ए दोन घुटन के बीच सर टेक, उसने आँख मूँद ल ।

समा त

केशव साद म

ज म : 26 जुलाई, 1926। ज म थान : ाम ब लहार, जला ब लया (उ) म। श ा : एम ए अथशा , याग व व ालय, इलाहाबाद। कायालय ए जी यू पी इलाहाबाद म ऑडीटर पद से 1986 म सेवा–नवृ ।

का शत पु तक

कहानी–सं ह : समु त, कोयला भई न राख उप यास : कोहबर क शत (इसी उप यास पर 'न दया के पार' व 'हम आपके ह कौन' नामक फ म का फ मीकरण राज ी ोड शंस ारा आ है), देहरी के आर–पार, काली द वार, म आ और साँप, गंगा जल, या रोशनी

मौत है, उस रात के बाद (शी का य), कसूर मेरा है (शी का य), सरा स य (शी का य)।

कहा नयाँ : लगभग 350कहा नयाँ का शत।

नधन : 22 अ टूबर, 1989

पहला पु तकालय सं करण

राजकमल काशन ाइवेट ल मटेड ारा 1965 म का शत

राजकमल पेपरबै स म

पहला सं करण : 1986

चौथा सं करण : 2015

राजकमल पेपरबै स : उ कृ सा ह य के जनसुलभ सं करण राजकमल काशन ा ल

1–बी, नेताजी सुभाष माग, द रयागंज नई द ली–110 002

ारा का शत

शाखाएँ : अशोक राजपथ, साइंस कॉलेज के सामने, पटना–800 006 पहली मं जल, दरबारी ब डंग, महा मा गांधी माग, इलाहाबाद–211 001 36 ए, शे स पयर सरणी, कोलकाता–700 017 वेबसाइट : www rajkamalprakashan com ई–मेल : info@rajkamalprakashan com KOHBAR KI SHART

Novel by Keshav Prasad Mishra ISBN : 978-81-267-1422-3